

तसवीरनी समजण.



मध्यभागमां हाथमां कमान तथा पगमां अने गळामां सांकळो छे ते पृथिराज चहुआण छे तेने शाहबुद्दीन गोरीए आंधळो करी नाख्यो छे.

पृथिराजनी सामे बरछी हाथमां लई ऊभेल छे ते चंद भाट छे.

पृथिराजनी पीठ तरफ सात तवा लोढाना लटकावेल छे जेमां पृथिराज शब्दवेधी बाण मारे ते साते तवा वींधी आरपार नीकळी जाय एवी सरत हती.

पृथिराजनी सामे उंची बेठकमां शाहबुद्दीन गोरी छे तेने कपाळमां बाण वागतां तख्त ऊपरथी ढळी पडेल छे.

सौथी नीचेना भागमां बे जण एक बीजानां गळांमां तरवार फेरवेछे ते पृथिराज अने चंद भाट छे.



पृथिराज चहुआण.

(दिल्लीनो छेल्लो रजपूत राजा).

रचनार

आत्माराम केशवजी द्विवेदी.



मुंबई:

"निर्णयसागर" छापाखानामां छाप्यो.

सं० १९३५.

इ० स० १८७८.

आजम मेहेरबान राजमान राज्यश्री राओ बहादुर
मणीभाई जसभाई, दीवानजी साहेब
मुल्के कच्छ.

दोहो.

रहियत सब राजी रहे मंत्रिन राउत मान ।
आमद घटे न राउकी सो परधान प्रमान ॥

जसूराम.

श्रीकच्छ देशाधिपति श्रीमन्महाराओ श्रीजी खेंगारजी बहादुरना मुख्य प्रधानना हुद्दा उपर बिराजी आवा आवा उत्तम गुणोथी आपे राज्यने तेमज रैयतने अगणित फायदाओ कर्या छे ते साथे देशनी चढती कळा थवानां साधनोनें अने विद्यावृद्धिनें आश्रय आपवामां पण बहुज औदार्यता बतावी छे, इ० इ० आपनां स्तुतिपात्र कामोथी आपें कच्छनी प्रजा उपर जे बहुज उपकार कर्या छे तेनी नीशानी दाखल आ पुस्तक हुं आपनी सेवामां मोटी नम्रतापूर्वक अर्पण करुं छुं.

आज्ञांकित सेवक,

भुजनगर
ता० १ आगष्ट १८७८. } आत्माराम केशवजी द्विवेदी.
ग्रंथकर्ता.

प्रस्तावना.



पृथिराज रासानां काव्यनी लोकप्रियता अने तेना रचनार चंद भाटनी विद्वत्तानी प्रसंशा मारा हाथथी लखवा करतां प्रख्यात टाड साहेबना बोलोमां वांचनारनी सेवामां रजु करवी वधारे वजनदार समजी, ए बोलो हुं अहीं टांकुंछुं.

टाड साहेब पोतानां राज्यस्थानमां लखेछे के:-

" The work of Chund is a universal history of the period in " which he wrote. In the sixty-nine books, comprizing one " hundred thousand stanzas, relating to the exploits of Pirthi " Raj, every noble family of Rajast'han will find some record of " their ancestors. It is accordingly treasured amongst the ar- " chives of each race having any pretension to the name of Raj- " poot. From this he can trace his martial forefathers who " 'drank of the wave of battle' in the passes of Kirman, when " 'the cloud of war rolled from Himachil' to the plains of " Hindust'han. The wars of Pirthi Raj, his alliances, his numer- " ous and powerful tributaries, their abodes and pedigrees, " make the works of Chund invaluable as historic and geographi- " cal memoranda, besides being treasures in mythology, man- " ners, and the annals of the mind. To read this poet well is a " sure road to honour, and my own Gooru was allowed, even by " the professional bards, to excel therein. As he read I rapidly " translated about thirty thousand stanzas. Familiar with the " dialects in which it is written, I have fancied that I seized

"occasionally the poet's spirit; but it were presumption to
"suppose that I embodied all his brilliancy, or fully compre-
"hended the depth of his allusions. But I knew for whom he
"wrote. The most familiar of his images and sentiments I
"heard daily from the mouths of those around me, the descen-
"dants of the men whose deeds he rehearses. I was enabled
"thus to seize his meaning, where one more skilled in poetic
"lore might have failed, and to make my prosaic version of
"some value."

भावार्थः—"चंदनुं रचेलुं पुस्तक ए तेना वखतनां सर्व राज्यो-
"ना इतिहासरूप छे. एना ओगणोतेर अध्यायमां बधां मळीने
"पृथिराजनां पराक्रम विषेनां एक लाख कवित छे, तेमांथी राज-
"स्थाननां दरेक मोटां कुळने पोताना पूर्वजो विशेनो कांइने
"कांइ पण हेवाल मळी आवेछे. तेटला माटे रजपूत नामनो दावो
"करनारी जेटली जातिओ छे ते बधीना पुस्तकसंग्रहोमां ए
"पुस्तक अवश्ये करीने राखवामां आवेछे. 'हिमाचळथी ते हिंदु-
"स्ताननां मेदानोसुधी' युद्धनुं वादळ झोका खातुं हतुं, ते वखते
"किर्माणनी खीणोमां 'युद्धना तरंगोनुं पाणी पीनारा' एवा जे ते-
"मना लडायक पूर्वजो तेओ विषेनो शोध तेओने आ पुस्तकमांथी
"मळी शकेछे. पृथिराजनां युद्धो, तेनी दोस्तीओ, तेना ताबाना
"संख्याबंध अने बळवान राजाओ, तथा तेओनां स्थानक, अने
"वंशचरित्र आ बधांनुं वर्णन ए पुस्तकमां छे तेथी करीने ए पुस्त-
"क इतिहास तथा भूगोळसंबंधी नोंध दाखल अमूल्य छे अने
"वळी दंतकथाओ, रीतभातो तथा मनुष्यमनना इतिहासना कोष
"जेवुं छे. आ कविनी कविता सरस रीते वांचवी ए मान मळ-
"वानो चोकस मार्ग छे अने ए बाबतमां मारो पोतानो "गुरु"
"एटलो कुशल हतो के भाटनो धंधो करनाराओथी पण एने प्र-

" वीण गणवानी ना केहेवाती नहीं. ते वांचतो गयो तेम तेम में
" झडपथी आसरे ३०००० कवितनुं भाषांतर करी लीधुं. जे
" भाषामां ए पुस्तक लखेलुं छे तेमां मने सारी माहिती होवाथी में
" एवुं पण मानी लीधुं छे के केटलेक ठेकाणे ते कविनी छटा मारा
" भाषांतरमां पण आवी छे परंतु जो एम कहुं के एनी रसिकता
" सघळी हुं लावी शक्यो छुं अथवा एना इसाराओनुं गांभीर्य बधुं
" हुं समजी शक्यो छुं तो ते मात्र मिथ्याभिमान गणाय. परंतु
" तेणे कोने वास्ते लख्युं हतुं ते हुं जाणतो हतो. तेणे जेओना
" पराक्रमनुं वर्णन कर्युं छे, तेओना वंशजो मारी आसपासनां
" मनुष्यो हता तेओने मोढेथी हंमेशां ते कविनी जे घणी साधारण
" धारणाओ अने स्फूर्तिओ ते मारा सांभळवामां आवती. एने लीधे
" जे ठेकाणे कवितानी विद्यामां माराथी वधारे कौशल्य धरावनारा-
" ओने पण ते कविना मननो भावार्थ समजातो नहिं ते समजवा हुं
" शक्तिमान् थयो अने मारुं गद्यरूप भाषांतर कांइक पण रसयुक्त
" करी शक्यो."

मारां आ पुस्तकनो में बधो आधार चंदना काव्य उपरथी लीधो छे, एमां केटलेक ठेकाणे देवी देवता अने पीर पेगंबरोनी एवी एवी वातो आवी छे के विद्वान वांचनार तेने एक वखत गप हांकी छे एम कही देशे. पण काव्यना रचनाराओ अने धर्मसंबंधी लख-नाराओए एवी वातो ऐतिहासिक बनावसाथे एवी रीते जोडी दी-धेली होय छे के तेने छूटी करवी मुश्केल पडेछे माटे ते मानवी के न मानवी ए वात वांचनारनी बुद्धि तथा ज्ञान उपर रहेछे. रामा-यणना अद्भुत काव्यमां आपणे जोशुं तो सूर्यवंशी इक्ष्वाकुना कुळ-मां अयोध्याना राजा दशरथने रामचंद्र, लक्ष्मण, भरत अने शत्रुघ्न नामे चार पुत्रो हता. तेमां युवराज रामचंद्रजी हता पण तेनी ओर-माई मा कैकयी (काबुलना राजानी दीकरी)ए एक प्रसंगे दशरथ

पासेथी वरदान मागी लीधुं हतुं ते मुजब पोताना पुत्र भरतने गादी आपवा प्रपंच चलाव्यो जेमां रामचंद्रने वनवास जवुं पड्युं. वनवासमां तेमनी स्त्री सीताने लंकानो रावण नामे राजा हरी गयो जेमाटे रामचंद्रजीए तेने सुग्रीवनी मददथी मार्यो अने सीताने पाछी लई आवी लंकानी गादी रावणना भाई विभीषणने आपी, इ० वातो निःसंशय ऐतिहासिक छे. पण रावण अने कुंभकर्णनां अद्भुत शरीरोनां वर्णन, तेओना पूर्वजन्मनी कथा अने तेओने मारवाने परमेश्वरे रामचंद्रनुं खोळीउं धारण करी अवतार लीधो इ० रामचंद्रजीना पारमेश्वरी वखाण कीधां छे. ए वात विश्वासनी छे. मने विश्वास हशे तो हुं ए वात कबूल राखीश पण आखुं जगत कबुल नहीं करे. तेमज वि. स. ५७ मां जीझस् क्राइस्टनो यहुद देशमां जन्म थयो तेणे लोकोने उपदेश करी एक पंथ चलाव्यो अने अंते सूळीउपर चड्यो आटली वात ऐतिहासिक छे बाकी ते कुंवारीने पेटे जन्म्यो, पोताना शिष्योने केटलाक चमत्कार बताव्या अने हवे तेनामां जे इमान राखशे तेने तारण मळशे ए वात क्रिश्चयनोना निश्चयनी छे. एज रीते पेगंबर महमदनो जन्म इ. स. ५६९ ने लगभग मक्कामां थयो तेणे पोतानो मत फेलाववा लडाईओ करी तथा अंते मदीनामां देह छोडी, ए इतिहासनी वात छे. पण महमदनुं सातमां आस्मानमां जई खुदापासेथी फरमान लाववुं अने मुसलमानोने स्वर्ग देवुं ए मुसलमानोना निश्चयनी वात छे. एवीज रीते आ पुस्तकमां पृथिराजनो अजमेरमां जन्म, तेने तेना नाना अनंगपाळे दिल्लीनी गादीऊपर दत्तक लीधो, तथा तेणे भोळा भीम इ० साथे मोटां युद्धो कीधां, कनोजना राठोड राजा जयचंदे चक्रवर्ती राजानुं पद धारण करवा राजसूय यज्ञ मांड्यो तेमां पृथिराज अने समरसिंह शिवाय आखा भरतखंडना राजाओ हाजर थया, पृथिराजे ते यज्ञनो भंग कीधो अने तेनी कन्यानुं हरण कीधुं, तथा शाहाबुद्दीन महमद गोरीने केटली-

क वखत हरावी अंते तेने हाथे पकडाई गयो, आटली वात तो निः-संशय सातसो वर्षउपर बनेली छे. पछी चमत्कारिक वातो मानवी के न मानवी ए वांचनारनी कल्पनाशक्ति अने बुद्धिथी समजाशे. तो पण एटलुं तो मारे कहेवुं पडे छे के ए वातोने कांइक तो खरा बनावसाथे संबंध छे कारण के जे जे पीरो इ० नी वातो एमां आवी छे तेओनी मोटी मोटी दरघाओ अजमेरमां हाजर छे. तथा दरेक मुसलमान तेओउपर बहु विश्वास राखेछे. अकबर बादशाह आग्रेथी उघाडे पगे ख्वाजापीरनी यात्राए अजमेर गयो हतो.

पृथिराज रासानुं माहात्म्य आपणा देश करतां मारवाड अने उत्तरखंड तरफ वधारे छे. थोडा वखत उपर श्री कच्छदरबारना हुकमथी मारे जेसलमेर जवानुं थयुं हतुं त्यां आ पुस्तक लखवानो मने शोख थयो माटे त्यांना देशाधिपति खुदावंद महारावळ श्रीजी वैरीसालजी बहादुर जेओ भाषाना ग्रंथोनु घणुं सारुं ज्ञान धरावेछे तेओने अरज करी तेओना दरबारमांथी थोडाएक अध्यायनी एक प्रत कहडावी. थोडाएकनी बीजी एक त्यांनां राज्यना कविराजजी शिवजी दानजी पासेथी मेळवी, अने एक त्रीजी बारहट बीरबलजी पासेथी लीधी. ए त्रणे मळीने जोके रासानुं आखुं पुस्तक तो न थयुं तोपण थोडोकज भाग बाकी रह्यो ते पण कविराजजी अने बीरबलजीने मोढेथी लखी लई आ पुस्तक पूरुं कीधुं छे. में जोके भाषाना ग्रंथो उकेलवामां मारा गुरु शुक्ल गिरजाशंकरजी पासे थोडीक माथादुखण कीधी छे तोपण चंदनी गहन काव्य समजवामां कविराजजी अने बीरबलजीनी घणी मदद लेवी पडी छे. जुना विचारना लोको पुस्तक आपवामां अने विद्या शीखववामां अंदेशो राखेछे तेवी आ बेउ गुणीजनोए मारेसाथे कंई पण वर्तणुक चलावी नथी माटे आ जगोए एओनो उपकार मानवानुं हुं भुलतो नथी.

जे काव्य चंदनां नामथी ओळखायछे ते बधुं तेनुंज लखेलुं होय

तेमां मने शक छे. ए काव्यनी असलथीज बहु प्रशंसा थती आवी छे माटे काळांतरे कोई कोई कविओए प्रसंगोपात पोतानी कविताओ पण दाखल करी दीधी छे. छेलां प्रकरणमां सदाशिवना गण वीरभद्रना मोमांथी नीकळेलुं भविष्य लख्युं छे ते चंदनुंज लखेलुं होय तो तो बेशक पुराणादीमांहेनी वेहेमी वातो पण मानवी. पण ते चंदनुं होवाविषे मने शक छे माटे अंही लखुंछुं के तेमां कहेली आज दिवस सुधीनी वातो तो मळती आवी छे पण हवे पछीनी मळेछे के नही तेविशे हवे पछी थनारी प्रजा साचखोटनुं पारखुं करी शके माटे ते छापी छे.

आ पुस्तक में संस्कृत टाइपमां छपाव्युं छे तेनी मतलब ए छे के ए टाइप गुजरात, दक्षिण, मारवाड, उत्तरखंड, बंगाळा इ० आखा हिंदुस्थाननां लोको वांची शकेछे. दक्षिणीओए ए टाइप पसंद कीधां छे ए वखाणवा लायक छे. यूरोपमां पण जोशो तो छापानां टाइप घणुं करी बधा देशोनां सरखां छे तो एशीयामां आपणा एक देशनां पण सरखां नहीं ए गुंचवाडानी वात छे. भाषा जुदी जुदी होय तेथी समजवामां फेर पडे पण ग्रंथ वांचतां केटलीक मतलब तो समजी शकाय. बधां पुस्तको एज टाइपमां छपातां होय अने बनी शके तो आखां हिंदुस्थाननी भाषा हिंदुस्थानी थई जाय तो केटलेक दरज्जे देशमांथी गुंचवाडो नीकळी जाय. दाखला तरीके जुओ बाबु शिवप्रसाद शितारे हिंदनां पुस्तको के जेनुं लखाण हिंदुस्थानना दरेक भागमां वंचाई अने समजाई शकाय छे. कोइक केहेशे के गुजरातीनुं थोडुं ज्ञान धरावनाराओ एवां पुस्तको वांची तथा समजी शकशे नहीं तो तेविशे हुं कहुंछुं के एटलुं थोडुं ज्ञान धरावनाराओ पुस्तको वांचवाने लायक पण नथी.

पृथिराज चहुआण.



प्रकरण १ लुं.

आ भरतखंड उपर थई गयेला राजाओनुं शृंखळायुक्त अने संपूर्ण वृत्तांत हजी कोई विद्वाने शोधी कहाड्युं नथी तोपण हाल सुधी जे जाहेरमां आव्युं छे ते प्रमाणे सूर्य अने चंद्रवंशी राजाओना ताबामां आ देश केटलीक मुद्दत सुधी रहेलो हतो. सूर्यवंशमां पेहेलो राजा मनुनो दीकरो इक्ष्वाकु थयो जेनी राजधानी अयोध्या हती तेना कुळमां मोटा मोटा नामी राजाओ थया. सहुनुं भूषण तेनी सत्तावनमी पेढीए राजा रामचंद्र थया. रामचंद्रथी छप्पन राजाओ गादी उपर बेठा. छेल्लो राजा सुमित्र विक्रमादित्यनी अगाउ थोडा दिवस पेहेलां मरण पाम्यो. जयपुर जोधपुर अने उदेपुरना राजाओ पोताने आ वंशमांथी थयेला बतावेछे. जयपूरवाळा कछवाहा पेहेलां नरवर गढ उपर हता, उदेपूरवाला गेहेलोत वल्लभीपुर (हाल भावनगरपासे वळा गाम छे) तेमां हता. अने जोधपुरवाला राठोड मुसलमानोनी चडाई वखत कनोज उपर राज्य करता हता. इक्ष्वाकुना बनेवी बुद्धना वंशवाळा चंद्रवंशी कहेवाया. बुद्धना पुत्र पुरुरवना दीकरा ययातीना त्रण दीकरा हता, ऊरु, पुरु, अने यदु. पुरुनी सत्यावीशमी पेढीमां हस्ती राजा थयो तेणे हाल दिल्ली छे तेनी पाडोशमां हस्तिनापुर वसाव्युं. हस्तीनी त्रेवीसमी पेढीए युधिष्ठिरे महाभारत जीती, एज पडोशमां इंद्रप्रस्थ वसावी राजधानी स्थापी. यदुना कुळमां एकावन पेढी पछी कृष्ण अने बळराम प्रतापी थया. कृष्णे द्वारका वसावी. जेसलमेरना भट्टी, कच्छना जाडेजा अने चुडासमाओ पोताने कृष्णना वंशमांथी थए-

ळा मानेछे. युधिष्ठिरना भाई अर्जुनथी त्रीस पेढीसुधी एनाज कुळमां इंद्रप्रस्थनी गादी चाली आवी. छेल्लो राजा क्षेमराज सुस्त अने गाफल थयो तेथी तेनो प्रधान विसर्व तेने मारी गादीउपर बेठो. विक्रमादित्यना वखतमां विसर्वथी करी आडत्रीस राजा त्रण घरानाना बेठा हता. छेल्ला राजा राजपाळने मारी ज्यारे कमाऊना राजा सुखवंते इंद्रप्रस्थ पोताना कबजामां करवा धार्युं त्यारे महाराज विक्रमे चडाई करी ए राज्य पोताना कबजामां लीधुं. पछी काळांतरना फेरफारथी इंद्रप्रस्थ तुंवर राजाओनी राजधानी थई. ए तुंवरोमां ओगणीसमी पेढीए अनंगपाळ इंद्रप्रस्थनो छेल्लो राजा थयो. जे वखतविषे मारे लखवुं छे ते आ वखत हतो के ज्यारे विक्रम संवतनो तेरमो सैको चालतो हतो तथा इंद्रप्रस्थनी गादीउपर अनंगपाळ हतो.

इंद्रप्रस्थ नाम बदली दिल्ली पड्युं तेविशे कवि चंद लखेछे के अनंगपाळे गढ बांध्यो त्यारे तेने एक ब्राह्मणे मुहूर्त जोई आप्युं हतुं ते मुजब खीली खोडी त्यारे कोइए ब्राह्मणने पुछ्युं के ए खीली क्यां खूती, तो कहे के शेषनागनी फणउपर खूती छे, अने तुंवरोनां हाथमां इंद्रप्रस्थनुं राज्य "**यावच्चंद्रदिवाकरौ**" रहेशे. एटले तेणे ब्राह्मणनी मस्करी करी के महाराज, शेषनागनी फण क्यां रेढी पडी छे के तेनाउपर तमे खीली खोडशो. ब्राह्मण कहे, खरां खोटानुं पारखुं जोवुं होय तो खीली उखेडी जुओ; जो ते लोहीथी भरेली नीकळे तो मारी वात साची अने जो कोरी नीकळे तो जुठी करी मानजो. अनंगपाळे पारखुं जोवा खीली उखेडी तो खरेखर लोहीथी भरेली हती. एटले फरी पाछी ठोकी दीधी पण ब्राह्मण कहे, मारां वचन उपर विश्वास न राखी खीली उखेडी ए घणुंज खोटुं कीधुं. अनंगपाळे खीली ढीली कीधी ते उपरथी ए गढनुं नाम ढिल्ली पड्युं. चंद लखेछे केः—

छप्पय.

अनंगपाळ गढ रचिय, मत्त जोसीसो उकल्लिय;
हुवो तुंवर मतहीन, करीं किल्ली तें ढिल्लीय;
कहे व्यास जुगजोत, अगम आगम हुं जाणुं;
तौंवर तें चहुवान, होय पुनि पुनि तुरकाणुं;
तुरक अवटी मंडवधरह, टूकराय मही भोगवे;
नव सत्त अंत अंते वरह, एक छत्र मही चक्कवे ॥१॥

भावार्थः—अनंगपाळे जोशीनी मत लई गढ रच्यो पण तुंवरे मतीहीण थई खीली ढीली कीधी माटे जगज्ज्योति व्यासे कह्युं के हुं अगम आगम सहु जाणुंछुं. दिल्लीनी गादीउपर तुंवर ते पछी चहुआण अने ते पछी तुरक थशे. तुरकसामे मंडोवरवाळा थशे. पण सोळसो वर्षपछी एक राजा चकवे राज्य करशे.

ए रीते ढिल्ली उपर अनंगपाळ तुंवर हतो तेज वखते अजमेरमां सोमेश्वर, मंडोर उपर नाहरराय, चित्तोड उपर समरसिंह, लुद्रवा (जेसलमेरनी जुनी गादी) उपर भोजदेव, कनोज उपर जयचंदनो पिता विजयपाळ, आबु उपर जेत परमार, अने अणहिलपुर पाटण उपर भोळोभीम चालुक्य ए रीते हिंदु राजाओ हता.

अनंगपाळने पेटे पुत्र न हतो, मात्र बे पुत्रीओ हती तेमांनी एक कमळादेवी अजमेरना राजा सोमेश्वरने आपी हती जेने पेटे पृथिराजनो जन्म थयो. बीजी कनोजना राठोड जयचंदने दीधी हती. अनंगपाळनी कोई विजयपाळने दीधी हती जेने पेटे जयचंद जन्म्यो हतो. वृद्धावस्था थतां अनंगपाळनुं दिल आ जगतमांथी उठी गयुं माटे तेणे वानप्रस्थाश्रम धारण करी बद्रिकाश्रममां जई तपश्चर्या करवा धार्युं तथा पोताना दोहित्र पृथिराजने दत्तक लेवा ते उपर नीचे मुजब पत्र लख्यो.

साटक.

स्वस्ति श्री अजमेर द्रोण दुरगं राजाधिपो राजनं
पुत्री पुत्र पवित्र पंथय धनो छत्रीस वंसावनं ।
मा वृद्धाय सुवृद्ध तप्त सरणं बद्री निमत्त तनं
आ भूमीय हयं गयं च सकलं संकल्पिता तर्पयं ॥

भावार्थः— स्वस्ति श्री अजमेर अथवा द्रोणदुर्गविषे विराजमान छत्रीस राजकुळमां पवित्र दोहित्र तरफः—मारी वृद्धावस्था थवाथी मारे बाद्रिकाश्रममां तपस्या करवा जवुं छे माटे आ पृथ्वी, घोडा, हाथी इत्यादि सर्व तमारा नामनो संकल्प करी आपी दउंछुं.

अजमेरना चोहाणोमां वीसलदेव बहु प्रख्यात थयो हतो. मुसलमानोए थोडी थोडी जमीन लई लीधी हती ते तेओ पासेथी छीनवी लेवा वीसलदेवनां उपरीपणां तळे बधा रजपूत राजाओ भळया हता पण तेमां गुजरातनो भीमदेव भळ्यो नहीं माटे तेने शासन करवा वीसलदेव ते उपर चडी आव्यो अने फतेह मेळवी. भीमदेवना प्रधाने तेने धन आपी तथा युद्ध थयुं ते ठेकाणे वीसलनगर नामे गाम वसाववा देवानुं कबुल करी तेने पाछो वाळ्यो हतो.

पृथिराजनो जन्म सं० १२१५ मां थयो तेविशेनी एक दंतकथामां कहेछे के वीसलदेव एक नागकन्या परणी लाव्यो हतो तेना उपर तेनो बहु प्यार होवाथी बीजी राणीओए तेने झेर देवानो प्रयत्न कर्यो पण आ वात खुल्ली पडी जवाथी कंई थयुं नही. तोपण नागकन्या पासे एक मणी हतुं तेना प्रतापे शेहेरनां मोटां तळावमां गुप्त मेहेल हतो तेमां वीसलदेव अने नागकन्या जई रह्यां. मणीना

1 कौरवपांडवनी वखतमां अजमेर द्रोणाचार्यना कबजामां हतुं माटे तेने द्रोणदुर्ग पण केहेता हता.

प्रतापथी वीसलदेव रोज पाणीथी बहार आवी दिवसे दरबारनुं काम करी सांजे गुप्त मेहेलमां पेशी जाय. बीजी राणीओने खबर थई के राजा गुप्त मेहेलमां पेशी शकेछे तेनुं कारण मणी छे माटे तेओए लाग जोई तेनी पाघडीमांथी मणी कहाडी लई बाळी भस्म करी नाख्युं. ए दहाडे वीसलदेव पाणीमां पेसवा गयो त्यारे तेने मार्ग मळ्यो नही माटे तेणे पाघडी तपासी तो मणी दीठुं नहीं. घणी तपास करी पण कंई वळ्युं नहीं अने ते नागकन्यावगर दीवानो बनी गयो. एक रोज तेणे ए नागकन्या जेवीज स्वरूपा एक ऋषिकन्या जोई तेने जई वळग्यो माटे ऋषिकन्याए तेने शाप आप्यो जेथी ते राक्षस बनी जई मनुष्य भक्षण करवा लाग्यो. आ बनावथी अजमेर उजड थई गयुं. चार पेढी पछी वीसलदेवना वंशमां सोमेश्वर हतो ते[1] बाळक हतो त्यारे रमते रमते बीजां छोकरांओने मारतो त्यारे तेओनी मा केहेती के "पीव्या राक्षसना ते राक्षसज थाय" आ वात सोमेश्वरे पोतानी माने पूछी तेणे तेने खुलासो समजाव्यो हतो.

एक ब्राह्मणने पैसानी लोभी कुलटा स्त्री मळी हती तेथी काइ जइ ते बीजी रीते आपघात करवो पापनुं काम गणी राक्षस पासे गयो. राक्षसे तेने पुछयुं के माराथी तो लोको नाशी जायछे अने तुं खुशीथी केम आव्यो? ब्राह्मणे पोतानी वीतेली हकीकत कही जे उपरथी राक्षसे केटलुंक द्रव्य आपी कह्युं के आथी तारी स्त्रीने संतोष पमाडजे अने तेना बदलामां मारी एटली नोकरी करजे के मारा वंशमां सोमेश्वर छे तेने जई कहेजे के मारो उद्धार तारे हाथे छे माटे मने मारी मारुं मांस भक्ष करजे, मारां आ प्रत्यक्ष शरीरनुं

---

१ वीसलदेवनो पुत्र सारंगदेव, तेनो आनो (जेणे आनासागर तळाव बांध्युं छे ते), तेनो जेसंग, तेनो आनंददेव अने तेनो सोमेश्वर.

मास तेनाथी भक्ष थशे नही माटे हुं खोळीयुं पलटी सूवर बनीश माटे ते सूवरने मारी तेनुं मांस भक्ष करशे तो मारो उद्धार थशे अने मांस खानाराओने प्रतापी पुत्रोनी प्राप्ति थशे. ब्राह्मणे ए समाचार सोमेश्वरने केहेवाथी तेणे तेम कीधुं अने तेने पेटे प्रतापी पृथिराज जन्म्यो. तेना जे संगाथीओए ए मांस खाधुं ते बधाओने पुत्रो थया जे पृथिराजना सोळ सामंत अने सूरमाओ थया. ते शिकारनी जीभ चोहाणना कुळ भाटना खाधामां आवी जेने पेटे जगदंबानो वरदाई चंद भाट जन्म्यो.

पृथिराजने अनंगपाळे दत्तक लीधो ते माटे कनोजना जयचंद राठोडे दावो कीधो; कारण के जे सगपण पृथिराजने अनंगपाळ साथे हतुं तेज सगपण तेने पण तेसाथे हतुं. माटे पृथिराजने दिल्ली स्वतंत्र मळवाथी चोहाण अने राठोड वचे कळहनुं बीज रोपाव्युं. ए बीज तेओ वचें कळहनुं न हतुं पण भरतखंडमांथी रजपूत राज्यनी आखरनुं हतुं तेने दिनपरादिन पाणी मळतुंज गयुं अने जे परिणाम थयुं ते आगळ जाणवामां आवशे.

नागोर पासे खटुपुर नामे गाम पासे जूना वखतनो एक गुप्त खजानो हतो ते उपर एक पीतळनी पूतळी हती तेना कपाळमां लख्युं हतुं के " **शिर कटे धन संग्रहे शिर सज्जे धन जाय** " (माथुं वाढे ते माल काढे). पृथिराजे तेविशे पोताना मंत्री कयमाषनी सल्लाह मागी. कयमाष कहे के पूतळीनुं माथुं कापो एटले तमने माल मळशे. पृथिराजे तेम कीधुं अने तेमांथी सींतेर लाख सोना मोहोर मळी आवी. आ खजानो मळवाथी चोहाण मजबुत थई जशे एवी अदेखाईथी कनोज अने पट्टणना राजाओए ते सामे दावो उठावी गिझनीना शाहाबुद्दीनने पोतानी मददे बोलावी काळने घर देखाडवानो जोखम माथे उठाव्यो. पृथिराजे पोतानी मददमां पोताना बनेवी समरसिंह रावळने बोलाव्यो. समरसिंहनां भाषण अने पे-

हेरवेशथी जणायछे के तेणे महादेवना अधिकारीनां चिह्न धारण करर्चां हतां. तेना कंठमां एक सादी रुद्राक्षनी माळा तथा माथे जटा हती अने तेने जोगींद्र कही बोलाववामां आवतो हतो. समरसिंहने पाटणना राजासाथे संबंध हतो माटे ते तेने सामे न थतां शाहाबुद्दीनने सामे थयो अने पृथिराजे पट्टणना राजा सामी टक्कर लीधी, जेमां तेने हरावी पाछो समरसिंहनी मददमां गयो अने शाहाबुद्दीनने केद पकडी आठ हजार घोडा दंड लई तेने छोडी दीधो. जे खजानानो शोध लाग्यो तेमांथी समरसिंहे कंइपण भाग लेवा ना पाडी, पण पृथिराजे बक्षीसो आपी ते लेवा पोताना सरदारोने छूट आपी. अने ए दिवसथी ते बे राजाओ वच्चे दोस्तीनी गांठ मजबूत बंधाई.

प्रकरण २ जुं.

पीरोनी अजमेर उपर चढाई.

पृथिराजे पोताना सर्वे सामंता साथे मंत्र करी ठराव कीधो हतो के आपणी नवाईमां चंद्रनी कळा क्षय वृद्धि थायछे तेथी रात्रे केटलाक वखत अंधारूं रहेछे ते न रहे माटे तारागढनां[1] किल्ला उपर मशालो सळगावी एवडी मोटी रोसनी करवी के तेनो ऊजास घणे लांबे सुधी देखाय. ए रोसनी केवी हती:—

सात कोशको दुर्ग है, ता पर जरत मसाल;
सो देखी मीरां तहां, अर उर ऊठी झाल. ॥ १ ॥

ए रोशनी मक्कामां त्यांना मुख्य मीरां साहेबे दीठी. तेणे ते जोवा सारु पोताना एक दूत रोशन अह्लीने अजमेर मोकल्यो. रोशन अह्ली पवन गोटको लई ऊड्यो ते चार कलाकमां अजमेर आवी

---

1 अजमेरना किल्लाने तारागढ पण केहेता हता. हाल ते टुटी गयेलो जोवामां आवेछे.

पहोंतो. त्यां ते रोशनी पृथिराज सळगावेछे एम नक्की करी पाछो वळवा लाग्यो पण वळी जवा अगाऊ शेहेरना लोकोने कांई चमत्कार बतावी जाऊं एवो विचार करी आनासागर तळाव तरफना मोटा दरवाजाना मोढामां धुणी धुखावी गजचर्मनुं आसन करी हाथमां तस्वी राखी मोढेथी कलमांनो उच्चार करतो जाणे हमणांज ऊंचेथी ऊतरी आव्यो न होय एवा दबदबाथी बेठो. परोड थतां दरवाने दरवाजो खोल्यो, पण तेनी धुणीना ताप आगळ तेनाथी ऊभायुं नहीं तेम शेहेरमांथी पण कोई आदमीथी दरवाजा बहार नीकळी शकायुं नहीं. रस्तो लोकोनी ठठथी भराइ गयो. घणा जणोए दूर ऊभे ऊभे फकीरने ऊठी जवा कह्युं पण आतो पोताना ध्यानमां मस्त थई बेठोछे ते कोईनुं कह्युं सांभळतोज नथी.

शेहेरमां हाहाकार थई रह्यो, लोकोए पृथिराजना एक सामंतने आवतो जोयो. तेणे एक नागपुरी धोतीऊं पेहेरेल तथा एक अंग उपर ओढेल, माथांउपर नानीशी पटकी, बगलमां तलवार, तथा तेना हाथमां पाणीनो लोटो हतो. तेनी पाछळ एक नोकर हतो, तेना हाथमां चंडीपाठनुं पुस्तक तथा पूजानो सामान हतो. आ सामंतने रोजनो नियम हतो के किल्ला बहार जई त्यां मळशुद्धि करी आनासागरमां स्नान करी दुर्गा देवीना मंदिरमां जई संध्यावंदन करी षडंग चंडीपाठ करी देवीने एक पाडो बळीदान आपी गाममां आववुं. एनुं नाम चामुंडराय हतुं, ते राजानो साळो थाय. ते केवो बळिष्ट हतोः—

छप्पय.

पिये दूध मण पंच, शेर पेंतीश स सकर;
अंन नव ताकडी, वळी एक मोटो बकर;

---

१ पांचशेरी.

काळकूट त्रय शेर, सवा मण घृत्त सु पोपन;
कस्तूरी इक शेर, शेर दो केशर चोषन;
मण चार दहीं महीषी तरन, भोगराज मटकी भरे;
सवा प्होर दिन चढतहीं; सीरामणी चामुंड करे ॥ १ ॥

आ वीर पुरुष कांई फकीरनी धुणीना तापथी बीजा लोकोनी माफक उभो रहे तेम न होतो. ते पोते धुणी पासेथी नीकळी जवा मागते तो नीकळी जते पण तेने तो ए फकीरने ऊठाडी रस्तो खुल्लो करवो हतो. माटे फकीरपासे जई कह्युं "अरे म्लेच्छ, तुं कोण छो, क्यांथी आव्यो छो, अने आ पनघट शावास्ते रोकी बेठोछो?"

रोशनअल्लीः—ए सवालो तमे शावास्ते पूछोछो ? तमथी नीकळी जवाय तो नीकळी जाओ; नहींतो रस्तो बदली बीजे दरवाजेथी जाओ.

चामुंडरायः— अरे सांई, तुं तारी सिद्धीउपर एटलो बधो विश्वास राखेछे के मने रस्तो बदली जवा कहेछे ? पण हुं कोण छुं ते तुं जाणेछे ?

रोशनअल्लीः— मारे ते जाणवा जरूर नथी. बस हुं कहुं छुं के फकीरने छेड मा अने मारी बंदगीमां खलल न कर.

चामुंडरायः— तारी बंदगीमां खलल थाय छे अने अमे रजपूतो ताराजेवा फकीरथी बी जई रस्तो बदलीए तेमां अमने कलंक लागे नहीं के ?

रोशनअल्लीः— अरे काफर, तुं मारी सामे लांबी टुंकी वात न कर.

"काफर" आ शब्द सांभळी चामुंडरायनी आंख लाल थई गई अने तेणे एकदम पोतानी तलवार खेंची. रोशनअल्लीए ए तलवारमां देवीनो वासो दीठो माटे पोताना कलामनुं ए आगळ कांई चालशे

---

१ अफीण.

नहीं एम समजी तरत पोतानी पछेडीमां सघळी आग उपाडी लई चालतो थयो.

पछेडीमां एटली बधी आग ऊपाडी गयो ते जोई लोको आश्चर्य तो पाम्या पण रस्तो खुल्लो थयो जोई खुशी थई चामुंडरायनां वखाण करवा लाग्या.

बीजे दिवस एज फकीर बजारमां धूणी धुखावी बेठो. आ वखत चारसो गुजरीओ पोताना शिरउपर दहींनी मटकीओ लई जती हती तेमांनी एकने फकीरे पुछ्युं के मटकीमां शुं छे?

गुजरीः— अरे सांई, तुं ए वातमां शुं समजे?

फकीरः— शुं हुं माणस नथी ?

गुजरीः— ए मटकीओमां दहीं छे ते राजाना दरबारमां लई जईए छीए. ते राजा अने सामंतो आरोगशे.

फकीरः— पछी तमने कांइ मळशे ?

गुजरीः— हा, अम दरेकने एक एक मोहोर मळशे.

फफीरः— वारु, हुं तमने बे महोर आपुं तो मने एक मटकी देशो ?

गुजरीः— तुंपासे दहींनी मटकीने वास्ते आपवाने मोहोरो होय तो फकीर शावास्ते था. पण वारु मोहोरो कहाड तो एक मटकी तने आपीए.

फकीरः— जोजे हो वचनथी बंधायलीछो.

एम कही भट्टीमां चिपिओ नांखी बे मोहोर कहाडी आपी. गुजरी वचनमां बंधाई गई हती माटे तरत मटकी फकीर आगळ धरी. फकीर तेमां आंगळी बोळी जभिउपर मुकी बोल्यो "अरे थु!!तमारो राजा अने साभंतो आवुं दहीं जमेछे ? ए तो बहु खाटुं छे, मने पसंद नथी, पण ले आ सोना मोहोरो." एम कही बे महोरो आपी.

गुजरीओ तो फीकी पडी आगळ चाली, पण पाछळथी फकीर कोई एवो यवनमंत्र पड्यो के चारसो गुजरीओना पोशाको नीचे पडी गया. अने तेओ नीचे बेसवा गईओ तेटलामां उपरथी मटकीओ पडी गई अने बजारमां रेलम छेला थई गई. शेहेरमां फरी हाहाकार वाग्यो अने राजा तथा सामंतोने शिरामणी वखत दहीं पोंतुं नहीं माटे रामराय गुज्जर अने धीरपुंडीर नामना बे सामंतो ए वातनी तपास करवा निकळ्या तो तेमने मालम पड्युं के गई काले जे फकीरने चामुंडराये ऊठाडी मूक्यो हतो तेणेज ए हरकत करी हती. सामंतो रोशनअल्लीने पकडी मुस्के बांधी दरबारमां दोरी चाल्या. रस्तामां तेमने कयमाष दाहीमो जे राजानो साळो अने प्रधान तथा चामुंडरायनो मोटो भाई थाय ते मळ्यो तेणे हकीकत सांभळी हुकम आप्यो के एणे आंगळी नांखी आपणुं दहीं वटाळ्युं तो ते आंगळी कापी नांखी तेने आपणी हद बहार पोंचाडी आवो. रोशनअल्ली बोल्योः—

"**काटंत मेरी अंगुली, तूटंत तेरी बींटुली;**" करशे खुदा अने खुदानो रसूल तो ए वात साची जाणजो. पण कोइए ते बोलेनी दरकार कीधी नहीं अने आंगळी कापी नांखी.

लोकोनी ठठ देखतां ते आंगळी ऊडी ठेठ मक्के जई मीरां साहेबना खोळामां पडी. रोशनअल्ली पण पाछळथी पवन गोटको लई मक्का तरफ ऊडी गयो. मीरां साहेबे आंगळी देखतांज कचेरीमां जाहेर कर्युं के रोशनअल्लीथी आ बनाव बन्योछे. तेटलामां तरत रोशनअल्लीए जई पोकार कीधी अने पोते बोलेलुं वचन कहीने कह्युं के हवे ए साचुं पाडवुं के नहीं एमां तमारी शोभा अने निंदा छे.

रजपूतो पोताना ब्राह्मण अने भाटनुं अपमान थयुं ते पोतानुं थयुं

---

१ अजमेरनो किल्लो स्त्रीना स्तनना आकारमां हतो माटे तेने बिंटुली पण केहेता हता.

समजेछे. बीजी प्रजाओ पोताना भाटोविशे एमज समजेछे. मुसलमानो पण फकीरने विषे एवीज रीते मानेछे, माटे मीरां साहेबने पगथी ते माथां लगी झाळ चढी गई. तेणे सर्वे ओलीआओने तेडी लडाईनी तैयारी करवा फरमाव्युं, तथा रात्री वखते मसाण जगावी खोदाई मदद मागी. तो तेमने एक खेंग नामे घोडो, तलवार,अने कटार गेबमांथी मळी, अने हुकम थयो के जाओ तमारी फतेह छे, पण याद राखजो के कूड करशो मां, हुं कूडनो बेली नथी.

आ वखत मीरां साहेबनी सादीनो दिवस नजदीकमां हतो तेने वास्ते तेनो मामो ख्वाजा पीर मोसाळुं लई आव्यो हतो तेने मीरां साहेबे पूछ्युं के "मामा मोसाळुं दुनिआंनुं भरशो के दीननुं?" ख्वाजाए जवाब आप्यो के "बेउ भरवा समर्थ छुं." मीरां कहे, "हालतो दुनिआंनुं मोसाळुं राखो. अमे दीनवास्ते लडवा जईशुं. त्यांथी फतेह करी आवीए पछी दुनिआंनुं मोशाळुं भरजो. करशे रसुल्लल्ला तो फतेह करीनेज आवशुं पण जो तेम न थतां त्यांज खपी जईए तो पाछळथी दीननुं भरवा आवजो."

ख्वाजाए ते कबुल कीधुं अने मीरां साहेब एक लाख एंशी हजार पीरोने लई दरीआकिनारे आव्या. बीजा पीरोए वाहाणो तैयार करवा कह्युं, त्यारे मीरां साहेब बोल्या के "नहीं बधा जणा सहु सहुना निमाजना मुसल्ला बीछावी ते उपर घोडा सहित ऊभी नीमाज पडो. जे पोताना दीननी क्रियामां कुशळ हशे ते तरी पार उतरशे ने लडाईमां पण फतेह करशे अने जे अहीं रही जशे तेनो मारे खप पण नथी."

सर्वे जणा मुसल्ला बिछावी घोडाओ सहित निमाज पड्या के तरत तेओ सर्वे ऊडी हिंदुस्तानना किनाराउपर उतर्या. किनारे ऊतरी मीरां साहेबे पोताना मंत्रीओ साथे सल्लाह बांधी के आपणे लश्करी वेशे अजमेर जईशुं तो दुश्मनो सावचेत थई तैयार थई रहेशे, माटे हाल

सोदागरो बनी अजमेरपासे जई छावणी नाखी लाग जोई लडाई करवी. सहुने ए वात पसंद पडवाथी तेओ सोदागरने वेशे अजमेर पासे छावणी करी पड्या.

तेओ सोदागरो छे तथा तेमनीपासे अरब्बी घोडा घणा सरस छे माटे पृथिराजे तेमांना थोडाक खरीद करवा कयमाषने मोकल्यो. कयमाष मेलाणमां आवी जुएछे तो कुल मखमलना तंबुओ, तेमां चांदी अने सोनाना स्तंभो, वचमां रत्नजडित स्तंभोवाळो मीरां साहेबनो तंबु, अने घोडाओनुं तंबुखानुं पण आखुं मखमलनुं दीठुं. घोडाओने शरीरे केशरना लेपो करेला, तेओने पाणी पीवानी डोलो चांदीनी, तथा घोडे घोडे एक एक माणस चमरीथी मांखो ऊडाडेछे इत्यादि दमाम जोयो तो तेने पृथिराजनी साहेबी रुपीए एक आनो पण मालम पडी नहीं.

कयमाषे दरवाजे जई मीरां साहेबने जाहेर कराव्युं. मीरां साहेबे पोताना एक मुत्सुदीने मोकल्यो, तेणे साथे फरी केटलाक घोडा बताव्या जे जोई कयमाष बहु खुशी थयो. अने मनमां ख्याल कीधो के आवा एक हजार घोडा पृथिराजपासे होय तो ते भरतखंडमां चक्रवर्त्ती राजा बने. पण तेमनी किम्मत पूछतां सोदागरे लाख लाख रुपीआ खरीद कीधी त्यारे तेनी छातीए भार झाल्यो नहीं. तो पण थोडा घणा तो खरीद करवाज एवो विचार करेछे तेटलामां तेणे मीरां साहेबवाळा तंबुमां खेंग घोडो बांधेलो तेनो अवाज सांभळ्यो. त्यारे मुत्सुद्दीने कह्युं, ए घोडो बतावो. मुत्सुदी कहे, "ए घोडो तो सोदागर साहेबने आपने चडवानो छे. तेम तमथी ए कंइ खरीद पण थई शके नहीं माटे जोयामां शो माल?" कयमाष कहे, सोदागर लोकोने पोतानो घोडो न वेंचवो एवुं अभिमान रहेतुं नथी. अने मने पसंद पडशे तो तमने मों माग्या दाम आपीश. मुत्सुदी तेने मीरां साहेबवाळा तंबुमां लई गयो त्यां खेंग घोडाने

जोयो तो तेना अंगऊपर कीनखापनी झूल, सोनानी सांकळोथी बां-
धेलो, पगोमां रत्नजडित घराणां, पाणी पीवानां वासणो सोनानां,
पिशाबनां चांदीनां, लोटे त्यारे जमीन वागे नहीं माटे मखमलनां
गादलांओ पाथरेलां, इत्यादि आडंबर जोई कयमाष तो स्तब्ध थई
गयो. तेणे आडंबरपर विचार न करतां शालिहोत्रिक नियम प्रमा-
णे ते घोडाने तपास्यो तो "**न भूतो न भविष्यति**" एवो मालम
पड्यो, माटे तेने जोई तेनुं मन लोभाई गयुं अने मों माग्या दाम
आपवानुं वचन आपी ए घोडो खरीद कीधो. मों माग्या दाममां
कयमाष बंधायो जाणी मीरां साहेबे विचार कीधो के एक वखत
तो राज्यने पैसाथी नबळुं कीधुं होय तो बधी वाते पहोंचाय, माटे
ते घोडानुं मूल छत्रीश क्रोड रुपीआ कर्युं. आवडी अद्भुत रकम
किम्मत करशे एवुं कयमाषना ध्यानमां न होतुं माटे ते कंपी गयो,
पण पृथिराजने जाहेर करतां तेणे दिलासो आप्यो के "कांई फि-
कर नहीं, राजानी तो हार जीत के नफो नुकसान तेना मंत्रीओना
हाथमां छे, क्यांथी नफो कहाडी आवे तेनो लाभ लेछे तो नुकशान
पण खमवुं जोईए. माटे जाओ खजाना खोली रोकड निकळे ते-
टली कहाडी घटारो थाय तेटलुं सोनुं चांदी आपी घोडो लई आ-
वो." कयमाषे जेम तेम द्रव्य पूरुं करी मीरां साहेबने भारी घोडो
छोडावी लावी अश्वशाळामां बंधाव्यो. पण अफसोस, ए घोडो
तो पृथिराजनुं सत्यानाश कहाडवा गेबमांथी निकळ्यो हतो, माटे
तेणे अश्वशाळामां पहोंचतांज खोंखारो करी पग जमीनपर पछाड्या
के शाळाना छत्रीश हजार घोडानां आंतरडां नीकळी पड्यां अने ता-
रागढ पांच कोश जमीनमां पेशी गयो. राजदरबारमां हाहाकार
वागी रह्यो अने कांई ईश्वरी कोप सिवाय आ बनाव बने नहीं एम
सहुने निश्चय थयो. सवार थये सोदागरोए जाहेर कर्युं के अमे
तो लडाई करशुं, तथा रोशनअली दाढी ऊपर हाथ फेरवी तथा का-

पेली आंगळी बतावी लोकोने कहेवा लाग्यो के "मारी आंगळी काप्यानुं फळ आपवा आव्यो छुं." बधानां गात्र शिथिळ थई गयां पण रजपूतनुं लोही कांई अफसोस करी बेशी रहे नहीं माटे पृथिराज पोताना टूंक लस्करथी मीरां साहेब ऊपर तूट्यो जेमां तेनां एक चतुर्थांश माणसो तो कतल करी नांख्यां.

मीरां साहेब पोतानां बळ, सिद्धि, अने गेबना वचन ऊपर एटलो तो विश्वास राखता हता के तारागढ तोडवो ए तो तेने मन एक कीडीने चपली नाखवा जेवुं हतुं, पण आज तेनी आंख ऊघडी अने जोयुं तो ए काम तेने घणुं विकट लाग्युं. माटे पोताना मंत्रीओसाथे मळी सल्लाह बांधी पृथिराज उपर केहेण मोकल्युं के अमे एक्कानी लडाई करवा खुशी छीए, जो अमारो एक्को हारे तो अमे डेरा तंबु वगेरे सर्वे सामान छोडी नासी जईए अने तमारो एक्को हारे तो तमे तरत तारागढ अमने स्वाधीन करो. पृथिराजे एविशे दरीखानुं करी पाननुं बीडूं मूक्युं, अने पोताना सामंतोनी पीठो ठोकी. पण बीडुं उठाववा अगाऊ तेनो एक्को केवो जोरावर छे ते जाणवा सहुने आतुरता हती. ए लोको तो परदेशी हता; एवा लोकोने तो अजमेरना वासीओए आजज जोया हता; तेथी कोण कही शके? अने एनुं बळ जाण्या अगाऊ बीडुं उठाववुं ए कांई सेहेल काम न होतुं, कारण के एक्कानुं बीडुं उठाव्याथी कोईने कीर्ति मळती नथी. ए बीडुं उठावीने तो फतेहज करवी जोईए, जो फतेह न थाय तो तेना एकना हारी जवाथी राजानुं राज्य जतुं रहे तथा तेनां नाम उपर पाछळथी काळो डाघ पडी जाय माटे ए बीडुं ऊपाड्या करतां न ऊपाडवुं तेज सारुं.

मीरां साहेबना एकानुं बळ जाणवा पृथिराजे कवि चंदने हुकम कीधो के तुं जगदंबानो वरदाई छे, ताराशिवाय कोईथी वर्णन थाय तेम नथी, माटे कवि चंदे जगदंबानुं ध्यान करी नीचे मुजब वर्णन कीधुं:—

छंद पधरी.

सुज शेख जात उजबक्क नाम, मीरां प्रधान पुनि जुद्ध धाम;
चालीश दून[1] जिन पीठ ढाल, चालीश दून उर कंठ माल.
पच्चाश दून पेहेरे कवच्च[2], पच्चीश दून शिर टोप रच्च;
चकमार[3] पंच मणको उदार, हज्जार तीर जिहि भाथ मार.
कब्बान पकर उजबक्क पीर, दोए कोशपें न चूकंत तीर;
दोए कोश पेंड पुनि तीर मार, सर लगत बान पाषान फार;
षट भोग जोग महिषा अहार, सुनि पराक्रम अरि गर्व गार.

छ छ पाडा खाई जाय तथा एवां जबरदस्त कवचो अने हथी-आरो उपाडे एवा वीर सामुं उठवा कोईनी हिम्मत चाली नहीं. बीडांवाळे बधा सामंतो अने सूरमाओपासे त्रण त्रण वखत बीडुं फेरवी पाछुं तख्तउपर राख्युं अने कचेरी बरखास्त थई.

चामुंडराये घेर आवी जगदंबाना मंदिरमां जई दुर्गानो पाठ मांड्यो. ते हवन करी ज्यारे बळिदान आपतो त्यारे देवी सिंहवाहिनीना रूपमां तेने हमेश दर्शन दई स्वहस्ते बळिदान लई जती तेम आज पण लेवा आवशे त्यारे वरदान मागीश एवी आशामां पूजन करवा बेठो पण आज तेने बळिदान आप्या छतां दर्शन थयां नहीं. माटे तेणे एक बीजो पाडो वध कीधो. तो पण दर्शन न थयां, त्यारे तेणे स्तुति करी.

चामुंडराय:—"हे महामाया ! जगज्जननी ! भक्तने भीडटाणे दर्शन न देवां ए तें तारा मनमां शो ख्याल कीधो छे. जगतमां तारी भक्ति करेछे ते भीड वखते काम लाग माटे. मने तो रोज रोज दर्शन दई स्वहस्ते बळिदान लई जती अने आज हुं कंईक मागीश

1 वे मणनो एक दून. 2 बखतर. 3 जंबीओ.

एवी तने खबर थई छे माटे बळिदान लेवा पण आवती नथी. ए काई तारां ईश्वरीपणाने छाजतुं नथी. पण हवे आ त्रीजुं बळिदान आपी मारुं माथुं पण अग्निकुंडमां तने अर्पण करीश. अने आजथी जगतमां तारी भक्ति बंध थई जाणजे. एटलुं कही त्रीजो पाडो वधकरी पोतानां शिर तरफ तलवार खेंची के अग्निकुंडमांथी जगदंबाए सिंहारूढ थई दर्शन दई तेनो हाथ पकडी लीधो. चामुंडराये पगे पडी स्तुति करी के "हे महिषासुरमर्दिनी, मारे तारी पासेथी शुं मागवुं छे ते तने खबरज छे माटे ए विशे भक्तने रस्तो बताव."

जगदंबा— में दर्शन देवामां विलंब कर्यो तेनुं कारण पण एज छे के हवे मने आ भरतखंडमां म्लेच्छोनुं राज्य सूझेछे माटे तमारो जय नहीं थाय.

चामुंडराय-- त्यारे में जन्मधरी तारा पूजनमांज दिवसो कहाड्या तेनुं पेहेलीज वखतमां एज फळ मळ्युं के ?

जगदंबा—भावी प्रबळ छे तेमां कोईथी मीन मेख थतुं नथी. पण तारे वास्ते एटलुं तो वचन आपुंछुं के तुं सुखे बीडुं उपाड, लडाई वखते हुं तारा उपर मारी अढारे भुजाओ छाई दई रक्षण करीश.

चामुंडराय तथास्तु करी पगे पड्यो अने जगदंबा अंतर्हित थई गयां. चामुंडराये दरबारमां जई बीडुं उठाव्युं एटले पृथिराजे मीरां साहेबने कहावी मोकल्युं के मारो एक्को तैयार छे. बीजे दिवस लढाईनी तैयारी थई. पृथिराज तथा मीरां साहेब पोतपोतानां लस्करसहित मेदानमां सामसामे जोवा ऊभा. आ तरफथी चामुंडराये अने पेली तरफथी उजबक पीरे कवचो पेहेरी हथीआर सजी घोडे स्वार थई मेदानमां घोडाओने कावे नाख्या. कावे फरते फरते बेउ नजदीक आव्या त्यारे—

चामुंडराय-- साबाश उजबकपीर ! साबाश ! रंग छे तने के मीरां साहेबनुं लूण हलाल करवा पोतानो जीव जोखममां नाख्यो.

हवे जलदी था, मारा उपर पेहेलो घा कर के पछी हुं पण मारा हाथ तने बतावुं.

उजबक—— अने रंग छे तने पण के मारा जेवा वीर पुरुष सामे मेदानमां आववा हिंमत चलावी. पेहेलो घा तुं कर कारण के अमे लोको तम उपर विना अपराधे चडी आव्या छीए.

चामुंडराय—— नहीं नहीं, तमे युद्धनी मागणी करवा आवेला छो तो अमारो धर्म छे के तमने दान आपवुं. माटे पेहेलो घा तुं कर.

उजबक—— पण पेहेलो घा हुं करीश तो पछी तारो घा केवो छे ते जोवा मने वखत नहीं मळे कारण के तुं तो मारा एकज घानुं भक्ष छो.

चामुंडराये एवां अभिमाननां वचन सांभळ्यां के तरत तेना ऊपर गदा फेंकी जेना प्रहारथी उजबक घोडासहित छत्रीश कदम दूर हठी गयो पण तरत चडी आवी चामुंडराय उपर गुणंजनो प्रहार कीधो. आ वखत जगदंबाए पोतानी अढारे भुजाओ चामुंडराय ऊपर धरी हती तेथी ते गुणंज जगदंबानी भुजाओमां वागी. पण चामुंडराय आठ कदम हठी गयो. फरी चामुंडराय तलवार खेंची धशी आव्यो अने उजबक उपर प्रहार कीधो के कुंभार चाक ऊपरथी पींडो ऊतारे ए प्रमाणे उजबकनुं शीश धड ऊपरथी उडी गयुं. पण धड तलवार लई धश्युं तथा चामुंडराय उपर प्रहार कीधो जे जगदंबानी भुजाओमां वागतां कंकण चार तसु वेरमां कपाई गयां तथा चामुंडराय दश कदम छेटे हठी गयो. पण आखर उजबक पीर पड्यो. पृथिराजनां लस्करमां जयजयकारनां वादित्रो वाग्यां अने मीरां साहेबनुं लस्कर धब पडी गयुं. पण तरत मीरां साहेबे बहार आवी जाहेर कीधुं के "तमारे एके जीवते बे घा कीधा अने अमारे एके एक कीधो माटे ए लडाइ अमारे कबुल

नथी." पृथिराज कहे "तमारा एक्काने कोइए रोक्यो न हतो तेणे सो घा कर्या होत तो पण छूट हती." पण आ लोकोने तो खेटुं करवुं हतुं माटे ते मान्य न करतां कापाकापी ऊपर आव्या तेमां पण मीरां साहेबने मोटुं नुकसान खमी हठी जवुं पड्युं. वळी बीजे दिवसे तेओए आनासागरमां गौवध करी तेनुं लोही छाट्युं. आ वातथी हिंदुओने एटली तो रीस चडी के तेओ एकदम मीरांनी छावणीमां धश्या, अने मीरां साहेब सुद्धां जण बच्चाने कतल करी नांख्या जेमांथी समाचार पोंचाडवा पण एके रह्यो नहीं.

लोहीनी नदीओ चाली, मुडदांओना ढगला थया, गीधो अने समळाओने ऊजाणी थई पडी. जोगणीओ अने काळिका तृप्त थयां, पण महादेवजीने रुंढमाळावास्ते खोपरीओ पूरी पडी नहीं कारण के जे एक लाख एंशी हजार पीरो कपाया तेओनां माथां तो ऊडी ऊडी मक्कामां जई पड्यां, अहीं तो फक्त धड रह्यां हतां. ए धडो पण उछळी उछळी जेना जेना हाथेथी पडेलां हतां तेओ भेळां रातना पथारीमां वळगी रहेतां, जे विषे निर्णय कहाडवा सभा भरी तेमां एवुं ठर्युं के हिंदु शूरो थायछे तेनुं धड पडे नहीं तो गळीनुं कपडुं के गायनुं लोही छांटेथी तुर्त पडी जायछे तेम मुसलमान शूराने अग्निदाह देवाथी थायछे, माटे ए मुजब बधां धडोने पूळा सळगावी अग्नि लगाव्यो एटले ते सर्वे ज्यांनां त्यां रह्यां.

पृथिराजे निश्चित थई मनमां ख्याल कीधो के ईश्वरे तेओने मारी जमीनना भोग वास्तेज मोकल्या हता. एटला बधा युद्धाओनां लोहीथी मारी जमीन धराई छे तो आवती साल मनमानतो पाक उतरशे. पण ए समजवामां एनी भूल हती कारण के ए लोही कांई साधारण युद्धाओनुं न हतुं, ए लोको तो करामतवाळा पीरो हता. गेबमांथी एओने खेंग घोडो, कटार, अने तलवार मळी त्यारे साथे एटलुं पण कहेवामां आव्युं हतुं के "कूड करशो मा"

पण तेओए तो भरतखंडना किनाराउपर पगलुं मूकीनेज ए रमत कीधी के लडवइआओनो वेश बदली सोदागरो बन्या, पृथिराजनुं द्रव्य पण एज वेषमां हरण कीधुं, वळी खेंग घोडो खोयो, अने एक्कानी लडाईमां उजबक पीर मार्यो गयो त्यारे खेटुं कीधुं, ए बधानुं फळ एओने तो मळ्युं, पण तेथी कांई पृथिराज शांत थई बेसे एम न होतुं.

वांचनारने याद हशे के ख्वाजा पीरे मीरां साहेबने दीननुं तथा दुनिआनुं बेउ मामेरां पूरवा वचन आप्युं हतुं ते मुजब हवे तेने दीननुं भरवा वखत आव्यो, माटे ते मक्केथी उडी अजमेर आवी आनासागर तळाव उपर दरवेशना वेशमां गजचर्मनुं आसन करी हाथमां तसवी लई बे पग सामसामा राखी वचमां अग्नि बाळी तेउपर काष्ठनी हांडली चडावी तेमां चोखा रांधवा बेठो. आ करामत पनीहारीओए दीठी, जेओना म्होंथी वात चालते चालते पृथिराजना एक सामंतने काने गई तेणे आवी कह्युं के "अरे सांई, आंहींथी ऊठी जा. तारा जेवी करामतवाळो एक शख्स आव्यो हतो जेनी आंगळी कापवामां आवी हती. तेनी सखावतमां एक लाख एंसी हजार तारा जेवा दाढीवाळा आव्या हता जे बधा खपी गया तो वळी तारुं क्यां आवी खूट्युं के आहीं फसायो." ख्वाजाए तो कांई जवाब आप्यो नहीं, एटले रामराय गुज्जर जे ते सामंतनुं नाम हतुं, तेणे हांडीमां खोबो भरी धूळ नांखी. धूळ नांखतांज ख्वाजाना पग वच्चेनी झाळ वधी तेणे सामंतना घोडाने घेरी लीधो, घोडो तथा स्वार बळता बळता नाठा पण झाळ तो तेनी पासेनी पासे. तेथी ते गभराई रस्तामां दुर्गामातानुं मंदिर आव्युं तेमां पेशी गयो. देवीना प्रतापथी झाळ मंदीरमां तो पेशी न शकी, पण तेनी आसपास वींटाई गई. ते ख्वाजाना पगथी ते आखो रस्तो अने मंदीरनी आसपास झाळ झाळ बळवा लागी, ने रामराय तो केद थई गयो. राजदरबारमां

खबर थतां फकीरने ऊठाडवानो ठेराव थयो, पण रोशनअल्लीने सजा आपतां जे जोखम खमवुं पड्युं हतुं तेनो घा हजी ताजो हतो, माटे ते ओलीआ छे तो ते सामे कोई देवने मूकी तेने उठाडवो एवो ठराव थयो. अने क्षेत्रपाळनुं आवाहन कीधुं तो गोरो अने काळो बेउ क्षेत्रपाळ हाजर थया, तेमांथी गोराने ख्वाजापासे मोकल्यो पण ख्वाजानी सिद्धाई आगळ तेनुं कांई न चालतां उलटो तेना पग चांपवा बेसी गयो. आ खबर दरबारमां थतां काळाने मोकल्यो ते पण गोरानी पेठेज पग दाबवा बेठो, त्यारे बधुं राजमंडळ गभरायुं. कयमाषे सल्लाह आपी के ते सिद्धिवाळो छे तो एनी सिद्धिमां चूक थवा वगर आपणथी एने पहोंचाशे नहीं. पुराणोमां आपणे घणे ठेकाणे वांच्युं छे के स्त्रिओनां छळथी मोटा तपस्वीओनुं तप भंग थई गयुं छे माटे राजानी धावनी दीकरी गुज्जरी जे अति स्वरूपा अने चतुर छे तेने मोकली एनुं तप भंग करवुं. पृथिराज कहे गुज्जरी मारी धावनी दीकरी तोपण एक जातनी बेहेन थायछे. तेने हाथे एवुं काम करावववामां लांछन लागे माटे हुं कदी थवा दईश नहीं. पण रामगुरु प्रोहित अने चंद भाट इत्यादीए निर्णय कहाडी आप्यो के रजपूतने पृथ्वीनां रक्षण वास्ते कोई जातनुं काम करवामां बाध नथी माटे गुज्जरीने सोळ साहेलीओसहित ख्वाजाने छळवा मोकली. तेणे ख्वाजा सामे घणाक हाव भाव अने कटाक्ष कीधां पण सघळुं व्यर्थ. उलटुं ख्वाजाए तेने कह्युं "आव बेटा, आ फानी दुनिआंमांथी तरी पार उतरवानी आशा राखती हो तो मारी मुरीद बन." गुज्जरी एटलुं सांभळी पगे पडी चेली बनी जई पग दाबवा मंडी गई. साहेलीओ तेने कहेवा लागी, "अरे, तने शुं कामे मुकी छे अने आ शुं करेछे?" तेओने तेणे जवाब आप्यो के "जाओ रांडो, ख्वाजा तो मारो पीर अने हुं एनी मुरीद छुं." आ छेल्ली तदबीर टेवी हती तेमां पण निष्फळ थवाथी राजमंडळमां

गभराटनो पार रह्यो नहीं, अने ए फकीरनी शुं मतलब छे ते जाणवा सौ आतुर थयां, ते खबर पूछवा वास्ते चंदने योग्य माणस जाणी राजाए हुकम कीधो अने सख्त भलामण कीधी के तुं पण गुज्जरीनी माफक चेलो बनी जई खबर कहेवा पण न आव एम न करतो. चंद तेविषे निश्चित रहेवा वचन आपी ख्वाजापासे गयो. एक तो जाते भाट अने तेमां पण चंद एटले कोई माणसने रीझावी काम कहाडी आववुं ए कांई एने वास्ते मुश्केल न होतुं. ते जातेकने बोल्योः—

ख्वाजा तुं दूजी खुदाइ जुग जियो ख्वाजा सांई

इ० बिरद वखाणथी तेणे ख्वाजाने रीझाव्यो. खुसामत खुदान पण प्यारी छे तो ख्वाजा कोण मात्र. चंदना बिर्द वखाण सांभळी ख्वाजा पाणी पाणी थई गयो. तेणे चंदने सन्मान दई बेसवा कह्युं अने पूछ्युं, बेटा चंद खुशी छो ?

चंदः—सांहीनाथ खुशी तो छुं पण आपे आटली बधी करामात फेलावी राजा तथा रैयतने गभराटमां नांख्यां छे तेमां आपनी शी मतलब छे ते जाणवा मारी इच्छा छे.

ख्वाजाः— बेटा तने खबर छे के आ जमीन पीरोना लोहीथी धापी छे तो हवे ए उपर पीरोनो दावो छे. पृथिराजे हवे आ शेहेर छोडी देवुं जोईए छीए.

चंदः— गरीब निवाज त्यारे ए राजाने पेटे अवतार लई हवे शुं दुकान मांडी, मजुरी करी, के भीख मागी पेट भरशे ?

ख्वाजाः— मारां वचनउपर चाली अजमेर छोडी देशे तो में तेने वास्ते दिल्ही टेवी छे, माटे तेणे तथा तेना नोकरोए अंग उपर हंमेश पेहेरवानां कपडां तथा घरेणां होय ते सहित नीकळी जवुं. उपरांत एक दमडीभरनी पण आशा राखवी नहीं.

चंदः— बंदे निवाज़ एवडो मोटो राजा आटलां मोटां लशकर सहित अंगउपरनां कपडांथी बहार नीकळी खरची वगर दिल्हीसुधी केम पहोंची शकशे ? वळी दिल्ही तो एना नानानुं गाम छे तेना उपर विना कारणे एनाथी चडाई केम थशे ?

ख्वाजाः— ए सवालोना जवाब में आगळथीज नक्की करी राख्या छे. खरचीविषे एम छे के अजमेरथी बार कोश चालशे एटले एक जग्याए एक साहुकार बार करोडनुं द्रव्य एकठुं करी धर्म मार्गे एक दमडी पण खरच्यावगर मरण पाम्यो छे ते प्रेत थई पोताना द्रव्यउपर बेठो छे, तेसाथे लडी खुंची लेजो. दिल्ही उपर चडाई करवा जरूर नथी. अनंगपाळ तुंवर जे पृथिराजनो नानो थाय तेने पेटे वारस नथी ए तुं जाणेछे. हाल एनुं दिल दुनिआमांथी उठी गयुं छे तो पृथिराजने दत्तपुत्र करी दिल्ही सोंपी पोते वनवास चाली नीकळशे.

चंदः— बंदे निवाज आपनुं कहेवुं अक्षरे अक्षर खरुं छे. पण मारे ए वात राजाने जई कहेतां तेने विश्वास शी रीते आवशे ?

ख्वाजाः— आजथी त्रण रोज पछी अनंगपाळनो सदरहु बाबतनो कागळ आवे तो ए सघळुं सत्य छे नहीं तो तमे तमारुं धार्युं करजो.

चंदे आमीन कही पगे पडी वळी नीकळी दरबारमां आवी समाचार कह्या. अने पृथिराजने कह्युं के तुं ख्वाजाने जईने पगे पड.

पृथिराज ते मुजब आवी पगे पड्यो, त्यारे ख्वाजाए कह्युं "आवो दिल्लेश." चंदे ख्वाजानी रूबरूमां तेनी कहेली वात पृथिराजने संभळावी, तथा बीजी आडी तेडी वातो करी पृथिराज पगे पडी वळी आव्यो. घेर आव्यो के तेने दिल्हीथी पत्र आव्यो माटे ते तरफ स्वारी करी अजमेर पीरोने सोंपी दीधुं. रस्तामां तेणे प्रेतने मारी तेनुं गया श्राद्ध करी उद्धार करवा वचन आपी द्रव्य खूंची लीधुं अने त्यांथी दिल्ही गयो.

प्रकरण ३ जुं.

गुजरातना भोळा भीमदेवसाथे युद्ध.

आ समये गुजरातमां अणहिलपुरनो शृंगार राजा भोळो भीम हतो. तेनीपासे अजीत चतुरंगी सेना हती. तथा घणाक दुर्गपती-ओ एनी सेवामां हाजर हता. अमरकोशनो कर्त्ता अमरसिंह सेवडो जेणे अमावास्याने रोज चंद्र उगाड्यो हतो ते एनी सेवामां हतो. ते पोताना मंत्रवडे करीने स्त्री पुरुष अने देवने वश करतो हतो. एज वखतमां आबुउपर जेतसी परमार राज्य करतो हतो तेने एक सलख नामे कुंवर अने इच्छनकुमारी नामे कन्या हती. आ कन्या अतीज स्वरूपा हती जेथी तेनी कीर्त्ति देशोदेशमां प्रसरी हती. भीमदेव एनी कीर्त्ति सांभळी मोहित थयो अने अमरसिंहने मोकली जेतसीने कहाव्युं के " तारी पुत्री मने परणाव नहीं तो आबुनी धरती छोडी दे. " जेतसीने आ बोलो वज्रजेवा लाग्या अने अमरसिंहने साफ ना पाडी, तथा पृथिराजने पोतानी मददे बोलाव्यो, अने तेने लख्युं के सिंहनो भक्ष शीयाळ लई जवा धारेछे एम थवुं न जोइए. आ उपरथी पृथिराज जेतसीनी मददमां गयो अने भीम चडी आव्यो, जेथी मोटी कापाकापी थई जेमां भीमने हठी जवुं पड्युं अने पृथि-राज इच्छन कुमारीने परणीने घेर आव्यो. चहुवाण अने चालु-क्यने परस्पर अटक्याथी नबळा पडी गया जोई शाहाबुद्दीने पृथि-राजउपर हल्लो कर्यो तेने पण पराजय पामी नासी जवुं पड्युं.

भीमदेवना काका सारंगदेवना सात छोकरा (प्रतापसिंह, अरी-सिंह, गोकुळदास, गोविंद, हरीसिंह, श्याम, अने भगवान) भीम-देवथी बारवटुं करी पृथिराजने आश्रये आवी रह्या हता. एक वखत पृथिराजनी सभामां भारथनी कथा वंचाती हती त्यारे प्रताप-

सिंहे मूछ ऊपर हाथ नांख्यो ते जोई कन्हने कोप चड्यो अने तेणे तलवारथी प्रतापसिंहनुं माथुं उडाडी नांख्युं. आ बनाव जोई बीजा छ भाईओ ऊठ्या तेओने पण कन्हे मोटा भाई साथे पोंचाडी दीधा. पृथिराजने आ वातथी कन्ह ऊपर कोप चड्यो. तेने लाग्युं के परोणाने घेर तेडावी मरावी नांख्या एवी आपणी जगतमां अपकीर्ति थशे माटे तेणे कन्हने सजा करीके तेणे हमेशां आंख आडी पटी बांधी राखवी जे युद्धना वखत विना क्यारे पण छोडवी नहीं.

पृथिराज अने भीम वच्चे इच्छनकुमारी वास्तेज वेर खडुं थयुं हतुं एम न हतुं. पृथिराजना पिता सोमेश साथे पण भीमने लडाईओ थई हती जेमां सोमेश भीमने हाथे मरण गयो हतो. आ विषे फारबस साहेबे रासमाळामां अच्छी रीते वर्णन कीधुं छे, तथा पृथिराजे पोताना पितानुं वेर केवी रीते वाळ्युं ते विषे पण तेओ साहेबे चंदनां लखाणनो आश्रय लई घणुं सरस वर्णन लख्युं छे जेमांनुं थोडुंक हुं अंही टांकवा दुरस्त धारुं छुं:—

पृथिराजनां हृदयमां भीम निरंतर सालवा लाग्यो. शत्रुनां मरण विना तेनो अग्निसरखो कोप शांत पड्यो नहीं. ते पोताना सामंतोनी वच्चे वारंवार कह्या करतो के "भीमे सोमेश्वरने मार्यो ! हरि! हरि !" परमारे तेने बहु समजावीने कह्युं के, "तमे तमारा पिताने वास्ते शोक करशो नहीं. जेनुं शरीर तरवारनी धारथी कपायछे तेनी कीर्ति प्रसरीने सुरलोकमां जायछे.— क्षत्रियनो एज खरो धर्म छे." सिंध परमार बोल्यो: "मारुं कह्युं सांभळो तो गुजरात उजड करो के जेथी सोमेश स्वर्गमां रह्या रह्या राजी थशे. सुलतान सरखा तमारा नामथी ध्रुजी जायछे तो चालुक्यना शा भार छे!" पृथिराज बोल्यो "स्नान करीने में दीवा कर्या छे. में सोगन खा-

---

१ कन्ह चहुवाण पृथिराजनो काको थाय.

धा छे के मारे मारा पितानुं वैर लेवुं. हुं भीमने केद करीश त्यारे एनी पासे हुं सोमेश मागीश. हुं योगिनी, वीर अने वैतालने आनंद पमाडीश." एम कही पृथिराज सूतो. सूर्योदय थतां योद्धाओ एकठा थया, कन्ह चोहाण दरबारमां आव्यो एटले सभा हाथ जोडी ऊभी थई, केम के तेने "नरव्याघ्र" नुं पद मळ्युं हतुं. ते रात्रदिवस आंखे पट्टी बांधतो ते जाणे सांकळेला वज्रशरीरना सिंहजेवो हतो. पछी जाम यादव आव्यो, बळीभद्र आव्यो, कुरंभदेव, चंदपुंडीर, भीमपांडवना जेवो बलवान आतताय चहुवाण आव्यो, लडाईनी वखते अग्नि सरखो लंगरीराय आव्यो, परमुलकनो विजय करनार गोयंदराय गेहेलोत आव्यो, अने कृपाळु दुर्गादेवी जेने प्रसन्न छे एवो वरदाई चंद पण आव्यो. ते सर्वेने पृथिराज केहेवा लाग्यो के "मारा पितानुं वैर लेवुं छे माटे चालो आपणे सैना तैयार करो. गुजरातना राजासाथे युद्ध मचावीए अने चालुक्यनुं मूळ काढी नांखीये. सोमेश्वरने जीतीने भीमे पोताना दाहाडा पूरा भरयाछे; स्त्रीना गर्भमांथी शोधीशोधीने पण मारे चालुक्यवंशनो नाश करवो छे. गमे तेवा घाडा अरण्यमां ते भराई पेठो होय ते पण तोडी पाडवुं. जो हुं एम न करुं तो ब्राह्मणोए मारुं नाम पृथिराज खोटुं पाडयुं छे एम जाणवुं." पृथिराजनुं कह्युं सर्वे सामंतोए मान्य कर्युं, अने मुहूर्त जोईने नीकळीए तो आपणा कामनो जय थाय एम कहीने जोशी महाराजने तेडवा मोकल्युं. महाराज आव्या अने मुहूर्त जोईने बोल्या के "जो आ चोघडीआमां नीकळो तो निःसंशय जय थाय. हुं सोगन खाईने कहुं छुं के आवो सारो योग छतां कार्य पूर्ण नहीं थाय तो ज्योतिषशास्त्र शीखववानुं काम मारे हवे पछी कदी करवुं नही." जगज्योतीनुं आवुं बोलवुं सांभळी पृथिराज बहु राजी थयो.

पृथिराजे पोतानी सेना एकठी करी अने निश्चय करेले चोघडीए

नोबत वगडावी. ते नगर बहार सेना लई चाल्यो अने ज्यां विशाळ झाड अने बळवान जग्या हती त्यां मुकाम करचो. लडाईनां गीत गवावा लाग्यां. पांच प्रकारना वाजित्रना नाद थवा लाग्या. ए रीते सेना लई पृथिराज गुजरातनो नाश करवा चडचो. भीमने काने ए वात गई के पृथिराज चोंसठ हजार योद्धा लईने चढचोछे, अने समुद्रना मोजानी पेठे एनी सेना धसती आवेछे. तेथी ते घणो क्रोधायमान थयो, तेनुं अंग शूरथी कंपवा लाग्युं, तेनी आंखो लाल चोळ थई गई, अने तेणे राजप्रधानोने बोलावीने लडाईने माटे तैयार थवानी आज्ञा आपी. परगणे परगणे आज्ञा पहोंची; घणा राजाओ चडी आव्या; बे हजार माणस तीखा घोडाउपर चडी धनुष्य बाणादि हथीआर सजीने आव्या; कच्छमांथी त्रण हजार अस्वार, सोरठमांथी पंदरसो, कदी नीशान न चुके एवा काकरजथी कोळीओ, युद्धना उत्सुक अने कदी लडाईमां पीठ न दे एवा झालावाडथी झाला, कावानो नायक मुचकंद, काठीयावाडनो काठी राजा अने परगणांमांथी नानी मोटी अगणित सेना एकठी थई. साम्भरना हेरके पृथिराजने कह्युं के समुद्रनी पेठे गर्जना करती चालुक्यनी सेना तैयार थई छे; एक लाख लडवैया अने एक हजार हाथी छे ते हुं मारी नजरे जोईने आव्यो. ते सांभळी पृथिराज बोल्यो के "भीम मारा सामो आवेछे तो हुं तेने चीरी नांखी तेनां आंतरडांमांथी मारा पिताने कहाडी लईश. जो एम करुं तोज मारुं नाम पृथिराज खरुं."

सांज पडवा आवी. ज्यां तेओ ऊभा हता त्यांज तंबु खडा कराव्या. सर्वे जम्या अने पासे पासे सूता. कयमाष तरवार बांधी राजा पासे सूतो; आबुना सरदार जेत अने सलख, चंद पुंडीर, चामुंडराय, हाहुलीराय हमीर, सारंग कुरंभ, तुंवर पहाड, अजानबाहु लोहाणो, लंगरीराय इ० सर्वे हाजर हता. रात्रनो दूरथी एक जानवरनो अवाज संभळायो, जे सांभळी कन्ह बोल्यो; "सोमेश्व-

रनुं मरण थवा अगाऊ जेवां शकुनो थतां हतां तेवांज भीमसंबंधी थायछे माटे जो राजा आ शकुननो लाभ लई युद्ध मचावे तो यम दूत पण एना सामा थई शके नहीं." आ प्रमाणे वातो करतां सूर्यो-दय थयो. योद्धाओए नारायणने नमस्कार कर्‍या, अने जेम कमळ प्रफुल्लित थायछे तेम सूर्यने जोईने तेओनां मन प्रफुल्लित थयां. आ वेळाए एक बीजां अने तरत त्रीजां शकुन थयां ते उपरथी सामंतो कहेवा लाग्या के आजे नक्की एक प्रहरनी मांहे भयंकर युद्ध थशे. पृथिराज कहेः– "शकुन जोवानी अगत्य नथी, शूरवीरने लडाईनो दिवस ए उत्सवनो दिवस छे. माणस जीवतुं होय के मुवेलुं पण तेनो आत्मा आपणा जोवामां आवतो नथी. कीर्ति पण आवेछे ने जाय छे एवी दैवनी कृति छे. जे हारशे ते दुर्योधननुं पद पामशे अने जीतशे ते पांडवनुं पामशे माटे शकुननो विचार करशो मा, आपणे सोयना एक अग्र जेटली पण जग्या छोडवाना नथी. शकुननो कांई पार नथी, तेओ थायछे ने जायछे, माटे आपणे तो आगळ धसो." राजानी आज्ञा उपरथी सामंतोए युद्धना पोकार उठावी मूक्या. तेमां भेरी, नोबतो, रणसिंगाना युद्धमय अवाजो, वादीत्र अने बीजा नादो थवा लाग्या. घंट अने हाथीनी डोकनी सांकळोनो खखणाट थवा लाग्यो. घोडा खोंखारवा लाग्या, अने सर्व सेना उपडी. मुकामे मु-काम तेओ पाटण देशनो नाश करता पृथ्वी उपर खरता तारा पडे तेम शत्रु ऊपर टूटी पडवा चाल्या, तेओना भारथी शेषनाग पण अकळाई गयो. पृथिराजने चमर थतुं हतुं; राजछत्र तेना काका क-न्हैने माथे धरायुं हतुं. कन्हने व्यूहरचक ठेरावीने सेनाने अग्रभागे राख्यो; तेनी पाछळ पृथिराज पोते, ते पाछळ निडुरराय अने ते पा-छळ परमार रह्यो. जेम जोशी जन्मोतरी उखेळतो थायछे तेम ते-ओ मुकामे मुकाम आगळ चालता गया, तेम जीवतरनो भाव पछवा-

डे मूकता गया, एवो शूरवीर चहुवाण जेना हाथ देवना हाथ जेवा तथा जे शत्रुनो त्रास ते आगळ चाल्यो.

भीमदेवना देशमां भय व्यापी गयुं, अने जंगल तथा नाना गामडांमांथी शिकारना पक्षीओ टोळे मळीने उडी जाय तेम लोको नासी जवा लाग्या. गर्द उडवाथी मार्ग छवाई गयो. नदीना पूरनी पेठे सेना आगळ चाली. घोडा धीमे धीमे चालता सारस जेवा अने दोडता हरण जेवा देखावा लागा. भालां तरवारो अने बरछीओ सूर्यथी झगझगवा लागी. वेर वाळवानो प्रसंग मळवाथी प्रथिराजे चंद बारोटने भीमनी पासे मोकल्यो. चंद पोतानी साथे जाळ, नीसरणी, कोदाळी, दीवो, अंकुश अने त्रिशूळ लईने गुजरातनी राजधानीमां जई पहोंच्यो अने भोळा भीमने जई कह्युं के "साम्भर राजा आवी पोंतो छे." त्यारे भीम बोल्यो "ओ भाट, आ वस्तुओ शा वास्ते तुं लाव्यो छे ते झटपट कही दे." चंदे उत्तर आप्यो के "प्रथिराज कहेछे के जो तमे पाणीमां पेशशो तो आ जाळ वते तमने झालीशुं, आकाशमां जशो तो आ नीसरणीथी, पाताळमां जशो तो कोदाळीथी, अंधारामां पेशी जशो तो आ दीवाथी शोधी कहाडी आ अंकुशवडे तमने पकडी त्रिशूळ वते पूरा करशुं." आवुं सांभळी भीम बोल्यो के "हुं भीम जे बीवरावे तेना भूका कहाडी नाखुं अने युद्धमां जेनाथी सर्व माणस डरी जाय एवो भयंकर छुं, माटे चडचुं चडचुं बोल नहीं अने आगळ शुं नीपज्युं हतुं ते दिवस संभार."

चंद बोल्योः "उंदर कदापि कोईवार बिलाडी उपर जीत मेळवे, गीध पक्षी कदापि पवित्र हंसना माथांउपर थनथनाट करे, हरण कदापि लडाईमां सिंहनी बराबरी करे, सापनी साथे लडतां देडकुं कदापि जय पामे ए सर्व वातो कदापि दैवनी योजनाथी बने पण एवुं सदाय नीपजे छे एम धारवुं नहीं. पर्वत उपर छवाई गएला अ-

रण्यने बाळीने भस्म करनार अग्निनी साथे दीवानो मुकाबलो थई शके?" भीम बोल्योः "शाटना छोकरा शब्दोवते लडे, दैत्य गाळोवते लडे, अथवा भाईओ वारसानो भाग वेहेंचतां मुक्कीयोथी लडे पण सोमेश्वरवाळो आ कजीओ तो मरण साथे लडवानो छे. जा तारा साम्भर राजाने कहे के तारो बीवराव्यो बी जाऊं एवो हुं नथी."

आवो उत्तर सांभळी चंद बारोट जरा गभराईने उठी उभो थयो अने रोषथी तेनी आंखो लाल चोळ थई गई. ते झटपट पृथिराज पासे आव्यो अने तेने पाणी चडाववाना विचारथी जे जे बन्युं हतुं ते यथास्थित कही दीधुं, अने ते बोल्यो के "भोळो भीम कहेछे के सूतेला सापउपर देडकुं फरीने जागतां तेनी जेवी वले थाय तेम तमे करोछो. गजरातनो धणी तो चतुरंगी सेना लईने चडेछे. में कह्युं ते उपर तेणे कांई लक्ष आप्युं नहीं. में तेने दीवो, जाळ, कोदाळी, सहु बताव्युं. तेणे पूछ्युं के आनो भेद शो छे? कुशळ प्रधान कयमाषने तारी साथे केम लाव्यो नहीं? चामुंडराय के कन्हने मोकलवा जोईता हता, साम्भर धणी पोते पगे पाळो चाली शा माटे आव्यो नहीं. वळी ते बोल्यो के में घणी वार लडाईओ मारीने गुजरातने माटे जय मेळव्यो छे; तें जेवा राजा जीत्या छे तेवो मने गणीश नहीं, साम्भरना राजा जेवा तो में हजारो कतल करी नाख्या छे.

पृथिराजे निड्डुररायने पोतानी पासे बोलाव्यो अने तेनो हाथ झालीने कह्युं के "आ सर्वे योद्धाओमां तमे मुख्य छो, तमे असल जातना "छो अने तमारा पूर्वजो जेवा शूरवीर हता तेवा तमे छो, तमारी "साथे देव अथवा देवदूत लडे तो तेने पण तमे वश करी ल्यो "एवा छो; पांडुपुत्रोना जेटलुं तमे युद्धमां बळ बतावोछो; आ "जगतउपर तमे प्रीति राखशो नहीं; पण स्वर्गनो मात्र विचार "राखी तमारा सामंतो साथे एकचित्त थईने लडजो." निड्डुररायें

उत्तर आप्यो "आपणा सामंतो शत्रुने घासनी पेठे कापी नांखे
"एवा छे. ओ पृथिराज, तमारा बळ वडेज तमारा योद्धाओ बळि-
"या छे. कन्ह बाल्यावस्था, युवावस्था अने वृद्धावस्थामां पण
"युद्धनेविषे आनंद पामतो आव्यो छे. जे सेनानी सामे ते लडेछे
"तेना चूरेचूरा करी नाखेछे. ते महापदधारी जेने जगत नरव्या-
"घ्र कहेछे एवो भीष्मनो ते अवतार छे." पृथिराजे निडुररायनुं
आवुं बोलवुं सांभळी पोतानी कोटमां मोतीनी माळा हती ते निडुर-
रायने तुष्टिदानमां आपी ते तेनी डोकमां सूर्यनी पछवाडे गंगा वींटा-
यली होय एवी देखावा लागी. पछी महा शूरवीर निडुरराय
राठोडे नोबत वगडावी. नोबतना नादथी वीर पुरुषो जेम एकठा
थया तेम सेना पण एकठी थई. जेम तारामां ध्रुव शोभेछे तेम ते
वीर पुरुषोमां शोभी रह्यो; कन्हने पृथिराजे पोतानो पाट घोडो आपी
तेना उपर तेने आग्रहथी बेसार्यो; कन्ह बोल्यो "ओ रणपति!
हजी सुधी में सोमेश्वरना शत्रुने मार्यो नथी तेमज मारा शरीरमांथी
हसने स्मी जवानो रस्तो करी आप्यो नथी तेथी मने धिक्कार छे."
पृथिराजे उत्तर आप्यो "कोई एक वेळाए सुग्रीव पोताना बळथी
पोतानी स्त्रीनुं रक्षण करी शक्यो न हतो; कोई एक वेळा दुर्योधन
पण करणनुं रक्षण करी शक्यो न हतो; कोई एक वेळाए श्रीरामे
वनमां सीता खोई; कोई एक वेळा पांडव सरखा पण द्रौपदीनां चीर
रखावी शक्या नहीं; ओ कन्ह काका एवा बनाव माटे दुःखी थशो
नहीं, हुं तमने मारा इष्ट देव सरखा गणुं छुं, जेम मोरनी आंखो जो-
ईने साप त्रासथी नासी जायछे तेम तमारी आंखनो क्रोधाग्नि जोईने
शत्रु नासी जशे." पृथिराज आ प्रमाणे निडुरराय अने कन्हने मान
आपतो हतो तेटलामां तेने समाचार मळ्या के भीम भारे सेना लई
पासे आवी पोंतो छे. जेम छंछेडेलो सर्प कोपायमान थाय अथवा
सिंहने खीजवीने तेने उंघमांथी जगाडवामां आवे, अथवा उनाळामां

एक अग्निनी चिनगारीथी आखुं वन सळगी उठे तेम भीम कोपथी प्रज्वलित थयो. तेणे जे सांभळ्युं हतुं ते पोताना योद्धाओने एकठा करीने कही संभळाव्युं. ते सांभळीने सर्वे जगत त्याग करेला योगीओना जेवा देखावा लाग्या. बन्ने सेना एक बीजानी सन्मुख आवी गई. जंजीरा छुटवा मांडचा, अग्निबाण आकाशमां ऊडी रह्यां, बन्ने बाजुएथी अस्वारोनी अडमअडा थई रही अने सामसामे तरवारो चाली. भीमे पोतानी सेनानी एवी व्यूहरचना करी हती के ते भेदीने शत्रुथी अंदर जई शकाय नहीं, तेम चोहाणनी हार पण टूटे एवी न हती. केटलाकना सांगोथी भेचा नीकळी गया; केटलाकनां तरवारोथी डगलां नीकळी गयां; मारो मारोनो अवाज चाली रह्यो. केटलाक मल्लनी पेठे बाथमबाथा आवी पडचा; केटलाकनां शरीरमां थईने बाण आरपार नीकळी गयां. शिव अने काळी आनंद पाम्यां. काळीने लोही पुष्कळ मळ्युं. अने शिवे रुंढमाळामां माथां परोववा मांडचां. उच्छिष्ट मांसने बदले गीध पक्षीओ मनुष्यमांस तोडी खावा लाग्यां. जेम मोटा नगरना धोरी रस्ता खीचोखीच भराई जायछे तेम स्वर्गनो रस्तो त्यां जनाराओथी भराई गयो. योद्धाओ लूंट करी देवुं आपी रणमुक्त थया; मेघमांथी जेम वीजळी झबुके तेम कन्हनी तरवार झबकी रही. एक बाजुए कन्ह अने बीजी बाजुए सारंग मकवाणो बन्ने जण खरा शूरवीर सिंहनी पेठे लड्या तेमां हाथीनी पेठे गाजी रहेला शूरवीरोनी वचमां मकवाण राजा पड्यो. पृथिराजना सुभटोए किकियारी करी तेथी शत्रु त्रासी गया. योगीओ तपस्या करीने थाकी जायछे त्यारे तेओने जे स्थान मळेछे ते स्थान एक क्षणवारमां सुभटोने मळ्युं. जेम पडछायानी दरकार राखवामां आवती नथी तेम मालमत्ताने तुच्छ गणीने तेओ लडाईमां टूटी पड्या. तेओ मुक्तीज इच्छता हता. जीवतरने मात्र स्वप्नवत् समजता हता. आज रात्रे आपणे मरवुं, काले शुं थशे तेनी कोने

खबर छे. पवनथी आग प्रसरे तेम जुस्साथी लडाई चाली. योद्धाओए जाण्युं के आपणी कीर्त्ति रहेशे, तरवारनी धारथी कपाई जतुं शरीररूपी पांजरुं हवे आत्मारूपी हंसने फरीने पूरी मूकनारूं नथी. ज्यारे हंस ऊडी जशे त्यारे पांजरूं शा कामनुं! लड़ाई अतिशय जुस्साथी चाली.

पृथिराज साबाश! साबाश! कही पोताना योद्धाओने हिम्मत आपवा लाग्यो. साभ्रमती नदी बे कांठे लोहीथी वहेवा लागी. अने तेना प्रवाहमां हाथीओ, घोडाओ अने माणसो तणावा लाग्यां. फरीने वळी लडाईना वाजित्र वागवा लाग्यां. अर्धा प्रहरसुधी तुमुल युद्ध थयुं. हवामां भमरानी पेठे बाणो हमहमाट करवा लागां, चोहाणना घणा योद्धाओ मराया. चालुक्यनी घणी हारो हाथीनी पेठे रणमां पडी. पृथिराजे कोर्पीने पोतानो घोडो मारी मुक्यो तेनी खरीनी पडघीथी पृथ्वी ध्रुजवा लागी. जेम पींपळानां पानडां पवनथी ध्रुजी जाय तेम शत्रुनी हार डगमगवा लागी. बाणोथी आकाश एवो तो छवाई गयो के पक्षीओने ऊडवाने पण मार्ग मळतो न हतो. छेवटे चालुक्यनी सेना स्वर्गनो मार्ग छोडीने पाछी नाठी. देव दानवो बोली ऊठ्या के जे क्षत्रिय सूर्यनो मार्ग भेदीने स्वर्गमां प्रवेश करेछे तेने धन्य छे. वामनजीए त्रण डगलां भर्यां त्यारे एक जगत जीत्या, पण योद्धाओ मात्र एकज डगलुं आगळ भरवाथी त्रणे जगत जीत्या. वीरोनी साथे रुद्र जेम रमेछे तेम तेओ नाचवा लागा. जेम चालुक्यनी सेनानी हार टूटवा लागी तेम चोहाणनी बलिष्ट थवा लागी. चोहाण बोली ऊठ्यो के आजे हुं मारी इच्छा पूर्ण करीश अने गुजरातनी धरतीने रंडापो आपीश. भीमने तेणे कह्युं के "हवे तुं बचवानो नथी. स्वर्गमां ज्यां सोम बेठो छे त्यां हुं आजे तने मोकलीश." कन्हे तेने पछवाडे रहीने हिम्मत आपी. साम्भर राजाए भीमना उपर घा कर्या. ज्यां पुन-

जन्मनुं बंधन हतुं तेना उपर तरवार फरी वळी. स्वर्गमां देवताओ जयजय करी रह्या. भीमदेव पड्यो तेनो अवाज थवाथी शंभुए पोतानां नेत्रो उघाड्यां. अप्सराओ जोवाने आगळ धसी आवी. विजयी पृथिराज उपर स्वर्गमां पुष्पवृष्टि थई अने भीमदेव विमानमां बेसीने देवलोकमां गयो.

फार्बस साहेब चंदनुं लखवुं कबुल राखी पछीथी मुसलमान ग्रंथकारोना लखवाना आधार उपरथी लखेछे के भीमदेव आ युद्ध पछी जीवतो हतो.

प्रकरण ४ थुं.

महोबानी लडाई.

पूर्व दिशामां समुद्रशिखर करी शेहेर छे तेमां यादवकुळनो विजयसुर नामे राजा हतो. तेने पदमावती नामे पुत्री हती जे रूप अने चतुराईमां खरेखरी पदमावतीज हती. ते पृथिराजनां रूप अने गुणो सांभळी ते उपर एवी तो मोहित थई गई के पोताने हाथे एक कागळ लखी एक पोपट साथे पृथिराज उपर मोकल्यो, जेमां लख्युं हतुं के जेम श्रीकृष्ण रुक्मिणीने वर्‍या तेम मने वरजो. तमविना मारे आ जगतमां अवर पुरुष भाई बाप छे. जे वांची पृथिराज आठ हजार लष्करथी तेज वखत परणवा चड्यो. गोरी शाहाबुद्दीनना जासुसो तो भरतखंडमां फर्याज करता हता, तेमणे जई खबर आपी के पृथिराज टुंक लश्करथी पोतानी हद्द बाहार नीकळ्यो छे. तेने हमणां पकडवो ठीक पडशे एम धारी ते रस्तो रोकी बेठो. पृथिराज पदमावतीने परणी वळ्यो के रस्तामां तेणे मुगलोने दीठा. ए मुगलो केवा हताः—

मुगल भले खुरासानके भूरे भारे गात[1];
जिन देखी नर थरहरे दो दो दुंभी[2] खात.

एक बीजानी नजरो पडतां तीरोना वरसाद वरस्या अने भेटाभेट थया के तरवारो नीकळी, जेथी लोहीनी नदीओ चाली अने धड उपर धडना ढगला थया, केटलांक धडो माथांवगरनां झुंझवा लाग्यां एम कापाकापी चाली जेमां पांच हजार मुसलमानो अने पचास हिंदुओ पड्या. गोरी पकडाई गयो अने तेनी पासेथी आठ हजार घोडा दंड लई छोडी दीधो अने पृथिराज दिल्ली पोंतो. पण रस्तामां ए लडाईना केटलाक पृथिराजनी पक्षना घायलो भूला पड्या. ते महोबे[3] जई चड्या. तेओ शेहेर आगळ पोंता के भारी तोफान साथे वरसाद थयो जेथी बधा गभराया, पण तरत तेओए राजानो बगीचो जोयो, जेमां जई विश्राम लेवा धार्युं, पण दरवाजामां जतां माळीए तेओने अटकाव्या अने गाळो दीधी. माटे एक घायले ते माळीनुं डोकुं उडावी दीधुं अने बधा बागमां जई उतर्या.

माळीनी स्त्रीए त्यांना राजा परमाल चंदेलनी राणी मल्हनदे पासे पोकार कीधी एटले मल्हनदेए परमालने कही घायलो उपर फोज मूकी. तेओ वच्चे लडाई थई जेमां परमालना त्रण हजार अने घायलोमांथी त्रीस जणे आ दुनीया मुकी. चंदेल राजाने खबर थतां तेनी आंखमां क्रोध भरायो, तेणे उदल नामना पोताना सामंतने तेडावी हुकम आप्यो के "तमे तमारा ताबाना लश्करथी चडी जाओ अने ए घायलोने पूरा करो." उदल कहे "घायलोने मारवा ए रजपूतनो धर्म नथी; वळी ए घायलने मारी बळीयासाथे बाथ भीडवी पडशे."

ए दरबारमां मेहेला अने भोपती नामे उदलना बे अदावदीआ

---

१ गात्र=शरीर. २ दुमा घेटा.

३ चंदेलनी जमीन जेने हाल बुंदेलखंड कहेछे तेनी राज्यधानी हती.

हता तेओए लाग जोई राजाना कान भरचा के उदल तो लडवा जवाथी बीहेछे माटे एवां ब्हानां कहाडेछे. राजा काननो काचो होवाथी तेणे ए वात मानी उदलने जवा सख्त हुकम कीधो. उदले ते हुकम मानी घायलोने जई घेरचा. तेओ वचे तरवारो नीकळी तेमां घायलोमांनो मुख्य कनक चहुवाण अने उदल सामसामा अटक्या. उदलना घाथी कनकनुं शीश धडथी छूटुं थई गयुं अने कनकना घाथी उदल मूर्छा खाई गयो. उदलनां हजार माणसो अने घायल जे बाकी वीश रह्या हता ते सर्वे पूरा थई गया. उदल ए काम करी आव्यो पण ज्यां कानना काचा राजा त्यां जसने बदल जुतीयांज मळे. ए कामनो जश तो न मळ्यो पण एज मेहेला अने भोपतीनी चुगलीथी तेने तथा तेना मोटा भाई आल्हने महोबो छोडवो पडचो. तेविशे एम बन्युं के आल्हनी घोडारमां पांच वछेरा घणा सरस हता जेनी देशमां बहु तारीफ थती हती, ते दरबारनी घोडारमां बंधावा वास्ते मेहेला अने भोपतीए राजाने समजाव्यो जे उपरथी राजाए तेनी मागणी करी. आल्हनी मा देवलदेए तेने कह्युं के "**पूत बछेरा मांग न दीजे**" जेथी आल्हे वछेरा देवा साफ ना पाडी, एटले राजाए घुस्सो कीधो माटे आल्ह अने उदल रीसाई कनोज गया ज्यां तेओने जयचंदनी दरबारमां सारा हुद्दानी नोकरी मळी.

परमाल चंदेले घायलोने तो मारचा पण तेओनुं पूंछडुं लांबुं हतुं. तेओनो धणी मोटा दांतवाळो हतो. तेने खबर थतां एविषे पूछाववा पण रह्यो नहीं अने एकदम चंदेल उपर चडी आव्यो. रस्तामां गामो लूंट्यां; केटलाक लडवैया सामा थया तेओने कापी नांख्या अने चंदेलनी नवाईमां केटलुंक नुकसान करचुं, जेनी राड महोबे पोंचतां चंदेले पोताना सामंतोनी सभा करी पण आल्ह अने उदल शिवाय तेनी कोईमां नजर बुडी नहीं, पण हवे अफसोस करचे शुं थाय, एम विचारी मनमांथी उदासी कहाडी नांखी "हवे आपणा

देशनो बचाव शी रीते करवो " ए प्रश्न कहाड्यो. सघळा वृद्ध तथा शाणा सरदारोए सलाह आपी के पृथिराजने महोबा सुधी आववा देवो अने आपणे किल्लो ढांकी अंदरथी लडाई करवी तथा आल्ह अने उदलने कनोजथी बोलाववा अने जयचंदने पण खरीतो लखी तेनी मदद मंगाववी. आपणे अंदरथी मार मारशुं तेटलामां बाहारथी आल्ह अने उदल आवी पोंता तो पाछळ तेओ पण पृथिराजने नुकसान पोंचाडशे एम बन्ने बाजुएंथी हल्लो थतां दुश्मननी घणी खराबी थशे. पण आ वात परमाल राजाना कुंवर ब्रह्माजीतने पसंद पडी नहीं. माटे ते बोली उठ्यो "तमे लोको तो वृद्ध थवाथी तमारी इंद्रिओ नबळी थई गई छे ते साथे मगजनो जुस्सो पण नबळो थई गयो छे. शुं रजपूतो बायडीओनी पेठे घरमां भराई रही पोतानां परगणांनी खराबी थती जोशे ? शुं ए पीथल सामे जींतवा जेटलुं आपणामां बळ नथी ? शूं रजपूतोमांथी शूरातन जतुं रह्युं ? आज काल पृथिराजे शाहाबुद्दीन तथा भोळा भीम इ० सामे लडाईओमां जय मेळव्यो छे तेथी तेनो अहंकार वधी गयो छे अने लांबो टूंको विचार राखतो नथी, पण तमे जाणो छो के अहंकार राजा रावणना पण रह्या नथी. अने बधे ठेकाणे जींतज थाय एवुं परमेश्वर कोई माणस वास्ते सरजतोज नथी. हवे ए पोतानी कीर्तीने झांख लगाडवा अने आपणी धरतीने सारुं खातर पुरुं पाडवा आव्यो छे तो हे सामंतो, मारी साथे चडो. मारा देशनी खराबी थतीं हवे हुं वधारे सांभळवा खुशी नथी."

ब्रह्माजीतनुं आवुं जोश भरेलुं बोलवुं सांभळी सामंतोए पोतानी तरवारो म्यानमांथी खेंची खोंखारा करी सामो जवाब वाळ्यो के "अन्नदाताजी, ए बाबतमां आपने मोवडमांज तसदी लेवा जरूर नथी. अमे हुकम देखत चडी जइए छीए; रजपूतोने वास्ते एवो मांगलिक वखत क्यांथी ? आपना पुण्यप्रतापथी फतेहज करी आवशुं, अने कदापि लडाईमां काम आव्या तो पण स्वर्गनी प्राप्ति

पामशुं, अने अप्सराओने वरी अखंड सुखनो लाभ लेशुं. एम अमने बेऊ हाथमां लाडु छे." एम कही मलखान, आरेसिंह, वरसिंह, नरसिंह अने जेसिंह ए पांच सरदारो तथा ते साथे तेना एक हजार भाइ भत्रीजा अने आठ हजार बीजुं लश्कर चड्युं. तेओनो सिरसवा नगर पासे मुकाबलो थयो. पृथिराजनी तरफमांथी एक बाजुए कयमाष अने चंदेलनामांथी मलखान, बीजी बाजुए चंद पुंडीर अने नरसिंह तथा त्रीजी तरफ चामुंडराय अने जेसंग एम सामसामा अटक्या. तेमां कयमाषने हाथे मलखान पड्यो. चंद पुंडीरे नरसिंहने ठेर कीधो जे जोई वरसिंह चडी आव्यो ते पण स्वर्गमां पोंतो अने चामुंडराये पण जेसंगने पूरो कीधो. हवे फक्त अरिसिंह रह्यो ते आ वाण वळी गयो जोई नाठो अने महोबे जई दुःखदायक समाचार कह्या.

परमाल राजानी दरबारमां आ माठी खबर पोंचतां तेणे पोतानी राणीने तथा कायथ कल्याण, भाट जगनक अने प्रोहित केशव दाम इ० राज्यना माणसोने बोलावी "हवे शुं करवुं" एविषे सलाह मागी. राणी कहे "आपणे जेनी भुजाओ उपर आशा राखतां हतां ते तो काम आवी गया. हवे आल्ह अने उदल आव्या वगर कोई रीते पण बचवानी आशा राखवी फोकट छे माटे पृथिराज पासेथी बे महीनानी मेहेतल मागी आल्ह अने उदलने बोलाववा अने कनोजपति जयचंद पासेथी पण मदद मंगाववी." सर्वानुमते ए विचार सिद्ध थयो अने जल्हन भाटने पृथिराज पासे मोकल्यो ते साथे पान, अत्तर, गुलाब, बंदुक, बरछी तथा बे कच्छी घोडा नजराने मुक्या. पृथिराजे ए स्वीकारी बे महीनानी मेहेतल आपी. जगनक भाटने कनोज मोकल्यो तेणे जई आल्हने पत्र आप्यो अने कह्युं के "आप गया छो ते दिवसथी मल्हनदे राणीनी

आंखमांथी आंसु मूकायां नथी. हवे आप नहीं पधारो तो चंदेलने ध्रेर धरती रेहेवानी नथी."

आल्हः— परमाले अमने विना चूके देशवटो आप्यो. मारा पिता केटली केटली नोकरी बजावी आखर एनीज सेवामां काम आव्या. वळी में दस वखत बादशाहनी फोज हठावी नुसरतखानने लूंट्यो. गयाकांठा अने रेवाकांठानो मुलक में मारयो, मेवात मारी तथा अंतर्वेध जीती केटलीक जमीन वधारी आपी जेनुं फळ अमने राजाए आ देशवटो आप्यो.

जगनकः— ए बधी वातो हमणां संभाळवानी नथी. हमणां तो शाम धर्म सामुं जोवानुं छे. जे बन्युं ते चुगलखोरोथी बन्युं छे. राजानो एमां कांई वांक नथी. हाल ए संकडासमां छे अने राणी मल्हनदेनी एक आंखमां श्रावण अने बीजीमां भादरवो वरसे छे ते सामुं जोवानुं छे. तमने देशवटो दीधा एमां तमारी ओर खुबी जाहेर थई छे के तमविना राजाथी पोतानो देश खवाई शकायो नथी एवी तेने तथा बधा लोकोने खात्री थई छे. आल्हनी माता देवळदे बोली:—

श्याम सांकरे जानके, रहे अवर घर सोय।

सो राणी फिरतो लियो, कुल रजपूत न होय।

मातानुं वचन मानी बेउ भाई कवच सजी तैयार थया अने जयचंद पासे रजा मागवा गया. जयचंद तेमने बखतर सजेलां जोई बोल्यो के " रजाविगर क्यां जाओ छो ? " आल्हे महोबे जवानी वात कही त्यारे जयचंद बोल्यो के "आटला दिवस मारो पगार खाई खाई हवे चंदेलनी मददमां मरवा जाओछो ए मने परवडशे नहीं. हुं बधां नाव बंध करी दउंछुं अने तमने रजा आपतो नथी." ए

---

१ ध्रर्ण=उपरी.

सांभळी आल्हनी आंखमां लालाई आवी गई अने ते बोल्यो, " जो तमारे अमने केद राखवा हशे तो अमे पेहेलां कनोज लुंटशुं अने पछी महोबे जई युद्ध करशुं." तेटलांमां जगनक भाटे जयचंदनां बिरद गाई परमाले लखेली अरजी आपी ते वांची जयचंदे खुशी थई आल्ह अने उदलने सीख आपी, तेमां साज सीखे वीश घोडा, बे हाथी, मोतीनी माळा, हाथनी जडाउ पोंचीओ अने बे जडाउ कटारीओ आपी तथा क्षत्री धर्म बजावी नाम कहाडवा हिम्मत आपी, अने कुमक वास्ते लाखनसी कमधज, रूपसी मोरी, केशवदाश चालुक्य, बोयथ तुंवर, दुद जादव, कुंवरपाळ सुत्रवार, सेंगरराय, ताल्हनतेज पठाण अने पचास हजार असवार आप्या. जगनक भाटने सीखमां एक हाथी, बे घोडा, वीस हजारनुं द्रव्य अने बे गाम अघाट लखी दीधां ए रीते आल्ह तथा उदल त्यांथी रवाना थया. परमाल चंदेलने खबर थतां ते सामैयुं करी राणीसहित सामो आव्यो तेने आल्ह अने उदल जई पगे पड्या. राजाए तेओने घणुंक आदरमान आप्युं अने चार परगणां अघाट लखी दीधां, तथा बे हाथी, मोतीनी माळा, हीरानी पोंचीओ, जडाउ शिरपेच अने तेर घोडा सोनाना सामान सीखे भेट आपी फोजनो मालेक करी राज्यनो सघळो भार तेने सोंप्यो. अने बीजे दिवस मसलत करी पृथिराजने आवती काले तैयार रेहेवा चीठी लखी. नगारांना अवाजो अने सरणाईना स्वरो थवा लाग्या, तथा बधा शूराओ आनंदमां फरता हता. पृथिराजना लश्करमां पण एज रीतनी तैयारीओ थती हती. ए रीते पृथ्वी उपर शूराओ वीररस जमावी लडाईनी तैयारी करता हता ते वखतें स्वर्गमां अप्सराओ तेओने वरवा वास्ते शृंगार रस जमावी मृत्यु लोकमां आववा तैयार थती हतीओ जेविषे कवी चंद नीचे मुजब वर्णन करेछेः—

॥ छंद भुजंगी ॥

इतें सूर न्हावे करे दान ध्यानं, उतें अप्सरा अंग मंजंत तानं ।
इतें टोप टंकार सीसं उतंगं, उतें अप्सरा कंचुकी पहरी अंगं ॥
इतें सूर मोजा बनावंत भाये, उतें अप्सरा नूपरं पहरी पाये ।
इतें सूर रागं बधे ताय तेगं, उतें अप्सरा चरनीया पहरी जंघं ॥
इतें पाघ पेचं समारंत सूरं, उतें सीसफूलं गुहावेत पूरं ।
इतें सूरमा पाखपें झलम डारे, उतें झुंड रंभा सु मांगं समारे ॥
इतें सूर सरवं खरे खग्ग मंजे, उतें अप्सरा अंजनं नेन अंजे ।
इतें सूर ढालं बली बंध डारे, उतें अप्सरा श्रवण नाटक धारे ।
इतें सूर दस दान हथ्थेसु कीये, उतें अप्सरा हथ्थ मेंदी सु दीये॥
इतें सूर कर केहरी नख लीने, उतें अप्सरा कंकनं पान कीने ।
इतें सूर बरछी लिये हे अन्यारी, उतें अप्सरा हाथ वरमाल धारी॥
इतें सूर तुलसीनकी माल नाई, उतें अप्सरा माल मोती बनाई ।
इतें सूर कर बान कबान नाई, उतें अप्सरा चमकि नेनं नचाई॥
इतें तेग सावंत घोरे न लीये, उतें अप्सरा साज विमान कीये ।
कही कवी चंदं निरखी स सोउ, बरने सुमाने परी सूर दोउ ॥

भावार्थः—अहीं (पृथ्वीपर) शूराओ नाही धोई दान ध्यान करेछे अने त्यां (स्वर्गमां) अप्सराओ पण अंग साफ करेछेः अहीं शूराओ टोप अने बखतर पेहेरेछे अने त्यां अप्सराओ कंचुकी धारण करेछेः शूराओ मोजा अने अप्सराओ नेपुर पगमां पेहेरेछेः शूराओ चोरणा तंग करी बांधेछे अने अप्सराओ चरणीया पेहेरेछेः शूराओ पाघ-डीना पेच समारेछे अने अप्सराओ माथांउपर शीशफूल (सोनानुं अथवा फक्त पुष्पज) धारण करेछेः शूराओए पाघडीउपर मोडो

बांध्या अने अप्सराना टोळांओए पोतानां माथांना वाळना सेंथा पूरचाः शूराओए मूछोने ता दीधा अने अप्सराओए आंखमां अंजन कीधांः शूराओए ढाल बांधी अने अप्सराओए कानमां अकोटा पेहेरचाः शूराओए हाथेथी दश जातनां दान कीधां अने अप्सराओए हाथोने मेंदी लगाडीः शूराओए हाथमां केहरीनख (पंजामां पेहेर-वानुं हथियार थायछे ते) लीधा अने अप्सराओए कंकण पेहेरचांः शूराओए हाथमां बरछी लीधी अने अप्सराओए हाथमां वरमाळा लीधीः शूराओए तुलसीदलनी माळा पेहेरी अने अप्सराओए मोतीनी माळाओ पेहेरीः शूराओए हाथमां बाण अने कबान लीधां अने अप्सराओए चमकीने नेत्रोना इमारा कीधाः अहीं शूराओए घोडा तैयार कीधा अने त्यां अप्सराओए विमान तैयार कीधांः कवी चंद कहेछे के एवी रीते परीओ अने शूराओ बेउ तैयार थयां.

ए रीते पृथ्वी उपर शूराओ अने स्वर्गमां अप्सराओ तैयार थई-ओ. आल्ह अने उदल घेर जई एक भाणांमां जम्या अने रात्र पडे पोतपोतानी स्त्रीओ बोलावी खुशीमां रात्र कहाडी. पाछली एक पोहोर रात्र रही त्यारे जागीने स्नान ध्यान करी दान धर्म कीधां अने कवचो सजी तैयार थया त्यारे तेओनी मा देवळदे बोली.—

देवल कहे सुनो सुत दोइय, लोंन हलाल करो तुम होहिय ।
खावंद आगे सीस जु दीजें, निर्भय राज सुरगको लीजे ॥

उदलनी स्त्री बोली "प्राणनाथ, आप कंई फिकर करशो नही. आपना शरीरने कांई आंच लागी तो हुं आपनी साथेज आवीश." कह्युं छे केः—

पिया मरत त्रीया रहे, करे पुत्रकी आस ।
सो नारी फिरतो लियो, कुल रजपूत न तास ॥
पिया रणमांही मरे, नारी सती न होय ।
अगति जाय भटकत फिरे, कही गोरज्या सोय ॥

एवी रीते तेओनी मा तथा स्त्रीनी तरफथी रणमां झुंझवा पुष्टी मळी, अने तेओ दरबारमां गया त्यांथी परमाल राजा, ब्रह्माजीत कुंवर, तथा पचास हजार पोतानां अने पचाश हजार जयचंदनी मददनां माणसो लइ नगाराना डंका करी पृथिराज ऊपर चड्या. अंही पृथिराज वीश हजार लश्करथी सामो चडी आव्यो तेना अग्रभागमां चंद पुंडीर अने कन्ह चहुवान हता. कन्हनुं तेज जोई परमाल कंपी गयो अने हाल सुधी आल्ह अने उदलना बळ उपर तेने भरोंसो हतो ते उठी गयो तेथी नरम घेंस जेवो थई जई बोल्यो "मारे पृथिराज सामुं युद्ध करवुं नथी. अर्ध देश, पचास लाख द्रव्य, अने एक कन्या आपी हुं पृथिराजने पगे पडी तेने पाछो वाळीश." आल्ह अने ब्रह्माजीतने ए नपुंसकपणाना बोलो सांभळी बहुज माठुं लाग्युं माटे तेओ बोल्या: "आ धड उपर सीस हशे त्यांसुधी समाधानीमां मुलक अपाशे नहीं, मुवा पछी गमे ते थाओ. अंहींनुं राज्य जशे तो स्वर्गनुं मळशे एमां आपणे शुं खोट छे!" तो पण परमालने ते वात गमी नहीं माटे ते मेहेला अने भोपती चुगलोने लई लश्करमांथी नासी कलंजरना किल्लामां भराई बेठो.

कन्ह चहुआण चंदेलना दळमां धस्यो अने खेतरमां खेडु कापणी वखते कणसलां कापी नाखे तेम सेनानो संहार वाळवा मंड्यो. लोहीनी नदीओ चाली तेमां केटलांक मुडदां तणाई जवा लाग्यां. घायलोनी बूमो, तरवारना खणखणाटो, शूराओनी हाको इ० पोकारोथी पृथ्वी गाजी रही. कनोजना कुमकनो लाखनसी अने पृथिराजानी तरफनो निडुरराय ए बेउ जयचंदनी भत्रीजा सामसामा अटक्या. बन्ने जण एवा पटाबाज हता के कोई कोईने गांजी शक्यो नहीं. घणीवार थतां अंत न आव्यो एटले लाखनसीनी मददमां तालनखां पठाण, रूपसी मोरी, हुद जादव, कुंवरपाळ इ० आव्या, अने तेओने जोई निडुररायनी मददमां कन्ह, कयमाप, सलख, पज्जन,

पहाड इ० आव्या. अने मारो मारो एवा पोकारो करी सामसामा अटक्या. ताल्हनखांए कन्ह उपर तरवारनो घा कीधो जेथी कन्ह घोडासहित घुमी गयो, पण ते वखते तेणे एक गदा फेंकी जेथी ताल्हनखांनुं माथुं चकचुर थई जतां ते पड्यो. ते साथे पांच सरदार, बार हजार बीजुं लश्कर अने त्रीस हाथी पड्या. पृथिराजनी तरफमां पजून कछवाहाने मूर्छा आवी, पांच हाथी, एकसो घोडा अने पचास रजपूतो पड्या. पण ताल्हनखां पडतां कनोजनी फोजनो पग पाछो पड्यो, जे जोई लाखनसी बोल्यो " अरे नपुंसको, रजपूतना नामने एब लगाडनाराओ तमे हवे वधारे वखत जीववानी आशा राखी स्वर्गनुं अक्षय सुख खोई बेसोछो? धिक्कार छे तमने, अरे बेशरमो, तमने काळुं मो लई कनोजमां जतां जरा पण शरम आवशे नहीं ! तमारी स्त्रीओ तमने शुं केहेशे ! कदापि तमारी स्त्रीओ पण तम जेवो निर्लज्ज हशे तो आ संसारना क्षणभंगुर सुखने वास्ते तमने जीवता पाछा आव्या जोई खुशी थशे पण तेओनी साहेलीओ तेमने मेणां देशे के तमारा भरथारो तो रणमांथी पीठ दई आव्या छे त्यारे तेओने केवुं लागशे ! आ वातनो पलभर ख्याल करी जोशो तो तमने जीववा करतां मरवामां फायदो मालम पडशे. पण ते ख्याल एक कोरे मूकी दई जे पाछो हठशे तेने हुं मारे हाथे कापी नाखी कनोजमां जीवता जवा नहीं दउं ए नक्की जाणजो." लाखनसीनुं आवुं बोलवुं सांभळी कनोजनी फोज सामी चढी. लाखनसीए क्रोधमां निडुरराय उपर तरवार ठोकी जेथी ते सातवार घुमी गयो. पण पछी तेणे गुणज कहाडी लाखनसीने ठोक्यो जेथी तेना माथानां हजार कटका थई गया तथा निडुररायने मूर्छा आवी गई. कन्हे भगवानसिंहना सीसमां सांग मारी जेथी ते पड्यो पण कन्ह उपर बाबु कंठेरी, नाराणदास अने नरबद ए त्रण जणे धसी आवी तेने घेरी लीधो. पण कन्हे ए त्रणे जणने पग पकडी पटकी नाख्या. बीजाओने कोईने

संजमराये, कोईने चामुंडराये, अने कोईने चंद्पुंडीरे पूरा कीधा. एम कनोजनी पचासे हजार कुमक काम आवी गई अने चंदेलनी फोजमां पण घणुं नुकसान थई गयुं, जे जोई आल्ह अने उदलें केसरीयां करी ब्रह्माजीतने कह्युं "तमारी उम्मर वर्ष १६ नी छे; जीवतो नर भद्रा पामशे; हाल जीतवानी आशा गई छे माटे तमे तमारा पितापासे कलंजरना किल्लामां जाओ अने अमे हवे मारशुं कां मरशुं ते समाचार सांभळी योग्य भासे ते करजो." ब्रह्माजीत कहे; एम मरवाथी बीने नरकनो अधिकारी थवामां हुं खुशी नथी. कह्युं छे केः—

राजा घर जात जु मरे करे सुरगको भोग ।
दुनियामें जस विस्तरे हसे न दुरीजन लोग ॥
जा धरतींकुं खायकें मरे न जाते कोय ।
अंतकाल नरकही परे जुगमें अपजस होय ॥

माटे हुं कदी भागनार नथी अने तमे जोशो के हुं केवा सपाटा बतावुं छुं. एम कही तेणे क्रोधमां धसारो कीधो. हाथीये हाथी, घोडे घोडा, रथे रथ, अने पायदळे पायदळ अटक्यां जेथी दश दिग्पाळ डोलवा लाग्या अने शेषनाग पण भार झाली शक्यो नहीं एवुं विषम युद्ध थयुं. एक सपाटामां पांच हजार पृथिराजनां अने वीस हजार चंदेलनां माणसो कपाई गयां. संजमराय अने उदल सामसामा थया तेओए गर्जनाथी रणभूमी गजवी मूकी. जाणे नट नाचता होय तेम एक बीजासामे पट्टाना घा करवा लाग्या, उदलने हाथे संजमरायने एक तरवार लागी जेथी तेने मूर्छा आवी गई. थोडी वारे ते मूर्छा उतरी जतां उभो थवा गयो तेटलामां देवकर्णे तेना माथामां गदा मारी तथा शत्रुसाले तीर फेंक्युं जेथी तेनुं माथुं आखुं चीराई जतां ते फरी जमीन उपर पड्यो.

उदले त्यांथी आवी कन्हने एक घाथी मूर्छामां नांख्यो, तथा बीजे घाए पूरो करवामां हतो तेटलामां तो तेनी मददमां कयमाष आवी पोंतो, तेने पण उदले मूर्छामां नांख्यो, पण तेटलामां नन्ह पडीहार चडी आव्यो ते साथे पण उदले झपाटा लेवा मांड्या, पण एकनुं औषध बे; कन्ह अने कयमाषने मूर्छा उतरतां तेओ पण उदल उपर तूटा अने त्रणे मळीने तेनुं मस्तक धडथी जुदुं करी नांख्युं. मस्तक पडतां धड झूझवा मांड्युं जेणे पृथिराजना एक हजार योद्धाओनो संहार करी नांख्यो. चंद बारोट पृथिराजनी तरफनो लखनार हतो पण तेणे आ वखते उदलनी बहु तारीफ करी लख्युं छे के,

तीनुं मिलके मारियो रण जसराज कुमार ।
मारे भर पृथिराजके शिर बिन एक हजार ॥

उदल रणमां पड्यो जोई आल्हनो क्रोध समायो नहीं, माटे तेणे हनुमान वीरनो निद्राप्रयोग साधी पृथिराजना लश्करमां एक बाण फेंक्युं जेथी कयमाष, कन्ह, चंदपुंडीर, पजून कछवाहो, जेत पवार, सलख पवार, तुवर पहाड, भोंहो चंदेल, पीप पडिहार, टांक चाटो, धीर पुंडीर, खेतो खेंगार एटला सामंतो निद्रावश थई गया, जेथी केटलाक योद्धाओ कपाई गया अने केटलाक नासी नासी पृथिराजनी सोडमां भराया. पृथिराज गभरायो अने आ अद्भुत बनावना कारणविषे चंदने पूछ्युं. चंद कहे, आल्हने गोरखनाथे निद्राप्रयोग शीखवेल छे ते एणे आ वखते साध्यो छे. पृथिराज कहे, "आल्हने गोरखनाथ केम मळ्या तथा मंत्र केम आप्यो ते कहे." चंद कहे "एक वखत आल्ह शिकारउपर गयेलो त्यां रस्तो चुकी जतां एक डुंगरउपर नीकळी गयो त्यां गोरखनाथजी बेठा हता तेमने पोताने घेर तेडी लावी बार महिनासुधी बहु सेवा कीधी त्यारे गोरखनाथे तेनी देह अमर करी तथा ए मंत्र आप्यो. आल्हे गो-

रखनाथ साथे जवा पोतानी इच्छा जणावी, पण नाथ कहे उदल जीवे त्यांसुधी तुं जगतमां रहे पछी मारुं ध्यान धरजे एटले हुं दर्शन दई तने तेडी जईश."

पृथिराज कहे "एम होय तो आपणे आल्हसाथे जीतशुं नहीं." चंद कहे "ए प्रयोगसामो आपणे पण प्रयोग करवो पडशे अने सदाशिवना वरदायी आतताई शिवाय आल्हने कोई पूरो पडशे नहीं माटे आतताईने सामो करो." एम कही तेणे देवीनी आराधना करी जेथी काळीका चीस करती रणमां हाजर थई. ए चीसना अवाजथी बधानी निद्रा उडी गई, अने लडाई शरू थई. सामेथी केशवदास आव्यो तेने कन्हे उठावी लीधो. एटले जगनक भाटे आवी कन्हने गदा मारी जेथी कन्ह मूर्छा खाई धरणीए ढळी पड्यो. भाटने कयमाषे तरवार मारी जेथी ते धूमी गयो पण तेणे कयमाषने सांग ठोकी. फरी कयमाषे तेने बीजी तरवार मारी जेथी एनुं माथुं उडी गयुं अने धड झूझ्युं ते पृथिराजनो एक हाथी तथा एक हजार माणस मारी नांखीने पड्युं. आतताई अने आल्ह सामसामा थया तेमां परस्परे घणाक प्रहारो करवाथी एक दावमां बेउ जण मूर्छा खाई पड्या. आल्हने मूर्छामां पडेलो जोईने चंदे पृथिराजने कह्युं के हवे ब्रह्माजीतने जलदीथी मारो नहीं तो आल्ह मूर्छामांथी उठ्या केडे तमथी कांई थशे नहीं. ए उपरथी पृथिराजे आल्हउपर बाण फेंक्युं, ते बचावी ब्रह्माजीते तेनाउपर धसी आवी घणाक हाथ कीधा पण आखर एक घाथी तेनुं माथुं धडथी जुदुं थई गयुं, पण मरते मरते तेणे पृथिराजना खभाउपर जनोई वढनो एवो घा कीधो के जेथी ते अचेत थई मुडदांओना ढगलासाथे पड्यो. एटलामां आल्हने मूर्छा उतरी एटले फरी तेणे गोरखनाथनुं ध्यान करी निद्राप्रयोग फेलाव्यो जेथी घणाक सामंतो निद्रावश थई थया, पण चंद भाट अने रामगुरु प्रोहिते तेने घेर्यो. आल्हे इंद्रनो मंत्र जपी रामगुरूउपर

तरवारनो घा कीधो पण ते हाथी आडो दई छूटी गयो. एटले आल्हे अग्निबाण नांख्युं ते सामे रामगुरुए जळबाण नांख्युं. एम त्रणीक बाथमबाथां थवाथी त्रणे जण थाक्या एटले चंद भाटे देवीनुं ध्यान धर्युं एटले देवीए सिंहवाहिनीना रूपमां दर्शन दीधां. आल्हे गोरखनाथनुं ध्यान करतां ते पण प्रगट थया. नाथे आल्हने कह्युं के ए ब्राह्मण अने भाट जीत्या जशे नहीं. तें खूब क्षत्रीवट राखी, हवे मारां वचनथी तारी देह अमर करी लई मारी साथे चाल. ए सांभळी आल्ह हथियार फेंकी गोरखनाथसाथे चाली नीकळ्यो.

पृथिराज पूरे घाये मुरदांना ढगला साथे पड्यो हतो, तेनां शरीर उपर एक गीधणी आवी आंख कहाडवा लागी पण पृथिराजमां तेने उडाडवानुं सामर्थ्य न हतुं, पण तेनी पासे संजमराय पड्यो हतो ते ए बनाव जोई पोतानां शरीरमांथी मांस कापी गीधणी तरफ फेंकवा लाग्यो; गीधणीए ते मांसनी लालचमां राजानी आंख कहाडवी छोडी दीधी, तेटलांमां तो चंद भाट, रामगुरु इ० आवी पोंता जेणे राजाने समाली लई मलमपटी बांधी. संजमराये मरते मरते पण राजानी आंख बचावी ए कांई एनुं पुन्य थोडुं न हतुं माटे एना बदलामां तेने वास्ते एक विमान आव्युं जे तेने सदेहे वैकुंठमां लई गयुं.

चामुंडराय कलंजर उपर चडी गयो ते परमालने पकडी लाव्यो तथा सात करोडनी लुंट लावी राजा आगळ हाजर कीधी. हवे चामुंडराय चंद अने रामगुरुए मळी रणक्षेत्रमां कोण कोण मुवा अने कोण बच्या तेनो हिसाब कहाडवा मांड्यो तो संजमराय तो सदेहेज वैकुंठ पोंता हता, बाकी कयमाष, कन्ह, पंजून, जेत, नरसंग, जाम निडुरराय, पहाड, चंद पुंडीर, धीर पुंडीर, खेतो खंगार अने गंभीर हाडो एटला रणमां अचेत पड्या हता तेओने रामगुरु अने चंदे संजीवनी मंत्र भणी पाणी छांटी उभा कीधा. परमालने दंडी

छोडी दीधो अने महोबामां पंजून कछवाहाने थाणे बेसारी पृथिराज बाकी बचेलां लश्करसहित दिल्ही वळी आव्यो.

प्रकरण ५ मुं.

राजसूय यज्ञकथा.

वांचनाराओए गयां प्रकरणोमां पृथिराजनां पराक्रमो वांच्यां जेथी पलभर तेओए मनमां एम नक्की कीधुं हशे के ए समयमां भरथखंडने विषे दिल्ही जेवुं शेहेर अने पृथिराजनी बरोबरीनो कोई राजा हशे नहीं. पण ना. ते वखते भरतखंडमां सर्वोपरी शेहेर कनोज हतुं अने जयचंद राठोडनी बरोबरी करनार कोई राजा न हतो. टाड साहेब लखेछे के कनोजनी आसपासनो किल्लो त्रीसथी वधारे माईलना घेरावामां हतो, तेनी वस्ती हाल लंडननी छे तेना करतां पण अधिक हती. प्रमाणमां मात्र एटलुंज केहेवुं बस छे के त्रीस हजार तो फकत तंबोळीओनी दुकानो हती अने तेनां असंख्यात दळ उपरथी ते राजानुं नाम " दळपांगळो " पडयुं हतुं, जेनो अर्थ ए थायछे के एनुं दळ (लश्कर) पांगळुं हतुं एटले के तेनी मोटी संख्याने लीधे तेने चालतां चालतां अटकी रेहेवुं पडतुं हतुं. चंद भाट ए लश्कर एंसी लाखनुं बतावेछे अने कहेछे के ए दरकूच मंजल करतुं एटले के पाछळनो भाग हजी चाल्यो नथी एटलामां आगळनो भाग ठेरवेले मेलाणे जई पहोंचतो हतो.

आ जयचंदे एक दिवस पोतानां बळ अने समृद्धिनो ख्याल कीधो तो पोताने युधिष्ठिर अने रामचंद्रजी जेवो बळवान जाण्यो अने ज्यारे एवडो बळवान त्यारे तेओनी माफक राजसूय यज्ञ करी दुनियामां नाम राखवानुं अभिमान तेना मगजमां भरायुं. माटे देशोदे-

शना छत्रपतिओने साम, दंड अने भयथी वश कीधा, तथा एक लाख भार सोनुं, साठ भार मोती, एक करोड भार रुपुं, बीजी धातुओतो हिसाब वगरनी अने धूप तथा सुगंधीओना तो डुंगरो खडा करी दीधा. ए रीते सर्व सामग्रीओ तैयार करावी यज्ञनो आरंभ कीधो. मारे आ जगोए केहेवुं जोईए के ज्यारे कोई राजा आ यज्ञ करेछे त्यारे बहुज प्रौढ क्रियाओ करवामां आवेछे, अने ते निर्विघ्ने पार उतरेछे तो ते राजा चक्रवर्तीनुं पद धारण करेछे. परंतु एको एक वखते आमांथी माठां परिणामो नीपज्यां छे. ए क्रियामां रसोडांनां वासण मांजनार सुधीनी दरेक नोकरीमां राजपुरुषो जोईए. पांडवो पछी भरथखंड उपर घणा राजाओ थई गया पण कोईए आ मान मेळववानो यत्न कीधो न हतो. विक्रम राजाए पोतानो शक चालु कर्यो तो पण आ राठोड राजाए जे काम उठाव्युं तेनो यत्न करवानी पण तेनी हिम्मत चाली न हती.

जयचंदे आ यज्ञ साथे पोतानी एकनी एक कन्या संयोगताना स्वयंवरनी पण तैयारीओ करी सर्वे देशोना छत्रपतिओने आमंत्रणो मोकल्यां. जयचंदना प्रधान सुमतिए तेने कह्युंके आ कळीयुग ए यज्ञ करवा योग्य नथी. कीर्ति मेळववी होय तो बीजा रस्ता घणा छे. पण तेने मदांध जयचंदे तरछोडी नांखी कह्युं के तुं तो लोभने वश थई एवा नबळा बोल बोलेछ, मारे तो ए काम नक्की करवुं छे. जयचंदनां फरमान मुजब भरथखंडना सर्वे राजाओ हाजर थया तेओने मोतीनो हार परोवी गळामां पेहेरे ते मुजब कनोजमां हाजर थया जोई जयचंद राठोडे तेओने इजत प्रमाणे जुदां जुदां कामो सोप्यां. पण बे मोती अणवींध्यां रही गयां जे ए हारमां परोवायां नहीं. आ मोती चहुवाण पृथिराज अने रावळ समरसी हता. ए हाजर थया नहीं माटे जयचंदे गुस्से थई तेओना उपर दूतो मोकल्या. एक दूत साथे पृथिराजने तेणे कहेवडाव्युं के तुं नोकरीमां असमर्थ

छो तो जमीन शानी खास ! तुं एक फरमानथी हाजर थयो हते तो तारे वास्ते सारी नोकरी टेवी हती पण हवे द्वारपाळनी टेवी छे माटे जलदी चाल अने हाथमां छडी लई द्वारपाळनी नोकरी उपर हाजर था.

दूत दिल्ली आवी प्रथिराजनी सभामां एज बोलो बोल्यो के प्र-थिराजनी आंखो लालचोळ थई गई. पण पोताना गुरुजनोना द-बाणथी ते कांई बोल्यो नहीं. सभा बधी स्तब्ध थई गई. गोवं-दराय गेहेलोते राजाना चेहरा उपरथी जाणी लीधुं के तेने रोकडो जवाब देवा मरजी छे माटे तेणे दूतने जवाब आप्यो के अरे आज कळीयुगमां यज्ञ कोण करेछे. सतयुगमां बळी राजाए कीधो के जेणे कीर्ति वास्ते त्रण लोकनुं दान दीधुं; त्रेतामां रामचंद्रजीए कीधो के जेने घेर कुबेरे सोनानी वृष्टि करी हती; द्वापरमां राजा युधिष्ठिरे कीधो के जेने अर्जुन जेवा भाई अने श्रीकृष्ण जेवा सखा हता. पण तारा राजाने एवडुं शुं छे के पोताना दळ अने द्रव्यमां छकी जई देवता जेवा बोलो बोलेछे. ते जाणेछे के प्रथ्वीमां कोई क्षत्री नथी, पण निर्बीज प्रथ्वी क्यारे पण होती नथी ए नक्की जाणजे. अमे जंगलमां अने कालिंदीने तटे रहेनारा छीए ते तारा राजाने ओळखताए नथी, पण तेने खबर नथी के दिल्हीपती चहुवाण के जेणे केटलीकवार तो बादशाहने बांधी छोडी दीधो अने भोळा भीम जेवाने पण भांगी नाख्यो तेनां धड उपर माथुं छतां चहुवाण सि-वाय कोण यज्ञ करी शके एम छे.

सिंहरूपी सभा जोई दूततो गामडीआओनी सभामांथी विद्वान मंदादरथी चाली नीकळे तेम चाली नीकळ्यो अने ढीले मोढे जयचंदने जई समाचार कह्या. ते सांभळी जयचंदना चेहरा उपर लोही ऊ-भराई आव्युं. ते राती आंखोथी होठ दांत वचे दाबी सभावचमां बोल्यो के, अरे प्रथिराज एवडो बधो शानो मगजमां पवन राखेछे !

जलदी जई तेने पकडी लावो. तरत तेना भाई बालुकाराये ऊठी सलाम कीधी अने पृथिराजने पकडी लाववा बीड्युं ऊठाव्युं. जयचंदे तेनी साथे खुरशानखान अने बंदातमीर नामना जमादारो अने साठ हजार लश्कर आप्युं. पण यज्ञनो दिवस तो नजदीक आव्यो अने तेने पकडी लावतां मुहूर्त्त वही जशे माटे एक सोनानी प्रतिमा बनावी तेना हाथमां सोनानी छडी आपी तेनुं नाम पृथिराज राख्युं अने दरवानने ठेकाणे खडो कीधो.

बालुकाराय चडी गयो ते खोखंद नगरमां पृथिराजनो रस्तो रोकी बेठो के पृथिराज यज्ञ बगाडवा अहींथी जशे तो तेने पकडी लेईश. सोनानी प्रतिमा करी तेने छडीदारने ठेकाणे खडो कीधो छे तथा बालुकाराय खोखंद नगरमां रस्तो रोकी बेठो छे ए वात पृथिराजने काने पडतां तेनुं माथुं फर्युं. तेणे सामंतोनी सभा भरी जयचंदने ए कामनी शिक्षा करवा शुं इलाज लेवो ए सवाल पूछ्यो अने कह्युं के " मारुं अभिमान अने आबरू तो तमारां शिरो उपर छे. में एवडा मोटा बोलो कहाडी बळीआसाथे बाथ भीडी छे ते फक्त तमारा भरोसा उपरज, माटे हवे तेविशे सहुसहुनी अक्कल मुजब सलाह आपो."

गोयंदराय गेहेलोत अने कन्ह चहुवाण बोल्या के " चडाई करी कनोज तोडो." जाम जादव बोल्यो के " एकदम कनोज तोडवी सहेली वात नथी माटे एनां परगणां मारी राड बोलावो." चंद पुंडीर बोल्यो के " कयमाष दाहीमाने पुछो एनी सलाहथी आपणे आगळ पण मोटां मोटां कामो कीधां छे." पृथिराजे कयमाषसामुं जोयुं एटले ते बोल्यो के "क्षत्रीपुत्रनां मोंमांथी वचन नीकळ्युं ते पळे नहीं तो तेने वास्ते मोटी शरमनी वात छे पण ए वचन पाळवा सारु पतंगीआनी माफक दीवामां पडी बळी मरवुं एवी सलाह मने पसंद नथी, जयचंदपासे एंशी लाखनुं लश्कर छे

एटलुंज नहीं पण एनी नोकरीमां हाल भरतखंडना तमाम राजाओ हाजर थयाछे ते उपर चडी जई आपणे मूठीभर माणसो फतेह मेळवीए एवी आशा राखवी फोकट छे. अने ज्यारे फतेह न मेळवीए त्यारे मार्या जईए के पकडाई जईए. अने तेम थाय तो दुश्मननी कीर्तिमां ओर बी वधारो करवानुं कारण बनीए. माटे हुं कहुं तेम करो तो एक पंथ दो काज जेवुं काम थाय. राजसूय यज्ञ वखते ब्राह्मणो मृत्युंजय मंत्र जपेछे जेना प्रतापथी राजानी नवाईमां यज्ञनी पूर्णाहुती सुधी कोई पशु सरखुं पण मरतुं नथी. दैवयोगे कोई जीवनुं मृत्यु थयुं तो तेनुं प्रायश्चित्त राजाने करवुं पडेछे ए वात तमे सर्वे जाणोछो. वळी तमने खबर छे के एवुं कांई काम आपणे जई जयचंदनी नवाईमां करी न शकीये माटे बालुकाराय खोखंद नगरमां रस्तो रोकी बेठो छे तो मारी सलाह ए छे के बालुकाराय साठ हजार लश्करथी पडेलो छे तेने आपणे पूरा पडी शकीशुं, माटे तेउपर जई तेने कापी नांखवो. आपणा पतीना मोंमांथी यज्ञ करवा न देवो एवो बोल नीकळ्यो छे तो बालुकाराय सगो भाई मार्यो गयाथी यज्ञभंग थयो अने आपणुं वचन पळ्युं." आ सलाह राजाने तथा आखी सभाने पसंद पडी अने खोखंद नगर उपर चडी जवानां वाजां वाग्यां तथा सत्तर हजार लश्कर चड्युं. जोगणीओए आशिर्वाद दीधो. गीधो अने समळाओ आदि मांसाहारी पक्षीओ खुशी थयां, महादेव अने काळीकाने वधामणी पहोंची अने अप्सराओ वर वरवा तैयार थईओ. बालुकाराय बत्रीश हजार लश्करथी पृथिराजने सामे आव्यो. घोडे घोडा, हाथीए हाथी, अने पायदले पायदल सामसामे अटक्यां, अने कापाकापी चाली. घणा योद्धाओ कपातां बालुकाराय तरवार खेंची कन्हउपर दोड्यो पण कन्हें तेनी सामी बरछी फेंकी जे तेने आरपार वींधी जतां ते पड्यो. लडाईमां बालुकारायना पांच हजार अने पृथिराजना सा-

तसो योद्धाओ पड्या. अने पृथिराज फतेह करी दिल्ली वळी आव्यो.

बालुकारायना वधना समाचार कनोज पोंचतां जयचंदनी दिलगिरीनो पार रह्यो नहीं. भाई मरतां यज्ञनो तो भंग थयो पण पोतानी दीकरीनो स्वयंवर निर्विघ्ने पार ऊतरे तो पण तेने कंईक संतोष पामवा जेवुं हतुं. ए दीकरी आगळ अप्सरा हती ते एक ऋषीने छळवा जतां तेने शाप मळ्यो हतो के "तुं पृथ्वीनो भार उतारवा जयचंदने घेर जन्म ले, तुं परणीश त्यारे तारा पती अने पिता बेउनां कुळनो नाश थशे." जयचंदनो विचार तेने केहर कंठीर साथे परणाववानो हतो पण ऋषीनो शाप अफळ केम जाय? जो केहर कंठीरसाथे संयोगता परणे तो तो रीझ राजीपे विवाह थई जाय माटे संयोगतानुं दिल केहर कंठीरमां लाग्युं नहीं. अने ज्यारे पितापुत्रीनां मतमां भेद पड्यो त्यारे संयोगता कोने इच्छेछे ते जाणवा सहु आतुर हतां, तेमां तेनी सखीओ वधारे आतुर होय ए तो स्वाभाविकज छे माटे तेओ कुंवरीना पेटमांथी वात कहडाववा तेने केटलेक प्रकारे विरहवेदना वधारती हतीओ. आ वखते वसंत ऋतु हती माटे एक सखीए संयोगतापासे वसंतनुं नीचे मुजब वर्णन कीधुं:—

॥ छंद पद्धरी ॥

मधु ल्हही मधुपहि रितुराज मंत । परस्पर प्रेमसुं पियति कंत ॥
लुंटहंति भौंर सुगंध वास । भिलि चंद कुंद फुल्यो अकास ॥
वन वग मग हलि अंब मोर । शिर ढरहि जानु मनमथ चौंर ॥
चलि सीत मंद सुगंध वात । पावक मनो विहरनि निपात ॥
कुहु कुहु करंत कलयंति जोट । दल मिलहि जानु अनंग कोट ॥
तर पलव पलुह रत नील हल्लि । चल्लही जानु मनमथ पील ॥

उखलही कली चंपक समीप । भजरही भगट कंदर्प दीप ॥
करवत ककूत केतुकी सुकति । विरहंत रत्ति विछुरंत छत्ति ॥
परिरंभ अनिल कदलीक पान। सिर धुनहि सरस मुनि जाति तान॥
झंकलि झमूर अभिराम रंम । नन करहि पियु परदेश गंम ॥
फुल्लिग पलास तजि पत्त रत्त । रणरंग शिशिर जीत्यो वसंत ॥

भावार्थः— कंथ अने कामनी परस्पर प्रेमथी अधरपान करेछे तेम भमराओ पुष्पमां मध चूसेछे तथा सुगंध लुंटेछे. कमळ चंद्रने देखी प्रफुल्लित थायछे; वन वगडामां आंबामोर लटकेछे ते जाणे कामदेव उपर चमर ढळेछे; सीत मंद अने सुगंधी पवन वायछे ते विरहिणीने अभिसमान बाळुं बाळुं करेछे; कोकिलादि पक्षीओ गान करेछे ते जाणे कामदेवनुं क्रोडेक लश्कर चडयुं होय नहीं ! वृक्षनां पत्रो रातां अने लीलां हालेछे ते कामदेवनी सेनाना हाथीनी माफक चालेछे; चंपानी कळीओ खीली छे ते कामदेवना दीवाओ जाग्याछे; केतकीना पत्रो करवतवाळां नीकळ्यां छे ते विरहिणीनी छातीने वेरी नांखवा सारु छे; केळनां पानो धीमे धीमे हालेछे ते पियुनुं परदेश जवुं सांभळी माथुं हलावी हलावी कहेछे के "पियु परदेश गमन करशो मा" अने पानखर ऋतु जवाथी नव पल्लवो राता रंगनां थयांछे ते जाणे वसंते रणसंग्राममां शिशिर ऋतुने जीतीने रणरंग बांध्योछे.

आ वर्णन सांभळी संयोगतानी छातीमां विरहानळ बळतो हतो तेमां घी होमायाथी लाज तथा धीरजनो नाश थई गयो अने एकदम बोली गई के "मारे वास्ते तो आ यज्ञमंडपमां सोनानुं पूतळुं खडुं छे तेमां जीव आवशे त्यारे ए पीडा मटशे माटे त्यांसुधी मारी पासे एवी बळतामां घी होमवा जेवी वात करशो नहीं."

संयोगतानुं पृथिराज तरफ दिल छे ए वात सखीओ जाणी गई-

ओ अने काने काने वात जतां जयचंद सुधी ए वात पहोंची. माटे तेणे घणो शोक कीधो अने पुत्रीने समजाववा दूतीओ मोकलीओ, तेओ तेना मननी वात कडाववा युक्तीथी बोलवा लागीओ.

दूतीः— अहो राजपुत्री ! तारा जेवी आज नसीबदार कोण छे के जेने जयचंद जेवो पिता छे तथा केहर कंठीर जेवो पती प्राप्त थशे.

कन्याः— तमने एवडुं बधुं लांबुं टुंकुं बोली जवा कोणे अधिकार आप्यो छे ? मारे कोणसाथे परणवुं ए काम तमारा हाथमां छे शुं ?

दूतीः— कुंवरी साहेब, एवडां शांनां तपी जाओछो. अमारा हाथमां नहीं पण तमारा पिताना हाथमां तो छे !

कन्याः— नहीं नहीं. पिताजीए ए काम पोताना हाथमां राखवुं हतुं तो स्वयंवरमंडप रचवानी शी जरूर हती ?

दूतीः— त्यारे शुं लोकोमां वात चालेछे के तमारुं दिल प्रथिराज तरफ छे ए वात खरी के ?

कन्याः— गमे तेम हो, ते पूछवा तमारो अधिकार नथी.

दूतीः— ए तो खरुं पण अमारे तमारी हितेच्छुओ दाखल सल्लाह आपवी योग्य छे के केहर कंठीर नहीं तो स्वयंवर मंडपमां तमारां रूप अने कुळमां बरोबरीआ घणाक राजकुंवरो एकठा थया छे तेमांथी कोईने पसंद करो, पण प्रथिराज के जेणे तमारा पितानो यज्ञ बगाडी काकानो वध कीधो तेविषेनो विचार छोडी दो तो सारुं.

संयोगताः— यज्ञभंग के काकाना वध सामुं जोवामां मारो स्वार्थ नथी. मारो स्वार्थ तो मारा बराबर रूप अने पराक्रमवाळो जोडी गोतवामां छे.

दूतीः— बराबर. रूप अने पराक्रममां तो एना जेवा घणाक राजा अने राजकुंवरो बतावीए.

कन्याः— तमारां मनथी तो घणाए हशे पण मारा पिताए क-

लिवर्जित यज्ञ आरंभ्यो तेमां बकरांनां धणनी माफक दोराई आव्या त्यारथीज में तो तेओनुं पराक्रम जोई लीधुं छे.

दूतीः— पण पृथिराजे तमारा पिता सामी कम्मर बांधी छे अने तमारा पितानुं बळ तो तमे जाणोछो के ते मनपर लेशे तो पलवार- मां तेने बांधी केद करी लावशे के वध करी नांखशे त्यारे तमारा शा हाल थशे ?

कन्याः— ए सिंह पकडाय एवो नथी अने दैवयोगे मारो पिता तेनो वध करी शकशे तो मारुं अंतःकरण तेना तरफ निर्मळ छे माटे मने सत चडशे अने हुं कुंवारेज सती थई जगतमां जस कमाई जई स्वर्गनी प्राप्ति पामीश. बीजी बधी बाबतमां हुं मारा मोटेरांओने मान आपुंछुं पण आ बाबतमां तो एम छे के:—

श्लोक.

नमो राजन मंवादे नमो गुरुजन आगरं ।
वरमेकं स्वयं देहि सर्वथा पृथिराजयो ॥

आ छेला बोलो सांभळी दूतीओ पोतानुं कंई चालशे नहीं एम मानी चाली नीकळीओ अने जयचंदने जई कह्युं के ए तलमां तेल नथी माटे बंदोबस्त नहीं राखतो आबरु जती रेहेशे. जयचंदे लमणे हाथ दई केटलोक वखत विचार करी " **दुहिता भली न एक** " ए वचन जोडनार उपर आफरीन कीधी अने संयोगताने गंगाकिनारे एक मेहेल हतो तेमां केद राखी.

प्रकरण ६ ठुं.

" ऊगे ते आथमे अने जन्मे ए मरे " आ ईश्वरी नियम प्रमाणे भरतखंडमां हिंदु राजाओनो सूर्य पूर्ण कळाथी प्रकाशमान हतो तेने लटकवानां अने संपूर्ण युवावस्थानां शरीरमां वृद्धावस्था प्रवेश करे तेनी निशानी दाखल एक बे धोळा वाळ देखाय एवां कांई कांईक चिह्नो आपणे गयां प्रकरणमां जयचंद अने पृथिराज वच्चे ऊठेला अणबनावथी जोयां तेमां वधारा दाखल आ प्रकरणमां मारे चामुंडरायनी केद अने कयमाषनां मरणनी हकीकत दर्शाववी छे. चामुंडरायनां पराक्रमो वांचनारथी छानां नथी अने कयमाष केवो हतो.

॥ छप्पय ॥

जिहि कयमाष सुमंत, खोदी खटुव धन कढ्यो ।
जिहि कयमाष सुमंत, राज चहुवानह चढ्यो ॥
जिहि कयमाष सुमंत, पारि परिहार मुरस्थल ।
जिहि कयमाष सुमंत, म्लेच्छ बध्यो बळ सब्बल ॥
चहु ओर जोर चहुवान नृप, तुरक हिंदु डरपत डरह ।
वाराह वाघ वाराह विच, सुवश सुवास जंगल धरह ॥

भावार्थः—जे कयमाषनी सलाहथी खटुपुरनुं धन काढ्युं, चहुवाणनां राज्यनी चडती कळा थई, मुरस्थलना पडिहारने भांग्यो, म्लेच्छ (गोरी) ने बांध्यो, चारे तरफ हाक बजावी, हिंदु तुरक बेऊने डराव्या, अने वाघनी माफक जंगल वश करी, चारे तरफ सुगंधी फेलावी.

चामुंडराय विषे चंद पुंडीर नामनो सामंत अदेखाई करी पृथिराजना कान भरतो के चामुंडराय रेणशी कुंवर (पृथिराजनो चामुंड-

रायनी बेन दाहीमी राणीने पेटे थएल कुंवर) साथे एटली बधी मी-
ठास राखेछे ते तम साथे छळ करी रेणशी कुमारने राज्य आपवा
चाहेछे, पृथिराज ते वात गणकारतो नहीं पण रोजनी खणखोद
कोईक दिवस पण असर करे. बनाव एवो बन्यो के एक रोज
चामुंडराय पोताना भाणेज रेणशी कुमारने जंगलमां बाणविद्या शि-
खववा तेडी गयो हतो त्यांथी वळतां शेहेरमां बेऊजण आव्या के
तेओने राजानो पाटहाथी नामे "शृंगारहार" मदांध थएलो सामे
मळ्यो. ए हाथी केटलोक वखत थया मस्त थई शाळामांथी सांक-
ळो तोडावी नाठो हतो तथा शेहेरमां केटलीक हवेलीओ तोडी नांखी
हती अने माणसोनुं पण नुकसान कर्युं हतुं. अने खूनमां भरपूर
थयेलो सुंढ उंची करी चामुंडराय अने रेणशी कुमार ऊपर धशी
आव्यो. हाथीथी डरी जई घोडा पाछा वाळी जावा ए वात रज-
पूतपणाने एब लगाडनारी चामुंडरायने जणाई, तेम पाटहाथी जाणी
वळी नीकळतां पण रेणशी कुमारनो जीव जोखममां जोयो माटे तेणे
पोताना घोडाने एडी मारी के घोडो कूद्यो अने पोताना बे पग हा-
थीना दंतुशळ उपर जई खोड्या. चामुंडराये जमणेहाथे तरवार मारी
के हाथीनी सुंढ दंतुसळ सुद्धां कपाई गई अने डाबे हाथे कुंभस्थळ-
मां गदा मारी तेथी कानुडो गोपीओनी मटकी फोडी नांखतो तमांथी
दूध दहीं वेराई जतां तेम लोहीनो प्रवाह चाल्यो जेथी गह्लीमां लो-
हीनी नदी चाली अने हाथी तंमर खाई पड्यो, जेथी आखी गह्ली
बंध थई गई.

हाथी मरायो जोई शेहेरना लोकोनो गभराट बेशी गयो पण चा-
मुंडरायना सामावाळाओने खणखोदमां एक पुष्टी मळी. तेओए
राजाने समजाव्यो के पाट हाथी ऊपर घा करतां जेटली वार लागी
तेटली तम उपर करतां पण लागशे माटे हजु पण चेतो तो सारुं.
आ वात पृथिराजने असर करी गई, तेणे रामगुरु प्रोहितने तेडी ते

साथे बेडीओ आपी कह्युं के आ बेडीओ जई चामुंडरायने पेहेरावी आवो. घणा जणे राजाने ए काम न करवा विनंती करी पण तेना क्रोधायमान चेहेरा सामे वधारे कोईथी कही शकायुं नहीं. रामगुरु प्रोहिते बेडीओ लई जई चामुंडरायने राजानो हुकम संभळाव्यो. चामुंडराय सामे थयो हते तो अलबत राजाने पण विचार पोंचाडते पण तेणे शाम धर्म संभारी ए हुकम कबुल कीधो, पण मारा हाथमां राजा लोढुं नांखेछे तो हवेथी काम पडे हुं हाथमां लोढुं पकडीश नहीं एवुं राजाने कहावी मोकल्युं. पृथिराजे क्रोधना आवेशमां ते कबुल कीधुं अने चामुंडरायने बेडीओ घाली. तेथी लोकोने विचार थयो के कयमाष राजाने विरुद्ध थशे जेथी कांईक पण खराबी थशे पण सौ सामंतो शाम धर्ममां तत्पर हता माटे एवी कांई वात बनी नहीं.

पृथिराजे ए काम करतां कीधुं पण तेथी तेना सामंतोनां मन कंईक ऊंचक दीठां; वळी जयचंद जेवो शत्रु उपर गाजतो हतो, माटे तेणे जाण्युं के दिल्लीमां रहीश तो कोई वखत घेराई जईश. वास्ते अरण्यमां शिकार रमवामां पोतानो वखत कहाडतो हतो अने दरबारमां कामनो भार कयमाषने सोंप्यो हतो. पोते तो कोईक वखत एकले घोडे शेहेरमां आवी चरचा जोई जतो बाकी सघळो भार कयमाषने सोंप्यो हतो.

कयमाष पण शाम धर्ममां पूरो हतो तेथी पृथिराजने कोई रीतनी राज्यनी चिंता रहे एवुं न हतुं. पण भावी प्रबळ छे; जर, जोरु अने जमीन ए त्रण चीजो वास्ते लाखो जीवोनो संहार थयोछे, तेमां पण स्त्री एवी चीज छे के जेने वास्ते मोटां मोटां राज्यो पायमाल थई गयां छे तथा मोटा मोटा मुनिवरोनी तपश्चर्याओ भंग थई गई छे अने इंद्र ब्रह्मा अने सदाशिव जेवा पण चूकी गया छे तो बिचारो कयमाष कोण गणतीमां !

आषाढ महिनो छे; वादळां वेराई आवी घमघोर थई रह्युंछे; वीजळी झबकारा मारेछे; मेघराजा गर्जना करेछे; दादुर अने पपैया टिहु टिहु करी रह्या छे; मोर टहुका करेछे; आकाशमां इंद्रधनुष्य शोभी रह्युं छे; अने जे वखते विरही दंपतीनुं काळजुं करवतीथी वेरी नांखवा कामदेव तैयार थायछे ते वखते कयमाष कांई राज-दरबारी काम वास्ते दरबारमां गएल तेने कर्णाटकीए[1] जोयो के कामदेवे तेनी छाती बाणोथी वींधी नांखी. ए स्त्री गोखमां पोताना नेत्रोमांथी बाणो वरसावती कयमाष सामी ऊभी. कयमाषनी तेनी सामे नजर गई के बाणोए नेत्रद्वाराए तेनी छातीमां प्रवेश करी वींधी नांखी, जेथी थोडीवार ते बेशुद्ध थई गयो पण जरा वारे सावचेत थई घरतरफ गयो. त्यां बिछाना उपर पड्यो पण तेने निद्रा आवी नहीं. तेनी पासे सुतेली पोतानी स्त्री तेने शंखणी जेवी लागी, अने पलंगपर आमथी तेम आलोटतो पड्यो हतो, तेटलामां तो तेने एक स्त्रीए हाक मारी हाथमां चीठी आपी. आ स्त्री कर्णाटकीनी दासी हती अने चीठी कर्णाटकीना हाथनी लखेली हती जेमां तेने पोताने मेहेल बोलाव्यो हतो. कयमाष तो एज दरदथी पीडातो हतो एटलामां दवा आवी मळी. वळी कामांध थएलो एटले बार कोशमां अंधारुं देखी दासी साथे कर्णाटकीना मेहेलमां गयो. विद्वानोए कह्युं छे के "**कामातुराणां न भयं न लज्जा**" ए वात कांई खोटी नथी. कयमाषने शाम धर्म के पृथिराजनो भय बेमांथी कोईए पण रोक्यो नहीं. कर्णाटकीए आमिषादि[2] अनेक प्रकारनां भोजनो अने आसवो[3] तैयार राख्यां हतां, मेहेल सणगारी रोशनी करी हती, गुलाबजळनो छंटकाव करी तथा अगरबतीओ सळगावी मेहेलने सुगंधमय करी मेल्यो हतो, जे-

---

१ पृथिराजनी पासवान हती. २ मांस. ३ दारुओ.

नी वास तेनी पासेना मेहेलवाली राणी इच्छनकुमारीना नाकमां गई. तेणे पोतानी दासी मोकली खबर कढावी के शुं राजा कर्णाटकीने मोहोले आज आवेल छे? दासी खबर लावी के ए तो राजा नहीं पण कयमाष छे.

ईश्वरने करवुं छे अने भावी प्रबळ छे माटे पृथिराज पण आ वखते अरण्यमां मेलाण करी पड्यो हतो तेने कामदेवे सताव्यो. तेथी एकले घोडे मेलाणमांथी नीकळी शेहेरमां आव्यो. घोडो अंतःपुरनी दोढीना एक स्तंभे बांधी राणी इच्छनकुमारीना मेहेलमां दाखल थयो. राणीए पोताना पलंग उपर आव्या अगाऊ कर्णाटकीना मेहेलनी चर्चा जोई आववा राजाने अरज करी, ते मुजब तेणे एक बारीमांथी जोयुं तो उपर बनेलो बनाव जोई तेनुं मगज फरी गयुं. पण कर्णाटकी पासवान हती. ए कांई ऊंचा कुळनी न हती, माटे हाल दरगुजर करी सवारे कांई बंदोबस्त करवानो विचार करी वळी निकळ्यो. पण इच्छनकुमारीपासे जतां तेणे कह्युं के "कयमाष तमारां राज्यनो स्तंभ छे एने राणी सोंपी दई राजी राखशो तोज तमारुं राज्य सारी रीतथी चालशे अने जगतमां पण कीर्ति वधशे. वारु आज कर्णाटकीने सोंपी दीधी अने काल अमारामांथी कोई उपर नजर राखशे तो पण आपशो खरा के"? आ बोलो राजाने वज्र जेवा लाग्या. माटे ते एकदम कमान खेंची चाल्यो. कयमाष अने कर्णाटकी रतिविलास करी सामसामां पलंगपर खुशीमां बेठां एक बीजाने प्यालीओ भरी देतां अने लेतां हतां, तेटलामां कयमाषनी छातीमां बाण वाग्युं ते तेने तथा दिवालने वींधी आरपार नीकळी गयुं. बाण वागतांज कयमाष समजी गयो के ए पृथिराजना हाथनुं छे. ते "राम" एवो शब्द बोली पलंगपर आडो पड्यो. कर्णाटकीए जाण्युं तेने एकदम छातीमां शूळ उपडी आव्युं के शुं माटे तेने खमां खमां करी पवन नांखवा बेठी. पण जरा

वारमां तो लोही धक धक वहेवा मांडयुं अने कयमाषने मूर्छा आवी. कर्णाटकी भेद समजी जतां बीजे बारणेथी नासी जई पृथिराजना तापथी जयजंद शिवाय बीजो कोई मने संघरी शकशे नहीं एम समजी कनोज गई, ज्यां तेणे संयोगतानी मेहेरबानी मेळवी अने तेनी मुख्य दासी थई रही. कयमाष थोडीवार पछी देह छोडी एटले राजाए पोताने हाथे एज मेहेलमां खाड खोदी दफनावी दीधो.

मध्यरात्रे चंद कवीने हरसिद्धि माताए दर्शन दई सदरहु बनावनी हकीकत कही. अने कयमाषनी स्त्रीने पण तेज वखते सत चडयुं. सवार थये पृथिराजे दरीखानुं कीधुं, जेमां तमाम सामंतो अने चंद कवि हाजर थया. चंद कवि पोताने घेरथी दरबारमां जतो हतो त्यारे कयमाषनी स्त्रीए तेने बोलावी वचन माग्युं के तुं खरो वरदाई हो अने सतीनुं सत्य पळावनारो हो, तो मने एक वचन आप. चंदने आगळथीज खबर हती तो पण ते स्त्रीनुं सत जोवा कह्युं, "कबुल छुं; पण शुं वचन?" त्यारे बाई कहे "मारा पतीनुं माथुं आणी आप के ते खोळामां लई हुं सती थाऊं." चंद वचन आपी दरबारमां आव्यो पण पृथिराजना चेहेरानो ताप तेनाथी झाली शकायो नहीं अने जेम तेम मिसल ऊपर जई बेठो. थोडी वारे राजाए सर्वे सामंतो सामुं जोई सवाल कीधो के "दाहीमो क्यां?" कोईने खबर नहीं तेथी कोण कही शके? सर्वे एक बीजा सामुं जोया लाग्या. अंते राजाए चंदने पूछयुं के "तुं वरदाई छो, माटे कांतो देवीनो वर छोडी दे,ने कांतो दाहीमो क्यां छे ते बताव?" चंद कहे, "पण एक वचन मागुंछुं." राजा कहे, "तेम सामुं मने पण एक वचन आपवुं पडशे." एम परस्पर वचनो लई चंदे जगदंबाना प्रतापथी रात्रीनी हकीकत कही दई कयमाषनुं माथुं माग्युं. राजाए ते कहाडी आप्युं अने चंदे ते कयमाषनी स्त्रीने आप्युं

जे खोळामां राखी ते सती थई गई. राजाए पोताना वचनमां चंद-पासे कनोज देखाडवानुं माग्युं.

कयमाष शिक्षाने पात्र तो हतो पण एवो तो शामधर्मी हतो के राजाने तेनां मरणथी घणुं सालवा लाग्युं, अने रात्रदिवस उदास रहेवा लाग्यो. बीजा सामंतो पण आ बनावथी थोडा घणा नाराज थया, पण राजानी दिलगीरी जोई तेओने कयमाषनुं खून विसरी गयुं, अने हरहीले राजा खुशी रहे एवा ईलाजो लेवा लाग्या, अने तेटला वास्ते मृगया रमवानो राजाने चरस वधार्यो. अरण्यमां भमते भमते एक वखत पाणीपत ऊपर जई मेलाण कीधुं. त्यां जियाफत करी सर्वे सामंतो सहित पृथिराज़ आनंदमां बिराजेछे तेटलामां दुर्गाकेदार नामना एक भाटे आवी तेने आशीश दीधी अने चंदसाथे विद्यावाद माग्यो. चंद तैयार थई सभामां बेठो ते वारे केदारे सो घडा मगावी मंत्रना बळे तेमां अग्निनी ज्वाळाओ प्रगट करी; चंदे देवीनी प्रार्थना करी के सोए घडाओ उपर जळधाराओ पडी जेथी अग्नि बूझाई गयो. केदार कहे एक दिवसनां बाळकने बोलावी आपो. चंद कहे, एवडुं बाळकतो आ वखते क्यांथी मळे, पण तेणे घोडानी पूजा करी चंदन पुष्प चडाव्यां के घोडे नीचे मुजब पृथिराजने आशीर्वचन आप्युं.

गाथा.

जिहि सारथ सजि पंथो, जिहि रख्यो सु गर्भ उत्तरया ।
जिहि रख्यो प्रह्लादे, सो कर रखि राज पृथिराजं ॥

भावार्थः—जेणे अर्जुनना सारथीनुं काम कीधुं, जेणे उत्तरा कुमारीनो गर्भ बचाव्यो, तथा जेणे प्रल्हादने राख्यो, ते पृथिराजनुं रक्षण करो. केदारे त्यारे वर्षाऋतु खडी कीधी. मेघपर बादळां छाई आव्यां; विजळीना झबकारा थवा लाग्या; गर्जना संभळाई; अने

ढमठम वरसाद वरसवा लाग्यो. त्यारे चंदे वसंतऋतुनुं आवाहन कीधुं, एटले वादळां वीखेराई गयां; वीजळी अने गर्जना बंध थई गई; अने झाड ऊपर नव पल्लवो फूटी नीकळ्यां. कोकिला शब्द करवा लागी. आंबाने मोर आव्या अने जंगल रळीआमणुं थई गयुं. चंदे केदारने एक पथ्थर बतावी कह्युं के एने पीगळाव. केदारे घणी मेहेनत कीधी पण पीगळ्यो नहीं. पछी चंदे देवीनी स्तुति गाई एटले पथ्थर पाणीना परपोटा जेवो थई गयो, तेमां चंदे पोतानी वींटी नांखी जे पथ्थरना मध्यभागमां जई पडी. फरी केदारने चंदे ते वींटी काढी लेवा कह्युं पण तेथी नीकळी नहीं एटले चंदे कहाडी लीधी.

दुर्गाकेदार कविने राजाए हाथी घोडा आपी तथा क्रोड पसाव करीने विदाय कीधो, एटले ते कवि गिझनी जवा नीकळ्यो. रस्ते चालतां सोनपूर गाम पासे आव्यो त्यां तेणे शाहाबुद्दीननी छावणी पडेली जोई. तेमां जई मीर मोहोबतखानने डेरे उतारो कीधो. सवार थए बादशाहने आशीश दई सभामां बेठो तेटलामां तो एक दूत त्यां आव्यो. तेना अंग ऊपर विभूती चोपडेली; लांबी जटा, कटीमेखळा, तथा मृगचर्म धारण करेलां हतां, तेणे आवी समाचार कह्या के चामुंडरायने बेडी पडी छे; कयमाषने तो राजाए पोताने हाथे मारी नाखेलो छे; हाल ते शिकार खेलवा निकळेलो छे अने पाणीपत ऊपर मेलाण कीधुं छे. केदार कविना पेटमां हजी पृथिराजनुंज लुण हतुं माटे तेनाथी रहेवायुं नहीं अने डेरे आवी पोतानो एक ऊंटी स्वार मोकली पृथिराजने कहावी मोकल्युं के गाफल रहीश मां. पृथिराज समाचार सांभळी तैयार थई रह्यो, एटलामां तो गोरीनुं लश्कर दूरथी देखायुं, एटले तीरोना वरसाद वरस्या. थोडीवारमां भेटाभेट थई गया अने तलवारो नीकळी कापाकापी चाली जेमां पृथिराजना छसो अने गोरीना सात हजार योद्धाओ काम आ-

व्या. तुंवर पहाडे शाहाबुद्दीनने पकडी लीधो अने म्लेच्छोनुं लश्कर विखेराई गयुं. वळी सल्लाह थई जेमां आठ हजार घोडा दंडना दई शाह छूटी गयो.

प्रकरण ७ मुं.

कनोज प्रसंग.

दुःखनुं ओसड दहाडा ते वीत्याथी कयमाषनी वात पृथिराजने विसारे पडी. वळी शाहाबुद्दीन सामी जीत मेळवतां तेनो पोरस वध्यो, माटे संयोगताए एने वरवानुं बिरद लीधुं छे ए सांभळतां तेणे कनोज ऊपर चडाई करवानुं मन कीधुं, पण चडाई करी जतां मरवानीज आशा राखवी. एक एक जण सो सो माणस मारीने पडे एवा पोताना योद्धाओ होय तोपण जयचंदनां लश्कर सामे तेनाथी जीताय नहीं, पण संयोगताना बिरदनी वात तेने वास्ते सापे छछुंदरी गळवा जेवी थई पडी, वास्ते तेणे सामंतोनी सभा भरी ए वातनो सवाल कहाड्यो; सर्वे मते एम ठेर्युं के चडाई करी जीताशे तो नहींज. आपणे जयचंदनो यज्ञ तो बगाडी चुक्या छैए, हवे कन्या हरण करवुं छे एवा काममां तो श्रीकृष्ण जेवा ए पण कपट कीधां छे तो आपणने तेम करवामां खोट नथी माटे एवा कोई इलाजो लेवा. छेल्ले एम ठेर्युं के यज्ञसमये घणाक आबरुदार चारणो अने ब्राह्मणो भेळा थायछे तो चंदे पृथिराजनी वधारेली आबरू प्रमाणे लश्कर साथे लई कनोज जवुं; ए लश्करमां पृथिराजे तथा सामंतोए चंदनी तेनातनां माणसो दाखल जई कनोजमां डेरा देवा पछी समयोचित जे थाय ते खरुं. ए रीते गोठवण करी चंदनी सरदारी तळे अग्यार हजार माणस दील्लीथी नीकळ्यां. जमनां नदी ऊतरी पेले

पार गयां के तेमने एक स्त्री सामी मळी, तेनुं मोढुं हसतुं अने आंख क्रोधवाळी हती; डाबां अंगउपर सोनानां आभरण तथा जमणा हाथमां लोढुं पकडेलुं; अर्धा केश ओळेला अने अर्धा छूट; एक आंखमां अंजन अने बीजी लाल; अर्धां वस्त्र पीलां अने अर्धां रातां. आ तथा बीजां पण शृंगार अने वीर बेऊ रस मिश्रित शुकनो थयां, पण पृथिराजे तो " **अर्थं साधयामि वा देहं पातयामि** " एवो दृढ निश्चय कीधो हतो माटे ते शुकनो तरफ कांई दरकार न करतां एकदम कूच करी कनोज आवी पहोंच्या.

लश्करने शेहेर बहार राखी संकेत मुजब चंद राजा जयचंदना दरबारमां गयो अने साथे पृथिराजने पोतानो पाणीनो चंबु आपी सेवक दाखल लई दरवाजा पासे गयो. त्यां हेजम कछवाहो चोकी करतो हतो तेने कह्युं, " अंदर जई राजाने जाहेर कर के पृथिराजनो दसोंदी चंद भाट यज्ञ ऊपर आवेलो छे ते तमने आशीश देवा आपवा मागे छे." हेजमे अंदर जई जाहेर कर्युं के तरत राजाए पोताना दसोंदीने सामो मूक्यो. दसोंदीए बहार आवी चंदसाथे केटलीएक चर्चा करी छेल्ले कह्युं के दृष्ट वात तो सहु वर्णन करी शके पण अदृष्ट वर्णन कर, त्यारे तुं वरदाई खरो. अने जो एटली तारामां पोंच होयतो जयचंद हाल क्यां बेठो छे तथा शुं करेछे तेनुं वर्णन कर. चंदे देवीनी स्तुति करी जयचंद ते वखते कचेरीमां बिराजेलो ते केवा पोशाकमां कई दिशाए कचेरीमां बेठेलो, जमणी बाजुए क्या क्या सरदारो तथा डावी बाजुए कोण कोण बेठेला, नकीबो केवी रीते उभेला, मुत्सुदीओ कई मिसल उपर बिराजेला, इत्यादि नख शिख वर्णन कर्युं. जे सांभळी दसोंदी दंग थई रह्यो. अने तेनी जयचंद पासे जई घणीज प्रशंसा कीधी. चंद पोताना सेवकसाहित दरबारमां दाखल थयो अने जयचंदने पृथिराज तरफथी कुशळ पूछी आशीश दीधी अने नीचे मुजब जश बोलवा लाग्यो:—

छंद भुजंगी.

जहां आसनं सूर ठठ्ठे सनाहं, जिने क्षत्रि वंशं किए एक राहं;
जिने धर्नि दिक्पाल धर्धर विखंडं, धरे नृप छत्रं दुती कनक दंडं.
जिने हेम पर्वतसे सब ठांहे, जिने एक दिन अठ्ठ सुलतान साहे;
बरं जंपियो सच्च जो चंद चंडं, सुते थप्पियो जाय तिर्हूत पंडं.
जिनं दछिनं देश अप्यो विचारे, तठे ऊतर्यो तुर्त बंधं पहारे;
जहां करनडा हाल दुबान बेध्यो, जिने संधि चालूकके चार खेंघो.
जहां तीन दिन जुद्ध भिरि भूमि डंडं, तहां तोरि तिलंग गोवाल कुंडं;
जिने छंडीओ बंधि इक गुंड जीरा, ग्रहे लीध वैरागरे श्रब हीरा.
जहां गज्जने सूर साहाब साही, तिने मोकल्यो सेव निसुरत भाई;
जहां छोडी बिभीषणे जो मरोरे, तहां रोसके सोस दरिआ हिलारे.
जिने बंधि खुरसान किय मीर बंदा, सु तो राव राठोर विजेपालनंदा;
ईते वंश छत्रीश आवे हकारे, तहां ईक चहुवान पृथिराज टारे.

अर्थ—जेनां आसनने शूराओ वींटी बेठा छे, जेणे क्षत्रिय वंश आखो एक रस्ते चलाव्यो छे, . जेणे धरणी अने दिग्पालने विखेरी नांख्या छे, मोटा मोटा छत्रधारी जेने सोनाना दंड आपेछे, हेम पर्वत जेणे पोताने हस्तक कीधा, जेणे एक दिवसमां आठ सुलताननने पकड्या, तिर्हूत[1] सुधी जेणे पोतानां थाणां बेसार्यां, पर्वत (विंध्याचल) ऊतरी जेणे दक्षिण देश पोतानो कीधो, चालुक्यने शासन कीधुं, कानडा प्रांत लीधो, त्रण दिवस सुधी युद्ध करी जेणे तैलंग अने गोवळकोंड तोड्यां अने हीरानी खाणोनुं परगणुं लीधुं, गजनीपति शाहाबुद्दीन जेणे पोतानी सेवामां निशुरतखान भाईने मोकल्यो छे, तेने

---

1 तिबेट.

पकड्यो; दरीआ हीलोळेछे एवी जे लंका तेना विभीषणनी मरोड जेणे छोडावी; जेणे मीर खुरसानने पकडी केद कीधो, एवो जे तुं विजयपाळनो पुत्र जयचंद ते तारा हंकार्या छत्रीशे वंश अहीं आव्या पण एक चहुवाण पृथिराज वगर.

त्रेवीश चरण सांभळ्यां त्यां सुधीतो जयचंदनुं दिल पोरसानुं गयुं अने मनमां चाह्युं के चंदनुं दारिद्र चूर्णकरी नाखीश, पण छेल्ले चरणे तेनो मनोरथ भांगी उलटो तेने क्रोधायमान कीधो. ते राती आंखो करी क्रोधमां बोल्यो के विधाताए मागण जातने दारिद्र्यज आपेलुं छे ते कोईथी दूर केम थई शके? वळी बोल्यो:-

दोहा.

रतन बुंद बरसे नृपति, हय गय हेम सु हद्द;
लगे न बुंद मंगीत तन, शिरसो छत्र दरिद्र. १
मोही दरिद्र अरु तुच्छ तन, जंगल राज सु हद्द;
वन उजार पशु अन चरन, क्युं दूबरो बरद्द. २

छप्पय.

हंस न्याय दूबरो, मुक्ति लभे न चुगन कहुं;
सिंह न्याय दूबरो, करीय चंपे न कुंभ कहुं;
मृग न्याय दूबरो, नाद बंधियो सुबंधन;
छेल छक्क दूबरो, त्रिया दूबरी मित्त बिन;
आषाढ गाढ बंधन धुरा, कंध न कहुं हर दिया;
कमधज्ज राय ईम उच्चरे, तुं किम दूबरो बरदीया. १

भावार्थ—घोडा हाथी अने सुवर्ण आदि रतननी बुंदथी राजा बरसे पण मागण जात के जेनां शिर उपर दारिद्र्यनुं छत्र छे तेना

शरीरने एक बुंद पण लागे नहीं. जंगलराज (दिल्लि परगणुं) जेमां पशुने चारा वास्ते घणुं वन उजड पडेलुं छे तेमां रहेतां छतां मोटुं दरिद्री अने शरीरमां सूकेलो एवो हे बरदे, तुं दूबळो केम छो?

हंसने मोती न जडे तो, सिंहने हाथीनां कुंभस्थळ न जडे तो, मृग मादमां बंधायो होय तो, छेल स्त्री वगर अने स्त्री पती वगर दूबळी होय ए न्याय छे; पण कमधजराय (जयचंद) कहेछे के आषाढ महीनामां धरती खेडवा सारू कांधे कोईए हळ दीधुं नथी ते छतां हे बरदीआ, तुं दूबळो केम छो?

चंद—

छप्पय.

चढि तुरंग चहुवान, आन फेरीत पर धर;
जासु युद्ध मंडयो, तास मानयो सरवर;
कोय दंत गृही पत्र, कोय गृहि डाल मूल तरु;
कोय दंत तुच्छ त्रंन, गए दश दिशि भाजनि डर;
भुव लोक दिखत अचरज भयो, मानस वर भर मरदीया;
पृथिराज खलनी खधो सु खर,, ईम दूबरो बरदीया. १

भावार्थ—चहुवाणे घोडे चडी पारकी धरतीमां आण फेरवी जे साथे युद्ध मांड्यो तेने बधुं कबुल कराव्युं, तेथी कोईक झाडनां पांदडां दांतमां लई, कोई डाळीओ ने मूळ लई, ने कोई तो तरणां लई दिशो दिशे भागी गया जे देखी पृथ्वीमां अचरज थयुं, मोटा मोटा भडने मरदी नांख्या एवो जे पृथिराज तेना दुश्मनो घास खाई गया, जेथी हुं बरदीओ दूबळो छुं.

---

१ "बरदीआ" आ शब्दमां बे अर्थ रहेला छे; एकतो बळदीयो गोधो. बीजो बिरद बोलनार=भाट. चंदनी ए ओडक हती.

जयचंद—

छप्पय.

पुरे न लग्गी आर, भार लद्धो न पीठ पर;
गरजी धार गिमार, गृही गढी न नथ्थ कर;
भ्रमिन कूप भ्राह्मरी, कबुक सम शेन न रत्तो;
पूंछ धार ललकार, रथ सथान न जुत्तो;
आषाढ मास बरषा समय, कंध न कहुं हर दिया;
जंगल उजार पशु त्रन चरन, क्युं दूबरो बरदीया.

भावार्थ—पुरे आर लागी नथी, पीठ ऊपर भार लाद्यो नथी, गमार हांकनार मळ्यो नथी, नाकमां मजबूत नाथ नाखी नथी, कुवामां जोडी रेंटमां भमाव्यो नथी, लडाईनां गाडांमां कोई वखत जोड्यो नथी, रथमां जोडी पूंछडी मरडी कोईए ललकार्यो नथी, अने आषाढ मासनी वरषा वखते कांधे कोईए हळ नांख्युं नथी छतां उजड जंगलमां पुष्कळ त्रण चरतां चरतां हे बरदीआ, तुं दूबळो केम छो?

चंद—

छप्पय.

तब जंपे कवि चंद, सुनहु जयचंद राज वर;
पुरें आर किम सहे, सहे किम भार पीठ पर;
नथ्थ हथ्थ किम सहे, कूप भ्रामरि किम मंडो;
हय गय शूर धरनी, स्वामि सथ भारथ तंडो;
बरषा समान चहुवान गुन, केई अरी उर हर दीआ;
पृथिराज खलनी खधो सु खर, ईम दूबरो बरदीआ. १
प्रथम नयर नागोर, बंधि शाहिब चरिग त्रन;

गुज्जरवे भर भीम, सीम शोधित सकल वन;
मेवाती मुगल, अब भजी पत्र जु खद्धा;
ठट्टा कर ठीलये, सही स न मूल न लद्धा;
सामंत नाथ हथ्थां सु कही, लरी कई मान मरदीया;
पृथिराज खलनी खधो सु खर, ईम दूबरो बरदीया. २

भावार्थ—त्यारे चंद कवि बोल्यो के, हे जयचंद, सांभळ. पुरे आर, पीठ ऊपर भार, अने नाथ केम सहुं ? कुवाना रेंटमां पण केम फरुं ? हाथी अने घोडाओनी स्वारीथी स्वामी साथे जई केटलां एक भारत जीत्यो छुं, चहुवाणनो गुणतो बरसाद समान छे तेना प्रतापथी कईक दुश्मननी छाती ऊपर हळ खेड्यां छे पण पृथिराजना दुश्मनो घास खाई गया तेथी बरदीयो दूबळो छे.

प्रथम नागोरमां शाहाबुद्दीनने बांध्यो, ते तरणां चरी गयो; गुजरातनो बहादुर भीम आखी सीम शोधी खाई गयो; मेवाती मुगल बधां पांदडां खाई गयो; बीजाओने मूळीआं पण हाथ आव्यां नहीं; सामंत नाथ (पृथिराज)ने प्रतापे लडाईमां कईकनां मान भंग करी नाख्यां छे, पण पृथिराजना दुश्मनो घास खाई गया जेथी बरदीओ दूबळो छे."

पोताना दसोंदीए चंदना वरदाईपणानी वात कहेली तथा हाल पोताना मों ऊपर हाजर जवाब आप्या ते सांभळी जयचंद मनमां तो नाराज पण मोढे खुशखुश थई गयो. तेणे चंदने आदरमान सारी रीते आप्युं तथा परस्पर वातो करवा लाग्या:—

जयचंद—वारु चंद! तारा जेवा वरदाई धर्मशीळ अने दीर्घदृष्टीवाळा सलाहकारो पृथिराज पासे छे ते छतां तेणे विनाकारण मारी साथे शा वास्ते वेर खडुं कीधुं ? एना नाना अने मारा पिता वच्चे दिनपर दिन प्रेम वधतो जतो हतो अने जेम जेम अनंगपाळ मारा

पितानी सेवा बजावतो तेम तेम अमे तेनी कदर जाणता हता; सोमेश्वर दिल्हीमां परणवा आव्यो त्यारे अनंगपाळनें अमे केटलीक पैसानी मदद कीधी हती; वळी अनंगपाळे अमने पूछ्या वगर पोतानी मरजीथी पृथिराजने दत्तक लीधो त्यारे अमे हरकत लीधी होत तो लई शकत, पण तेनी नोकरीनी कदर जाणी अमे दर गुजर कीधुं हतुं; आ बधी वातनो ख्याल एक कोरे मूकी दई आज मारा हुकममां हिंदु मुसलमान बधा हाजर छे ए बळनो पण ख्याल न करी तेणे विना कारणे मारो यज्ञ भंग करी मारा भाईनो वध कीधो, तो पण में जाण्युं के हिंदुवाण पातळी पडशे माटे हिंदु जाणी में एने छोडी दीधो. पण एणे अधर्मी थई मारो यज्ञ केम बगाड्यो ते कहे !

चंद—एने अधर्मी समजवामां आपनी भूल छे; आपना पिता अने अनंगपाळ वच्चे प्रीति हती तेम पृथिराजे पण आपनी परपूठे घणी सेवा बजावी छे. आप दक्षिण ऊपर चडी गया हता त्यारे गोरी कनोज उपर चडी आव्यो हतो ते वखते पृथिराजे आडा हाथ दीधा न होत तो तमे दक्षिणमांज रहेत अने कनोजनो धणी शाहाबुद्दीन थई बेसत, ए नोकरी बजावी तमने पाड पण जणाव्यो छे ? पण आ कलियुगवर्जित यज्ञ तमे करवा मांड्यो ए वात पृथिराजने गमी नहीं. कह्युं छे के—

श्लोक.

अश्वमेधो गवालंबं संन्यासः पललं पितुः ।
देवरेण सुतोत्पत्तिः कलौ पंच विवर्जयेत् ॥

अर्थ— अश्वमेध यज्ञ, गवालंब (वर कन्याने परणती वखत गायना चामडां उपर असल बेसारता ते), संन्यास, पित्रोने मांसना पिंड आपवा ते तथा धणी मरीगया केडे विधवा पोताना देर साथे

चाली पुत्र उत्पन्न करती अर्थात् देरवटुं, ए पांच बाबतो कळी युगमां वर्जित छे.

आ वचन उपर पग दई तमे यज्ञनो आरंभ कीधो ए वात पृथिराजने अधर्मनी लागवाथी तेने ए हरकत करवी पडी.

जयचंद—तमे कह्युं के हुं दक्षिणमां दिग्विजय करवा गयो हतो त्यारे शाहाबुद्दीन कनोज उपर चडी आव्यो हतो अने पृथिराजे तेने वाळ्यो हतो, पण ए वातनी मने खबर नथी माटे ते शी रीते बन्युं ते कहो.

चंद—आप जाणोछो के गोरीनी केटलीक मुदत थया हिंदुस्तान उपर आंख छे, तेने वास्ते केटलीक वखत पृथिराज सामे चडी आव्यो हतो पण बधी वार शिकस्त खाई वळी गयो हतो. हजी पण तेना छुपा जासुसो आपणा नगरमां फरेछे. आप दक्षिण उपर चड्या ए खबर जासुसनी मारफते तेने पहोंचतां कनोज रेढी देखी तेणे चढाई कीधी; रस्तामां कुंदनपुरना वाघेला रायसंगे झपाझपी कीधी, जेमां त्रणसो हिंदुओ अने पांचसो मुसलमानो पड्या. पण ए त्रणसो हिंदुओ साथे रायसंग काम आवी जतां तुर्कोनी फतेह थई अने तेओए नयर पुर लुंटयुं. आ वखत पृथिराज नागोरमां अने कयमाष खटुवपुरमां हतो. पृथिराजने खबर थतां तेणे जाण्युं के जयचंद घेर नथी अने कनोज गोरीने कबज थई गई तो हींदुवाण पातळी पडी जशे माटे तेणे कयमाषने बोलावी रस्तामां गोरी साथे मुकाबलो कर्यो जेमां आठ हजार पठाणो पड्या. मुसलमानोनो पग छूट्यो अने शाह पाणी वगरना माछलांनी पेठे एकलो पडी रह्यो. तेने चंद पुंडीरे पकडी तेनी छावणी लूंटी अने आठ हजार घोडा दंड लई तेने छोडी मूक्यो.

जयचंद—पृथिराजनी तें एटली बधी तारीफ करी तेथी हुं खुशी थयो छुं, पण तुं कहे के ते केवो छे अने मारी कचेरीमां आ-

टला मुगटबंध राजाओ बेठा छे तेमांना कोईना अणसारने ते मळतो आवेछे ?

चंद—(भाटनी बिरद बोलवानी रीते पोताना सेवकना वेषमां आवेलो पृथिराज पीठमां ऊभो हतो ते तरफ हाथ ऊंचा नीचा करीने).—

छप्पय.

बत्तीश लच्छन सहित, बरस छत्तीश मास छह;
ईम दुरजन संग्रहे, राह जिम सूर चंद ग्रह;
ईक छुटहि महिदान, ईक छुटही भरि दंडहि;
ईक ग्रहहि गिरि कंद, ईक अनुसरहि चरन ग्रहि;
चहुवान चतुर सब विध इहे, हिंदुवान सब हथ्थ जिहि;
ईम जंपे चंद वरदाय वर, पृथिराज उनिहार इही.

भावार्थ—बत्रीश लक्षणसहित, छत्रीश वर्ष अने छ मासनी अवस्थामां छे, सूर्य अने चंद्रने राहु ग्रहे एम दुर्जनने ग्रही लेछे; कोई जमीन आपीने छूटी जायछे, कोई दंड दईने, कोई पर्वत अने गुफाओमां नासी जईने छूटेछे, अने कोई चरण पकडी शरण आवेछे, एम बधी रीते चतुर चहुवाण जेने हाथ आखी हिंदुवाण छे ते पृथिराज एवे अणसारे छे (एम कही झारीबरदार तरफ हाथ कीधो).

वळी "इसो" आ शब्द बोलती वखत वारंवार पाछळ हाथ करी बोलवा लाग्यो के:—

"इसो" राज पृथिराज, जिसो गोकुलमें कानह;
"इसो" राज पृथिराज, जिसो हथ्थह भीमकह;
"इसो" राज पृथिराज, जिसो अहंकारी रावन;
"इसो" राज पृथिराज, राम रावन संतावन;

वरस तीस छह अग्गरो, लछन बत्तीस संजुत भन;
इम जंपे चंद वरदाय वर, पृथिराज उनिहार इन;

भावार्थ सुगम छे.

चंदे तो जयचंदने ठगवा एवा अणसारा कीधा, पण जयचंद चालाक राजा हतो तेने चंबुवाळामां वेहेम आवी गयो. वळी तेणे तेना सामुं जोयुं तो तेनी आंखनुं तेज पोताथी झलायुं नहीं अने एक ठेकाणे बे सिंह भेळा थया होय एवो वीर रस सभामां छाई रह्यो. जयचंदे मनमां धार्युं के किरतारे पृथिराजने बांधीने मने आप्यो होय एवी रीते हाल आवेलो छे माटे हुकम करूं के तेने पकडी ले, पण वळी तेने अंदेशो उत्पन्न थयो के ए सख्स पृथिराज न होय तो जगतमां मारी हांसी थाय के पृथिराजने तो पकडी शकातो नथी, बाकी तेनां नामथी चंबुवाळाने पकडी संतोष पामेछे. तेटलामां तेने वधारे खात्री करी लेवा एक बाबत सूझी आवी के कर्णाटकी पृथिराजना मेहेलमांथी नासी आवीछे ते एने ओळखेछे. वळी ते एवुं गुमान राखेछे के जगतमां मरदतो पृथिराजज छे, बीजाओने तो हुं स्त्रीओ देखुंछुं, अने ए गुमानमां ते माथां उपर कोई पुरुषने जोई साडी ओढती नथी. जो आ चंबुवाळाने जोई ते माथे ओढशे तो मारे तेने जरूर पकडी लेवो एम धारी तेणे कर्णाटकीने सभामां बोलावी. कर्णाटकीए दूरथकीज पृथिराजने दीठो माटे तेणे माथे ओढ्युं. चंदे जाण्युं के घर गयुं माटे तेणे कर्णाटकीने आंखना ईसारामां समजावी के हाल माथे ओढवाजेवुं नथी; कयमाष जेवा प्रधानने मरावी नाखी अंही पण वेर लेवा आवी छो शुं ? कर्णाटकी चालाक स्त्री हती ते भेद तरत समजी गई अने माथेथी ऊतारी नाख्युं. पण तेणे ओढीने ऊतारी नांख्युं तेथी वात शकमां पडी गई. जयचंदे ते नक्की करवा कर्णाटकीने पूछ्युं के " तुं हंमेश माथुं खुल्लुं

राखेछे अने कहेछे के पृथिराज शिवाय कोईने हुं पुरुष जोती नथी, तो हाल तें माथुं शा वास्ते ढांक्युं, शुं तें पृथिराजने जोयो? " कर्णाटकीए आ ठेकाणे स्त्रीचरित्र खेली जवाब आप्यो के, " हा, ए वात खरी छे. पृथिराज शिवाय कोईने जोई हुं माथे ओढती नथी, पण आ चंद अने पृथिराजनुं मन एक छे माटे एने जोई में एटलो विवेक कीधो. जो पृथिराजने जोयो हते तो तो ओढीज राखते, पण आ चंद छे माटे ओढीने उतारी नांख्युं. "

आ वखते, सभामां नवे रस जामी रह्या हताः—

भय अद्भुत कमधज्ज, हास्य चहुवान उपन्नो;
करुना दिसी संभरीय, चंद वर रुद्र निपन्नो;
बीभत्स कायर मनह, वीर भट सुभट विराजे;
गोख बाल तहां जंखि, द्रिग्ग शृंगार सु साजे;
उपजि भयानक दिखि अरि, लोह लहर बज्जन दुसर;
मंगाइ पान पहु पंगने, दीन चंद मन शांति कर;.

भावार्थ—पृथिराजने जोई कमधज (जयचंद) ने अद्भुत रस ऊपनो; कर्णाटकीनी चतुराई जोई पृथिराजने हास्य; केटलाकने करुणा आवी के आवो वीर कांई हाथ बताव्या वगर पकडाई जशे; चंदने रुद्र, कायरोने बीभत्स, शूराओने वीर, गोखमां बेठेली कन्या(संयोगता)ने शृंगार, केटलाकने भयानक अने जयचंदे पान मंगावी चंदने चंबुवाळा सहित रजा आपी त्यारे बधाने शांति थई.

जयचंदनो शक साबीत थयो होत तो तो पृथिराजनी मनकी मनमां रही जात, पण कर्णाटकीनां स्त्रीचरित्रथी तेना उपर आवेलुं वादळ उतरी गयुं. हवे तो अणीनुं चूक्युं सो वर्ष जीवे. आगळ शुं थयुं ते वांचनार हवे जोशे.

चंदने विदाय करी सोजतनो राजा रावण के जेने जयचंदे कोटवाली सोंपी हती तेने हुकम कीधो के शेहेरनी पश्चिम दिशाए मखमलना तंबुओ खोडेला छे त्यां चंदने तेना रसालासहित ऊतारो आपवो तथा सायर खर्च पूरुं पाडवुं. ते मुजब रावणे बधो बंदोबस्त कीधो. चंदे पोताना डेरानी आसपास पोतानो पेहेरो खडो करी दीधो अने हुकम वगर अजाण्या माणसने आववा न देवा सख्त मनाई कीधी, तथा अंदर गोठवण करी के अजाण्यो माणस आवे त्यारे चंदे ढोरणी ऊपर बेसवुं अने पृथिराजे बीजा सामंतोनी पेठे मिसलमां बेसवुं. अने खानगीमां पृथिराजे ढोरणी उपर अने चंदे पोतानी मिसल उपर बेसवुं.

जयचंदे सुमति प्रधान अने प्रोहित श्रीकंठ साथे चंद वास्ते मेमानी मोकली. तेओ ऊतारामां दाखल थया के पृथिराजे ढोरणी छोडी चंदने आपी. चंदे उभा थई तेओ साथे हाथ मेळवी खबर अंतर पूछी मेमानीनी चीजो रखावी थाळोमां बे बे मोहोर राखी पाछा आप्या, अने प्रधान तथा प्रोहितने पान बीडां आपी विदाय कीधा. तेटलांमां तो स्त्रीओनुं एक टोळुं जाणे साक्षात् कामदेवनुं लश्कर होय नहीं एवुं पोताना ऊतारामां आवतुं जोयुं. ते कुल स्त्रीओ सोळ सोळ वर्षनी उम्मरनी एकसरखां कदनी, पोशाकमां सर्वेने पीरोजा रंगना मलमलना मोटी घेरोवाळा जरीनी फीतो लगावेला लेंगा, राती कीनखापनी चोळीओ, अने गुलाबी रंगनी फीतोवाळी ओढणीओ, घरेणांमां कपाळमां सोनानी आडो, कानमां कर्णफूलो, नाकमां नकवेसर, कोटमां मोतीनी माळाओ, हाथमां जडाउ कंकण अने बाजुबंधो, तथा पगमां रूपांनां जेवर सांकळां अने कडीओ, ए रीते ते स्त्रीओए एक सरखो पोशाक अने घरेणां पेहेर्यां हतां. तेओना हाथमां सोनाना थाळो हता, ते उपर कीनखापना सोनाना झुमखावाळा रुमालो ढांकेला हता. ए थाळो मेवा

अने मीठाईओथी भरेला हता तथा केटलाकमां सोनामोहोरो, मोतीनी माळाओ, कीनखापनां थानो इ० पोशाकी सामान हतो. आ स्त्रीओनुं टोळुं जोई चंदनो रसालो तो दिग्मूढ थई गयो. केटलाको तो तेओने अप्सराओ समजी मूर्छा खाई पडी गया. पण एक हिम्मतवान सख्से तेओमांनी मुख्यने पूछयुं के "तमे कोण छो अने श्या वास्ते अंही आवीओछो ?" तेने जवाब मळ्यो के अमे जयचंदनां अंतःपुरनी अने राणी जुन्हाईनी[1] दासीओ छईए तथा राणी साहेबनी तरफथी चंद वरदाईने मेमानी आपवा आवीओ छईए, त्यारे तेओने धीरज आवी. अने चंदने पूछी तेओने अंदर जवा हुकम दीधो. मुख्य दासीए राणी साहेब तरफथी चंदने आशीस फरमावी मेमानी नजर करी, एटले माणसोए थाळो ठलवी लई पांच पांच मोहोरो मांहे नांखी पाछा आप्या अने चंदे राणीसाहेबना विवेकनी केटलीक तारीफ करी दासी साथे आशीर्वाद कहावी मूक्यो.

जयचंदे चंदनी सरभरामां माणसो सोप्यां हतां तेओने कही राख्युं हतुं के आ साथमां पृथिराज छे एवो मने शक छे माटे तेनी तजवीज राखजो. आ लोकोए घणुं गुप्त राख्युं हतुं पण जयचंदनो एक सेवक पृथिराजने ढोरणी उपर अने चंदने नीचे बेठेलो जोई गयो हतो तेणे वात करतां जयचंदने नक्की थयुं अने पृथिराजने पकडवानो तेणे दृढ निश्चय कीधो. तो पण एक वखत पोते जई नक्की करी आववा चंदने उतारे गयो. चंद तेने उंचे आसने बेसारी पोते नीचे बेठो. जयचंदना विवेकनी तथा बीजी आडी अवळी केटलीक वातो चलावी चंदे पृथिराजने कह्युं के राजाधिराजने पान आपो. पृथिराने पांच आंगळांमां पकडी दान आपवानी रीते जयचंदने

---

1 सिंहलद्वीपनी पद्मिनी हती जेने पेटे संयोगता जन्मी हती.

बीडुं आपवा मांडयुं. राजाने बीडुं आपवानी रीत ए छे के हथे-ळीमां राखी आगळ धरवुं, पण पृथिराज महा अभिमानी ते ए रीते आपी पोतानुं हलकुं केम केहेवरावे ? तेम जयचंद पण एवी रीते ले नहीं, तेथी तकरार थई पडी. एटलामां चंद बोल्यो के:

तुलसीयं विप्रहस्तेषु विभूतीं वरयोगिनां ।
तंबोलं चंदहस्तेषु त्रयो दान सु आदरं ॥

जेम विप्रना हाथनी तुळसी अने योगीना हाथनी विभूतीने मान अपायछे तेम चंदनां तंबोळने आदर आपवो जोईए.

तंबोळ आपनार तो सेवक छे पण तंबोळ भाटना घरनुं छे माटे ते लेवामां अडचण नथी एम धारी जयचंदे हाथ धर्यो पण ते सेवके एटला जोरथी तेनी हथेळीमां पान मूक्युं के जयचंदनुं कांडुं खडी जवामां थोडीकज वार रही अने वज्रनो घा लाग्यो होय एवुं दूखवा मांडयुं. जयचंदने हवे नक्की थयुं के एज पृथिराज छे, माटे घेर जई तेओ उपर घेरो मोकली पकडी लेवानो निश्चय करी त्यांथी वळी नीकळ्यो. पाछळथी तंबुमां नीचे मुजब वातो चाली.—

पृथिराज—मे जयचंदनी सभा जोई तथा बीजी वार तेना सा-मंतो सहित तेने अहीं जोयो पण जेटलो दमाम आपणा धारवामां हतो एटलुं तो में कांई दीठुं नहीं.

चंद— खाली फुलाओ छो शुं. हजी तो तेनी सभामां मारो चंबु पकडीने जई शक्या हता ?

पृथिराज—त्यारे तारे एम जोवुं होय तो हुं काल प्रगट थई राजानो वेष धारण करूंछुं. पछी जोई लेजे सपाटा. तारीज छाती धक धक धुजवा लागशे.

कन्ह—अरे राजाधिराज, अने चंद! आ शुं वातो मांडी छे. (चं-

दने) तुं तो भाट भाई छो आशीस दई छुटी जईश पण शूराओनां शीशो पडोपड तूटशे.

एवी वातो चालेछे तेटलामांतो नगारांना अवाजो, घोडाओना खोंखारा, शूराओनी हाको, अने पकडो पकडो ए शब्दो काने पड्या, अने जोयछे तो छावणीनी आसपास घेरो लागी गयो.

महोबानी लडाईमां संजमराय सदेहे स्वर्गे गयो हतो त्यारे केटलाकोए बूम उडाडी हती के संजमरायतो लडाईमांथी नासी गयो हतो वास्ते तेना दीकरा लंगरीराये पृथिराज पासे वचन माग्युं हतुं के हवे लडाईनुं काम पडे पेहेलो मने हुकम करजो: हुं जो नासीश तो मारो पिता पण नासी गया हता. आज काम पड्युं माटे लंगरीराये आवी सलाम करी अने युद्धमां जवा रजा मांगी. पृथिराजे तेने हुकम आप्यो अने छावणीमां पण नगारांना अवाजो थया अने लंगरीराय बे हजार घोडांथी चड्यो. सामे रावण कोटवाल त्रण लाख लश्करथी आव्यो हतो तेओ वचे कापाकापी चाली. पहोर दिवस चडे युद्ध शरु थयुं अने त्रीजो पोहोर थयो तेटलामांतो जयचंदनां बे लाख माणसो रणमां पड्यां. लंगरीरायनां पण घणां खरां खूटी गयां पण जयचंदनां माणसोनो बहु घाण वळी गयो, अने लंगरीराय उपर तीरोना वरसादे कांई असर करी नहीं माटे किल्ला उपरनी किलकिला तोप छोडी. तोप देवीनुं रूप छे अने लंगरीराय देवीनो उपासक हतो माटे ते उपर ते छूटी नहीं. त्रण वखत कान चाटी गई त्यारे कांईक कारण छे एम समजी जयचंदे तेने एक पाडो भक्ष आप्यो, पण कांई थयुं नहीं एटले बीजो अने एम एक पछी एक छ पाडा चडाव्या, त्यारे ते छूटी जेथी लंगरीराय पड्यो. पण एटला वखतमां तो जयचंदनां एक लाख बीजां पण माणसो खपी गयां अने पृथिराज तो पकडायो नहीं माटे जयचंदे पंडे चडवानो ठेराव कीधो, अने वीस लाख घोडाओ उपर पाखर पड्यां,

जेथी दश दिग्पाळ डोलवा लाग्या; शेषनागथी पण भार झलायो नहीं; त्राहे त्राहे थई रही अने जगतनो प्रलय आव्यो एम सर्वेने जणायुं. स्वर्गमांथी अप्सराओ टोळेटोळां मळी विमानमां बेसी तथा हाथमां वरमाळाओ लई मृत्युलोक तरफ आवीओ. गोरो अने काळो भैरव तथा जोगणीओ तो वेहेलांज हाजर थयां हतां. गीधो अने कागडाओने तो उजाणी मळी हती, पण हजी तृप्त थयां न हतां. काळिका माता हजी रुधिरपानथी धरायां न हतां; तेओने हजी घणुं लोही मळवानुं छे माटे सहु आनंदमां फरतां हतां. कनोजमां नगाराना अवाजो अने सिंधुडा राग आडे कान पड्युं संभळातुं न हतुं. एम चारे दिशाए वीर रस छाई रह्यो हतो, पण शेहेरनी दक्षिण तरफ शृंगार रसनो एक देखाव जोवा लायक हतो.

एक आरसना मेहेलना गोखमां एक पंदर वर्षनी अवस्थानी महारूपवती जेने परमेश्वरे नवरे वखते घडेली तथा अप्सराओने पण लजवी नांखे एवी एक स्त्री ऊभी हती. तेना अंगमां यौवनमद अने प्रेममद परिपूर्ण व्यापी छलकाई जतो हतो. तेनां सर्वांगे सौंदर्य अने माधुर्य रमी रहेलां हतां. तेनां अंग उपर राती चीनाईनो मोटी घेरवाळो जरीनी फीतो लगावेलो लेंगो, आस्मानी रंगनी अतलसनुं फीतोवाळुं कडीयुं, अने फुल गुलाबी रंगनी मलमली ओढणी हती. रंगाराए ए ओढणी रंगवामां घणीक काबेलीयत वापरी हती पण ते स्त्रीना गुलाबी गाल अने परवाळां जेवा होठोना कुदरती रंग आ मनुष्यकृत रंगने हसी कहाडता हता. तेनां गळांमां मोतीनी माळा, हाथमां लीलमनां कंकण अने पगमां जडाव जेवर सिवाय कांई घरेणुं न हतुं. चेहेरा उपर आंखमां अंजन अने हडपची उपर एक काळुं त्राजवुं ए बे घरेणां एटले दरज्जे बस हतां के ते उपरांत नाक के काननुं घरेणुं चेहेराने दीपाववाने बदले गुलाबी चामडीने ढांकी दई कांतीमां घटारो बताव्या शिवाय कोई

रीतनी शोभा आपत नहीं. एवी ते स्त्री एक बाबत उपर एवी तो लीन थई गई हती के आंखनुं पलक पण मारती न हती. आ अवस्थामां ए स्त्रीने जोई कोइक एम ख्याल लावे के मयदानवे जळने ठेकाणे थळ अने थळने ठेकाणे जळ मालम पडे एवो पांडवो वास्ते मेहेल बनाव्यो हतो जे जोई दुर्योधन ठगाई गयो हतो, तेम आ पण कांई कामशास्त्रमां कुशळ कारीगरे माणसोने ठगवाने वास्ते ज्ञातयौवना मुग्धा नायकानुं काष्ठ के पाषाणनुं पूतळुं खडुं करी राख्युं हशे एवी ते मालम पडती हती. पण खरुं जोतां तेम न हतुं, एतो खरेखर पंचतत्वनी सजीवन पूतळी हती. गंगानदीना किनारा ऊपर एक स्वार घोडाने पाणी पातो हतो ते ऊपर तेनी नजर लागी हती. ए घोडेस्वारनां अंग ऊपर मलमलनुं चोबगलुं अंगरखुं, माथे गुलाबी रंगनी हिंदुस्थानी पाघडी, पगमां उरेबदार इजार, गळामां एक रुद्राक्षनी तथा बीजी मोतीनी माळा, अने हाथमां एक हीरानी वींटी सिवाय कांई घरेणुं न हतुं. जमणे खभे कमान तथा डाबे पडखे तरवार लटकावेली हती तथा पीठपर ढाल अने तीरोनुं भाथुं ए बांधेलां हतां. एम दरेक वाते ते सादा पोशाकमां हतो, पण मलमलनां अंगरखांमांथी जे तेनी गुलाबी रंगनी काया दीपी नीकळती तेनी तथा चेहेरानी कांती जोतां ते साक्षात् कामदेवनोज अवतार होय एवो दीसतो हतो. पेली स्त्री तेना तरफ जोतां जोतां एटली तो लीन थई गई हती के आंखनुं पलक पण मारवुं भूली गई हती. तेनां रुंवे रुवां खडां थई गयां हतां, तेनी छाती धडकवा लागी हती, स्वर भंग थई गयो हतो, अने आखां अंगनी रगोमां काममिश्रित लोही वेहेतुं हतुं. ते बिचारीनां मनमां हतुं के घोडो पाणी पी लेशे के मारुं आ दर्शनसुख जतुं रहेशे, पण तेटलांमां घोडानी केशवाळीमांथी एक मोती तुटीने पाणीमां पड्युं जेथी माछलांओ कांई भक्ष जाणी उछळी उंचां आव्यां, जे जोई स्वारने

गमत थई माटे ते पोताने हाथे तोडी तोडीने मोतीओ फेंकवा लाग्यो अने माछलांओ गमत करवा लाग्यां. तेमां घडी एक नीकळी गई पण केशवाळीनां मोती खूट्यां; ए खूटतां ते गळांनी माळा तोडी तेमांनां मोती फेंकवा लाग्यो. आ स्त्री तथा घोडेस्वार कोण हतां ते विशे वांचनारे अटकल तो बांधी हशे, तो पण मारे जणाववा जरूर छे के ए स्त्री संयोगता अने स्वार पृथिराज हतो. संयोगता ए वखते वीरनादो सांभळी लडाईनो तमासो जोवा अगासीउपर चडती हती, पण स्वारने जोई गोखमांज उभी रही हती, अने पृथिराज लंगरीराये युद्ध मांड्युं अने दक्षिण तरफनो घेरो तोड्यो त्यारे पोताना सामंतोने शेहेर जोवायुं नहीं माटे ते जोई आवुं एम कही दक्षिणतरफथी नीकळी जई आखुं शेहेर फरी वळ्यो हतो, अने घोडाने पाणी पाई मेलाणमां जवा विचार राखतो हतो, पण हाल ते मीन चरित्रमां एटलो तो लपटाई गयो हतो के तेना उपर चडी आवेलुं वादळ ते वीसरी गयो हतो.

कर्णाटकी जे आ वखते संयोगतानी हजूरमां ऊभी हती तेणे संयोगताने कामदेवनां बाणोथी घायल थई गयेली जोई पुछ्युं: " बाई साहेब ! आपणे युद्ध जोवा सारु ऊपर चडतां हतां अने तमे अधवचमां अंही केम ऊभी रह्यां ? "

संयोगता—अरे कर्णाटकी, पेलो पुरुष तो जो जाणे साक्षात् इंद्र के कामदेवज छे.

कर्णाटकी— हशे, गमे ते हो, तमारे परपुरुष सामुं एवी रीते जोवुं योग्य नथी.

संयोगता—पण ए पुरुषने जोई मारा शरीरमां जे हाव उत्पन्न थायछे तेथी हुं खचित कहुंछुं के ए पृथिराज छे.

कर्णाटकी—(हसीने) अरे, पृथिराजतो एंसी लाख लश्करथी घेराई गयो छे ते अहीं क्यांथी ?

संयोगता—गमे तेम हो पण ए पुरुषतो नक्की एज छे. तुं एने ओळखेछे तो मने खरेखर कही दे. नहीं तो एनो घोडो नदी उपरथी फर्यो के मारा प्राण नीकळी गया जाणजे.

कर्णाटकी—हा खरेखर एज छे अने एने बोलावी लीधा जेवो बीजो लाग हवे तमने मळनार नथी.

तेटलामां तो पृथिराजनी माळानां मोती खुल्यां एटले तेणे घोडानां पुंछडांमांना मोती ऊपर हाथ नांख्यो. संयोगताए बे दासीओने सोनाना थाळो मोतीथी भरेला आपी पृथिराजपासे मोकलीओ तथा तेने मेहेलमां बोलावी लाववा कह्युं. पृथिराजनी नजर तो मीन चरित्रमांज लागी हती अने पाछळ हाथ करी पुंछडांमांथी मोतीओ कहाडतो हतो, ते पण खूटवा आव्यां एटलामां तो दासीओ जई पहोंचीओ अने एक थाळ घोडानां पूंछडां आगळ धरयो तेमांथी लई लई फेंकवा लाग्यो. एक खूटयो एटले बीजी दासीए बीजो धरयो ते पण थई रह्यो अने छेल्ले ठाला थाळमां तेनो हाथ लाग्यो त्यारे तेणे पाछळ जोयुं तो अप्सराओ जेवी बे स्त्रीओ दीठी. तेओने जोई बोल्यो, "अरे स्त्रीओ, तमे कोण छो ! शुं कनोजनी जोगणीओ छो के जयचंदना रक्षण वास्ते मने कांई छळ करवा आवीओ छो, के अप्सराओ छो ! जे मारे माथे आवेलां आ वादळमां हुं शूरो थई पडीश वास्ते मने वरवानुं अगाऊथी वचन लेवा आवीओ छो ! के छो कोण !"

दासीओ—अमे जोगणीओ के अप्सराओ कोई नथी, अमे तो संयोगतानी दासीओ छईए.

पृथिराज—ओहो ! शुं संयोगतानो वैभव के जेनी पासे तमारा जेवी तो दासीओ छे. पण वारु मने एकवार संयोगतानां दर्शन करावशो के वखते आ लडाईमां मारुं मरण थाय तो जीव असद्गतीए जाय नहीं.

दासीओ—अमें तमने बोलाववा वास्तेज आवीओ छइए: संयोगताने जोवी होय तो पेला गोख तरफ जुओ.

आ बोलो सांभळी जाणे आंधळाने आंख अने कृपणने धन मळ्युं होय एवो पृथिराज खुश खुश थई गयो. तेणे उंचुं जोयुं के आगळ श्रुतानुरागरूपी आगतो एनी छातीमां बळती हती तेमां दृष्टानुरागरूपी घी होमायुं, जेथी मळवाने एटलो तो अधीरो थइ गयो के पोताना साथीओनुं शूं थशे तथा पारका ने वळी शत्रुना घरमां पेठाथी पोते पण कांई विपत्तिमां आवी पडशे ए विशेनो किंचित् पण ख्याल कीधो नहीं. परंतु एमां एनो वांक नथी, मोटा मोटा विद्वानो कही गयाछे के "**कामांधो नैव पश्यति**" तेम पृथिराज पण कामांध थई गयो हतो तेणे धार्युं के घोडा उपरथी उडीने गोखमां पडुं, पण ते कांई पक्षी न हतो ए तो काळां माथांनुं मानवी हतो माटे ए वात केम बनी शके? तेणे दासीओ साथे रस्तो पकड्यो अने गंगाकिनारे एक पडशाळ हती तेमां घोडाने बांधी एक बारीने रस्ते मेहेलमां दाखल थयो. संयोगता तेने जोई तरत उभी थई अने संयोगताने जोई पृथिराजनो पण पग थंभी रह्यो. तेओए एक बीजां सामुं जराक वार टगमग टगमग जोयुं पण संयोगताथी पृथिराज सामुं वधारे जोवायुं नहीं माटे ते तेना पगना अंगुठा तरफ नजर करी उभी रही. तेनी छाती वधारे धडकवा लागी; अंगमां पसीनो भराई आव्यो; रुवेरुवां उभां थई गयां, अने स्वरभंग थई गयो. एम बे घडी वीती गई पण कोईथी स्थिरता मूकाई नहीं तेम बोलायुं पण नहीं. परंतु जो के स्त्रीनें विद्वानोए आठ गणो काम कही गया छे, तेम तेनाथी ते जीरवी शकातो पण नथी, ते छतां पण नवोढा स्त्रीमां लज्जानुं प्रबळ एटलुं होय छे के काम उभराई जतां छतां पण तेनाथी बोली शकातुं नथी माटे आखर पृथिराज बोल्यो.

पृथिराज— मारी प्यारी, मारी आंखनी कीकी, मारां हैयाना

हार, तारे वास्ते हुं आटलुं बधुं संकट उठावी अहीं आव्यो छुं तेने वास्ते तने कांई लागतुं नथी ? बे घडीवार सुधी तो हुं तारां नेत्रोमांथी वरसतां कामदेवनां बाणनी झपट झाली शक्यो पण हवे मने मूर्छा आवी जशे ए विशे तने कांई पण लागतुं नथी ?

संयोगता—प्राणनाथ ! आ तन मन सहु आपनेज अर्पण करेलुं छे ते तो आप जाणोजछो, अने गुरुजनोनी मरजी विरुद्ध आपना रूप गुण अने पराक्रमो उपर मोहित थईने आपसाथे प्रीति बांधी ते केवळ आ भवसंसाररूपी दरीओ सुखेथी पार उतरवा माटे, पण मने हाथ अडकाडो तेनी अगाउ विवाहनां कांईक चिह्न धारण करी गांधर्वविवाहनी क्रिया करो एटले हुं तमारी हंमेशनी दासी छुं.

कर्णाटकी पासे उभी हती ते आ संभाषण सांभळी कंकु अने मोतीनी अडाळी तथा कंकण लावी, अने पृथिराजने तिलक करी मोती चोडी कंकण हाथें बांधी दूर जती रही. पृथिराजे ते रात आखी संयोगताना मेहेलमां खुशीमां कहाडी, पण ज्यारे कुकडाना शब्दो, देवळना घंटो, राजद्वारनां वानंत्रो, गंगाकिनारे स्नान करवा जतां लोकोनां भजनो अने घंटीना नादो इ० अवाजो तेने काने पड्या त्यारे तेनी उंघ उडी गई. उंघनी साथे चार पहोर अगाउ जे ते धारतो हतो के संयोगताथी तो शरीरमां प्राण होय त्यांसुधी एक डगलुं पण दूर थवुं नहीं ए विचारो पण स्वप्नमां थया होय ते प्रमाणे हवामां उडी गया, अने हवे तेनुं दिल तेना सामंतोमां लाग्युं. पोते शेहेरनी शोभा जोवा नीकळेलो त्यारे लंगरीराय लडतो हतो पण तेनुं परिणाम तेना जाणवामां न हतुं. लंगरीराय उपर किलाकिला तोप छूटेली तेना अवाजो तथा हजारो वीरहाको अने मरतांनी कीकीयारीओ सांभळी हती जेथी तेणे जाण्युं हतुं के कांईक मोटी खराबी तो थयेली; पण ते केटली अने शी रीतनी ते जाणवा ते अधीरो

थयो, माटे तेणे संयोगताने निद्रामांथी ऊठाडी तेने छेल्लुं चुंबन करी जवानी रजा मागी. " जवुं " आ शब्द सांभळतांज संयोगतानी छाती भराई आवी अने तेनी आंखमांथी दडदड आंसु पड्यां. पण पृथिराजे तेने धीरज आपी केटलीक रीते समजावी अने आजनी रात्रे फरी गमे तेम करी पण तेने मळवानुं वचन आपी ते बाहार नीकळ्यो. ते बाहार आव्यो तेवोज तेने एकसो पठाणनी एक टोळीए दीठो. ते कोण छे अने शा कारणथी जनानखानांमांथी आ वखते नीकळ्यो ते तो तेओए जाण्युं नहीं, पण ते परदेशी छे अने आ वखते नीकळ्यो तेमां कांईक भेद खरो एम समजी तेओ पृथिराज उपर धसी आव्या. पोता सामे दुश्मननां माणसो आवेछे एम समजी पृथिराजे तेओ सामे एक बाण फेंक्युं जेथी तेओनो मुख्य पीरोजखां पड्यो. बीजे बाणे जलालखां अने त्रीजे बाणे आलमखां ए रीते त्रण सरदारो तो पड्या, पण तेटलांमां तो बीजाओए तेने घेरी लीधो. दुश्मनो बहु नजदीक आवी जवाथी तेनी कबान नकामी थई पडी एटले तेणे तरवार कहाडी, अने एवी सफाईथी पटाना हाथ कीधा के सोमांनो एक पण जयचंदने समाचार पोंचाडवा सारु रह्यो नहीं. अने तेओनां मुडदांनो ढगलो थयो ते पण गई कालनी लडाईनी गणत्रीमां गणाई गयो. अने पृथिराज पोताना काका कन्हने जई पगे पड्यो.

कन्ह—अहो राजाधिराज, हाथमां कंकण अने कपाळमां तिलक ए मांगलिक चिन्हो लई आव्या पण ए हकीकत केम बनी ते कहो, तथा ब्राह्मण वाणीयानां लग्ननी पेठे कन्याने पीयर मुकीने वळी आव्या ए शुं कीधुं !

पृथिराज—(सर्व हकीकत विदित करीने) काकाजी, आप पूछोछो, ए ठीक पण नीतिशास्त्रमां कह्युं छे के—

यज्ञकालेषु धर्मेषु कामकालेषु शोभिता ।
सर्वत्र वल्लभा बाला युद्धकाले न शोभिता ॥

यज्ञवखते, धर्मवखते अने कामभोगवखते ए बधे ठकाणे स्त्री शोभेछे पण युद्धवखते शोभा आपती नथी.

कन्ह—पण ए तो घेरथी लडवा नीकळीए ते वखत साथे न लेवा वास्ते कह्युं छे, पण आपणे तो ए कन्या राक्षसी विवाहथी परणवाने ईरादे आव्या छईए तो आवो रूडो प्रसंग मळ्ये भूली गया ए तो ठीक कीधुं नहीं.

पृथिराज— आप कहोछो ए ठीकज छे, पण लडाई तो जरूर थशे अने ते स्त्री साथे हशे तो केटलीक रीतनी अडचण थई पडशे माटे हाल तो जापरुं करी जेम तेम दिल्ली पोंचीये; पछी बीने वडे घी थई रहेशे. हवे ए कन्या कांई बीजाने वरवानी नथी.

कन्ह—महाराज, आप कोई वातनी चिंता न करो. अमारां धड उपर माथां हशे त्यांसुधी तो तमने दिल्लीमां पोंचाडी देशुं अने कमळ भमराने वींटाई रहेछे ते प्रमाणे वींटाई जई आपनुं रक्षण करीशुं.

चंदपुंडीर—खरेखर एमज समजजो पण कन्याने मुकीने जवुं ए वात आपणी कीर्तिने झाख लगाडनारी छे.

सर्वानुमते एम ठरच्युं के संयोगतानुं हरण तो करी जवुं. माटे प्रथिराज रात्रे गयो त्यारे पोताना थोडाक सामंतोने पण साथे तेडी गयो.

चैत्र सुद १५ नी रात्रीना बार वाग्याना वखत हतो. चोरनो रिपु चंद्रमा मध्य आकाशमां आवी पूर्ण कळाथी प्रकाशतो हतो. आसपास सघळुं शांत हतुं; उंडो उंडो गंगानदीना प्रवाहनो घुघवाट दूरथी संभळातो हतो; चकवाचकवी शिवाय तमाम जीवजंतुओ वृक्षोउपर स्थिर पड्यां हतां; आकाश साफ हतो अने चंद्रमानां तेजथी आखुं वन रुपेरी रंगनुं दीसतुं हतुं. आ वखते आरसना मेहेलने लगता एक बगीचानी देवाल उपरना आरसना कठोडामां एक स्त्री धोळां रेशमना गादी तकीया उपर लमणे हाथ दई बेठी

हती. तेना अंग उपर ओढणी कांचळी अने लेंगो हतां ते तमाम डोलरना फुलनां गुथेलां हतां. गळामां मोतीनी माळा, हाथमां हीरानां कंकण अने पगमां स्फाटिकनां सांकळां हतां. ए रीते तमाम शुक्लाभिसारिकाना वेषमां ते स्त्री पोताना पतीए गई काले मळवानुं वचन आप्युं हतुं तेनी राहा जोती बेठी हती. वाट जोते जोते बहु अधीरी थई गई अने अर्धी रात गई त्यांहांसुधी धीरज राखी बेठी त्यारे पगरखांनो अवाज सांभळी ते खुशी थई. पण ज्यारे तेणे एकने बदले आठ पुरुषो दीठा त्यारे ते गभराई. तो पण तेणे धीरज राखी जोयुं तो बीजा सात तो अणजाण्या हता पण तेमां पोताना प्राण पृथिराजने जोयो त्यारे तेने शांति थई.

संयोगता—(पृथिराजने) आपे एकला आववानुं वचन आप्युं हतुं अने आटला बधा सामंतोने साथे लाव्या तेनुं कारण शुं ? पण हशे. एओनी सरभरानुं काम मारी दासीने सोंपुं छुं अने आप अंदर पधारो.

पृथिराज—प्यारी, अमारो विचार बीजो छे. आजनी रात अहीं नहीं पण मारां मेलाणमां जई कहाडवी छे.

संयोगता—मारा हैयांना हार हुं त्यां आववा तैयार छुं, पण सवार थये आप मारा मेहेलमांथी नीकळी जाओ तेना करतां मारे तमारां मेलाणमांथी पाछुं आववुं घणुं विकट छे.

पृथिराज—मारी व्हाली, पाछुं आववानी जरूर पण नथी. हवे आ मेहेलने अने कनोजने छेल्लुं नमन करी ले अने दिल्ही तरफ तारुं मन लगाड.

संयोगता—प्राणाधार ए वास्ते हुं तैयार छुं पण आपे मारा पितानां बळनो कांई ख्याल कीधो छे ? ते चडेछे त्यारे गंगा जेवी नदीनां वेन पण चूकी जायछे. लश्करनी हरोलमां माणसोने अने जनावरोने तो पाणी मळेछे पण मध्यभागनांने कादव अने

छेल्ला भागनांने ते पण मळतो नथी एटलुं जबरुं अने जबरदस्त लश्कर छे ते सामे आपथी आपनुं रक्षण केम थशे ?

कन्ह—हे पृथिराज–वामांगी !! ए वातनी जरा फिकर करो नहीं, अमारां धड उपर शीश हशे अने शरीरमां लोही वेहेतुं हशे त्यांसुधी तो आपने अने राजाने जरा आंच लागवा देशुं नहीं.

संयोगता—आप आपना बळना अभिमानमां ए वचनो बोलो· छो पण मारो पिता चडेछे त्यारे दशे दिग्पाळ कंपायमान थई जाय-छे. शेषनाग पण पृथ्वीनो भार झाली शकतो नथी. खेह उडेछे तेथी सूर्य ढंकाई जतां रात्रदिवसनी खबर पडती नथी अने लश्कर-ना पगना घसाराथी मोटा मोटा पर्वतो घसाई जायछे.

गोयंदराय गेहेलोत—हे पंगांनी !! आपना पितानुं एटलुं ल-श्कर छे ए अमने खबर छे, पण शुं एंसी लाख मृगलां देखीने एक सिंह गभराई जशे ? एवा अमे सो सिंह पृथिराजनी हाजरीमां छ-ईए:—अमे अमारां माथां आडां दईने पण तमने दिल्ली पों-चाडी देशुं.

सलख परमार—हे जयचंद पुत्री, आप निश्चिंत रहो. श्रीकृष्ण रुक्मिणीनुं हरण करी नाठा त्यारे रुक्मीयाने बळदेवजीए रोकी राख्यो हतो तेम जयचंदने अमे रोकी राखी तमने दिल्ली पों-चाडी देशुं.

संयोगता—श्रीकृष्णनो प्रताप जुदी तरेहनो हतो. वळी रु-क्मीया पासे मारा पिताना जेटलुं लश्कर न हतुं.

हाहुलीराय हमीर—

दोहो.

हाहुली राय हमीर कहे, सुण पंगानी बत्त ।
इक लडे असी लखसों, इसा सो भड किम भाजत ॥

अल्हन पडिहार--मामीजी, आपे कुवानां देडकांनी माफक जयचंदनीज साहेबी दीठी छे पण पृथिराजनां पराक्रमो सांभळ्यां नथी ! जेणे सात वखत गोरी शाहाबुद्दीनने पकडी छोडी दीधो, तो तमारो पिता कई गणत्रीमां !

चंद पुंडीर--हे कमधज कुमारी, पृथिराजनी सेवामां अम जेवा सो शूरवीरो हाजर छे. तेमांनो एक एक जण आप एक एक कोश चालशो त्यां सुधी जयचंदने रोकीशुं तो पण दिल्ली अंहीथी ९९ कोश थायछे त्यां आप सुखे पोंची जशो.

जाम जादव— हे दिल्लेश प्रिया, अमे लोको जे प्रमाणे बोलीये छीये ते प्रमाणेज काम करी बतावीए एवा छईए, माटे आप कशी रीतनो थडको न राखतां घोडेस्वार थई जाओ.

निडुरराय— (संयोगता काकानी दीकरी बेन थायछे माटे तेने कंई न केहतां पृथिराजने) अन्नदाता, हवे जेटली ढील थायछे एटलुं दिल्लीने ने आपने छेटुं पडेछे, माटे विलंब थवो न जोईए.

पृथिराजे आ सांभळतांज संयोगताने बां पकडी पोताना घोडा उपर पीठ पाछळ बेसारी लीधी, अने रातोरात मेलाणमां नीकळी गया. सवार थये पृथिराजे चंद कवीने कह्युं के " जा, तुं जई जयचंदने चेतव के पृथिराजे तारो यज्ञ तो बगाड्यो पण कन्याए हरण करी जायछे ". चंदे तेम करवा मना करी कह्युं के "महाभारथना युद्धमां कर्ण जो के लडवामां अतीरथीओ करतां पण वधारे हतो तो पण ते पोताना बळ उपर अभिमान राखनार अने युद्ध वखते दया आणनार हतो माटे भीष्म पिता तेने अर्धरथी केहेता हता; माटे हुं कहुंछुं के हाल अभिमान करवाजेवुं नथी. हाल तो आपणथी नासी शकाय एटलुं नासवामां लाभ छे. वृठा म्हे तो वाटाडुए कहेशे." तो पण पृथिराजे मान्युं नहीं अने चंदने मोक-

ल्यो. चंदे जई जयचंदने जाहेर कीधुं के तेनी छातीमां आग लागी हती तेमां घी होमायुं. तेनी सेना तो तैयारज हती माटे तेणे नगारां उपर डंको नांख्यो अने एकदम बधां लश्करथी धसारो कीधो.

पृथिराजनी तरफनाओए पोताना बचाव वास्ते एवो ठेराव कीधो हतो के एक एक सामंते पोताथी जेटलो वखत जयचंदनां लश्करने रोकी शकाय तेटलुं रोकवुं अने तेटलामां पृथिराजे तथा बीजाओए दिल्ली तरफ नासवुं. जयचंदनुं लश्कर आवी पोंचतां प्रथम गोयंदराय गेहेलोत सामो थयो तेणे जयचंदनां हजारो माणसोनो संहार कीधो, अने पृथिराज चार कोश सुधी नाठो त्यांसुधी लड्यो. पण लाखोनां दळ आगळ मुठी भर माणसोथी केटलुंक टकाय ? आखर गोयंदराय पड्यो अने जयचंदनां लश्करनो पग ऊपड्यो. आगळ जतां चंद पुंडीरे तेने अटकाव्यो. तेणे पण जयचंदनां लश्करनी खराबी करवामां बाकी कांई राखी नहीं, पण अंते ते पण पड्यो. एटले अताताई चड्यो. अताताई सामे केहर कंठीर एक हजार शंखधरथी सामे आव्यो. तेओनां माथां उपर मोरपींछ, अंगे खुल्ला तथा शंखनो नाद करता तेओ सामे आव्या, अने घणुं विषम युद्ध कीधुं. अने अताताईनां लश्करने तथा पृथिराजने वींटेला सामंतोने वींधी आरपार नीकळी आव्या, तथा पृथिराज अने संयोगता एक घोडापर स्वार हतां तेओने आवी केहर कंठीरे कबान भरावी, अने चाह्युं के बन्नेने घोडा सुद्धांत खेंची जई जयचंद पासे खडां करुं. पृथिराजनां गळामां कबान भरातां ते गभरायो, पण संयोगताने ओसाण आव्युं तेथी तेणे पोताना दांत वते कबाननी दोरी करडीने तोडी नांखी अने बेउ छूटां थई गयां. पोतानी युक्तीमां निष्फळ थतां केहर कंठीर पाछो वळ्यो, अने जयचंदने जई कह्युं के तारी दीकरी तो खुशीथी पृथिराज भेळी जायछे. एटलुं कहीने फरी लडवा मंड्यो तेमां अताताईने हाथे तरवारनो

झाटको लागवाथी तेनुं माथुं उडी गयुं. अने तेना हाथना झाटकाथी अतातार्इनुं शीश धडथी जुदुं थयुं. माथां उडी जतां बने कबंधो लडवा लाग्यां अने बेउ तरफनां माणसोनो घाण वाळी नांख्यो.

आ बेउ शूरवीरो घणी आश्चर्यकारक रीते लड्या, तेमां केहर कंठीर त्यागीना वेषमां जयचंदनी सेवामां केम आव्यो हतो ते विशे चंद कवीने पूछतां तेणे उत्तर आप्यो के केहर कंठीर परमार राजामां मुख्य हतो. आ पृथ्वीना धणी परमार छे. ब्राह्मणोने तो बधा दान आपेछे पण तेणे क्षत्रीओने दान आप्यां छे. तेमणे पृथ्वी चकवे करी नीचे मुजब दानमां आपी दीधीः—

दियो दिल्ली तुंवरां, दई पट्टन चाउरां;
दिय संभरि चहुआन, दई कनवज राठोरां;
परिहारां मुर देश, समा भट्टी सिंधु तट;
दइ सोरठ जादवां, दइ दक्षिनसु भाग पट;
चारनां कच्छ दीनीधरा, भट्टां पूरब भावही;
बनी गयो नृपति वेंटी धरा, गिरिजापती माला ग्रही.

तुंवरने दिल्ली, चावडाने पाटण, चहुवाणने संभर (अजमेर), राठोडने कनोज, परिहारने मारवाड, समा अने भट्टीने सिंधु कांठो, जादवो (चूडासमा) ने सोरठ, दक्षिण छ भागमां, चारणोने कच्छ अने भाटोने पूर्व ए रीते धरती वेंचीने राजाए सदाशिवना नामनी माळा हाथमां लीधी, अने हजार भाईओ ऋषीना वेषमां जंगलमां रही अजपा जाप जपी तप करवा मंड्या. एक वखत तेओनी एक गाय, एक राक्षस आवी भक्ष करी गयो. ते विषे तेओने एम लाग्युं के अमे क्षत्री बेठे गोवध थयो तो तेनुं पाप अमने लाग्युं. एम मानी तेनां प्रायश्चित्तमां पींपळानां लाकडांमां बळी मरवानी तैयारी कीधी. ते वखते नारद मुनीए तेमने दर्शन दई कह्युं के,

" ए प्रायश्चित्त ब्राह्मणो वास्ते छे. क्षत्रीओ वास्ते तो धारातीर्थ छे, माटे तमे ए वात छोडी दई जयचंदना यज्ञमां जाओ. त्यां तमने एवो प्रसंग मळशे, अने गंगा नदीना किनारा उपर तमारे अताताई चहुवान साथे युद्ध थशे तेमां काम आवी मुक्ती पामशो." ए उपरथी तेओ अंही आव्या हता. तेओए केटलोक वखत तपस्यामां कहाड्यो हतो एटले हवे अमने क्रोध केम चडशे ए सवालना जवाबमां नारदजीए एमने कह्युं हतुं के जयचंद पोतानी पुत्री तमने आपवानुं जाहेर करशे, ते वच्चेथी चहुवाण लईने नासशे एटले तमने क्रोध व्यापशे. सामो अताताई पण सदाशिवनो वरदाई हतो तेनो जन्म थयो त्यारे ते दीकरी हती पण तेना पिता चौरंगी चहुवाणे भूलथी दीकरानी वधामणी बाहार फेलावी. पण घणी मुदते खरी वात बहार पाड्या वगर छूटको नहीं माटे तेने पस्तावो थयो. ते वास्ते ते दीकरीने लई सदाशिवना मंदिरमां जई बेठो, अने पेहेली दीकरीने मारी नांखी पछी पोते कमळपूजा करवानुं धार्युं. तेवामां सदाशिवे प्रसन्न थई तेने दीकरीनो दीकरो बनावी आप्यो, अने ते युद्धमां मोटां मोटां पराक्रमो बतावशे एवो तेने आशिर्वाद आप्यो हतो.

अताताई पडतां वळी जयचंदनुं लश्कर आगळ धस्युं. तेमांथी काशीराजा आगळ आव्यो अने आमथी हमीर हाडो सामो थयो. तेओनी लडाईमां रात्री पडी जवाथी बेऊ दळे वीसामो लीधो. एम त्रण दिवस सुधी युद्ध चाल्युं तेमां जयचंदनां लाखो माणसो काम आवी गयां, पृथिराजनां माणसोमांथी पण केटलांक खपी गयां अने ओगणपचास मोटा होद्देदारो खपी गया. पछी हरीसिंह, कनकवड गुज्जर, अने निडुरराय इ० एक पछी एक मोटी बहादुरीथी

---

१ तरवारोथी लडी मरवुं ते.

लडी लडी पड्या. पछी कन्ह नरनाह ऊठ्यो. ते बख्तर पेहेरी तैयार थायछे तेटलामां तो जयचंदनुं लश्कर भेटाभेट थई गयुं एटले तेनो घोडावाळो छगन आगळ धस्यो. छगने केर वाळ्यो अने एक घडी सुधी जयचंदनां लश्करने रोकी आखर पड्यो, पड्या केडे एनुं धड लडवा लाग्युं, तेटलामां कन्ह पण आवी पोंतो. कन्ह एक हजार मीर तथा बीजुं एक लाख लश्कर कापी आखर पड्यो. पड्या केडे तेनुं धड लडवा लाग्युं तथा तेनो घोडो पण शूरो थयो. बन्नेए बहु राड बोलावी, पण आखर एकनुं ओसड बे. जयचंदना पचीसेक लाख तो खपी गयां हतां पण हजी घणां हतां तेथी तेओए वळी आगळ पग ऊपाड्यो.

कन्ह पडतां अल्हन कुमार परिहार ऊठ्यो. आ युद्धो पृथिराजनो भाणेज थाय, ते एक वखत हजामत करावी ऊठ्यो त्यारे पृथिराजे तेनां माथामां ठोलो मार्‍यो, त्यारे तेणे पृथिराज सामी तरवार खेंची. पृथिराजे तेने धीमो पाडवा कह्युं के, "एमां घुस्से शुं थायछ? शूराओनां माथांतो राजानां छे, धड एओनां छे. जो अमे रीझीयें छीयें तो माथां उपर पाघडी बंधावीए छीए अने वखत पडे एज माथां तमे पण अमने काममां आपोछो." ए वातथी ते वखते तो अल्हन धीमो पडी गयो पण हमणां तेणे पाताना मामाने कह्युं के, "मामा, माथां तमारां छे एम समजशो मां, धड पण तमारांज छे." एम कही पोताने हाथे पोतानुं माथुं कापा पृथिराजना हाथमां मूक्युं, अने कह्युं के दिल्हीमां पोंचवा अगाऊ ए माथुं जमीन ऊपेर मूकशो नहीं, तो हुंज तमने दिल्ही पोंचाडी दईश. पण संयोगता शापित स्त्री हती. जो एम थाय तो तेना विवाहमां तेना पति अने पितानां कुळमां थोडांक माणसो रही जाय तथा पृथ्वीनो भार पण पूरो उतरे नहीं. माटे आगळ जतां तेने तृषा लागी एटले पृथिराजे तेने एक कूवामांथी पाणी कहाडी आप्युं, पण तेना हाथमां

मुडदांनुं माथुं छे एटले ए पाणी हुं पीश नहीं एम कह्युं. पृथिराज कहे, "ए मुडदुं नथी, एनुं धडतो हजी लडेछे." पण स्त्रीया हठने कोण पोंचे ? पृथिराजे माथुं हेठुं मुक्युं के त्यां अल्हन पड्यो. अल्हन पडतां फोज आगळ धसी अने तेओ भेटाभेट थतां अचळेस भाटी अने विजराज चालुक आगळ थया. तेओ पछी लाखनसी बाघेलो अने तुंवर पहाड इ० जयचंदनां लश्करने रोकता रोकता पडचा, पण पृथिराज दुःखे पापे दिल्ली पोहोंच्यो. तेनी साथे हाहुलीराय हमीर चंदभाट अने रामगुरु प्रोहित ए त्रण जण बच्या. बाकी जण बच्यो खपी गयो. जयचंद दिल्लीनी नजदीक आवी पोहोंच्यो त्यारे तेणे पृथिराजनी पीठ ऊपर बेठेली संयोगताने जोई. ते जोईने ते बोल्यो, "अररर !!! में यज्ञ कीधो तेमां घीने बदले लोहीनी आहुतीओ अपाई अने फळफुलने बदले मारुं सुख कीर्ति अने लाज होमाई गयां. हजी पण दिल्लीने घेरो घाली पृथिराजने पकडी शकुंछुं पण हवे दीकरीनां सुख सामुं जोई पृथिराजने तेनी आबरु यौवन अने दिल्ली शेहेर हुं दायजामां आपी वळी नीकळुंछुं." एम कही वळी नीकळ्यो अने पाछळथी श्रीकंठ प्रोहितने मोकलीने कन्यादाननी क्रिया करी दिल्लीमां पृथिराज अने संयोगताने परणाव्यां.

प्रकरण ८ मुं.

अग्यार अग्यार हजार माणसो कपाई गयां तेनी खबरो दिल्ली पोंचवाथी कोई पलभर एम ख्याल करशे के त्यां रडारोळ थई रही हशे. पण ना; ए वखतमां लोको एवां तो शामधर्मी हतां के एटलां बधां माणसो खपावीने पण पोतानो राजा कीर्ति जाळवी आव्यो अने हाडकां चामडांनी एक संजीवन पूतळी लाव्यो माटे घेरे घेर

उत्सव थई रह्यो हतो. जे जे योद्धाओनां मस्तको तेमनी प्यारीओना हाथमां आव्यां तेओए पोताना पतीओ साथे सहगमन कीधां, अने केटलीकोए रुद्राक्षनी माळा तथा श्वेत वस्त्र धारण करी ईश्वरभक्तीमां पोतानां दिल लगाड्यां.

दुःखनुं ओसड दहाडा वीत्या केडे संयोगताना विवाहना उत्सव दाखल जियाफतो थवा मांडी. आज चार कोश ऊपर देवीनुं मंदिर छे तो त्यां, अने काल छ कोश उपर बगीचो छे त्यां, एम केटलाक दिवस गोठो अने ते साथे जंगलमां शिकारनी गमतो शरु थई. एक दिवस शिकार शोधनाराओए एक गुफामां सिंह जेवुं कांइक जोई राजाने चेतव्युं, ते उपरथी राजा तेनो शिकार करवा चड्यो; अने तेने बहार कहाडवा केटलांक प्रयत्न कीधां. तेमां निष्फळ जवाथी अर्धसळग्यां लाकडांओ अंदर नांखी धुंवाडो कीधो, के तेथी गुंगळाइने सिंह बहार आवे. पण ए कांई सिंह न हतो; ए तो दुर्वासा ऋषिनो शिष्य चक्षुःश्रवा हतो, ते सिंहनुं आखुं चर्म ओढी तपस्या करतो हतो, जेथी कानने ठेकाणे कान, आंखने ठेकाणे आंख इ० देखातुं हतुं, जेथी शिकार शोधनाराओए भूल खाधी हती. पण भावीने कोई पोंचतुं नथी. धुवाडाथी गुंगळाई आंखो चोळतो चोळतो ऋषि बहार आव्यो, अने सिंह चर्म दूर करी राजा प्रत्ये बोल्यो के, "अरे अधम, तें मारी तपस्यामां भंग कर्यो. हुं अनाथ तपस्वी कोईने दुःख न देतां एकांत गुफामां बेसी तपस्या करतो हतो जेनुं दशांश फळ तो तने घेर बेठे पोंचतुं हतुं, पण तें पेट चोळी शूळ उपजाव्युं तो जा तने शाप आपुंछुं के तारा दुश्मनो तारी आंखोमां काच फेरवी तने आंधळो करशे." राजा घोडेथी ऊतरी ऋषीने पगे पड्यो अने माफी मागी के ए काम माराथी अजाणतां थई गयुं छे माटे शाप निवारण थवो जोईए. ऋषि कहे, शाप तो निवारण थशे नहीं, परंतु तें अजाणतां कीधुं छे तो तने चेतवुं

छुं के "ए शाप बार महीना केडे अमलमां आवशे त्यांसुधी तारे जे सार्थक करवुं होय ते करी ले."

परीक्षितने सात दिवसनी मेहेतल मळी हती तेमां तेणे श्रीमद्भागवत सांभळी देहनुं सार्थक कर्युं हतुं, पण पृथिराजनी इंद्रिओ हजी शांत पडी न हती. तेणे पोतानी जिंदगीमां शृंगार अने वीर रसज चाख्या हता. धर्म अने वैराग्य शुं चीज छे तेनो तेणे स्वप्नमां पण ख्याल कर्यो न हतो. रतिसुख एज आ जन्मनुं सार्थक समजतो हतो, माटे तेणे बधुं राजकाज तथा शिकारनी गमत छोडी दई ए सुखमां पोतानो काळ निर्गमन करवानो ठेराव कीधो. तेना मेहेलमां संयोगता आवतां तेनी बीजी राणीओनां चंद्रमा ऊगतां ताराओनां तेज झांखां पडी जाय तेम झांखां पडी गयां हतां. वळी मुश्केलीथी मळेली चीज हंमेशां वाहाली लागेछे, माटे पृथिराजे संयोगताना मेहेलमां रेहेवुं पसंद कीधुं. आखी रात गंमतमां कहाडी सवार थये स्नान करी वस्त्रालंकार सजी कचेरी करी सामंतो अने कार्यभारीओनी सलाम लई जरूरी काम विशे हुकम आपी फरी जनानखानांमां दाखल थई जतो, ने बीजे दिवस सवारे नीकळतो हतो. पण एटलो वखत ते पोताथी दूर जतो ए वात संयोगताने गमी नहीं. चंद्रकळा स्थान, अष्टविधि आलिंगन, सप्तविधिचुंबन, पंचभाव, अष्टादश हाव, षड्ऋतु विहार इ० कोकशास्त्रना भेदोमां ते प्रवीण हती. नृत्य भेद तथा संगीत शास्त्रमां एक्की हती, अने नायिकाभेद तो ए मानां पेटमांथी शीखीने जन्मी हती; एवा एवा गुणोथी तेणे पृथिराजने एवो तो लपटाव्यो के थोडा दिवस केडे कचेरी थवी पण बंध थई अने पाळेला पोपटनी माफक संयोगताथी तेना पडछाया जेटलो पण दूर खसतो नहीं.

संयोगताए पोताना पीयरथी आवेली सातसो दासीयोना सात विभाग करी सो सो दासीनी सात चोकी बेसारी दीधी. सामंतो

अने कार्यभारीओने राजानां दर्शन बंध थवाथी तेओ दोढीए जई दासीसाथे दंडवत् प्रणाम कहावी मूकता ते पेहेली चोकीवाळी बीजीने अने बीजीवाळी त्रीजीने एम सातमीवाळी आवी जाहेर करती. प्रणामसाथे कोई वखत जरूरी कामनी अरज पण पोंचाडता जेथी राजानो थोडोक वखत जवाब देवामां जतो. ए वात पण संयोगताने पसंद पडी नहीं माटे तेणे पेहेली चोकीवाळी दासीओने परबारो जवाब दई देवा आज्ञा आपी.

जातजातना आसवोनां[1] पांन, जातजातनां आमिषोनां[2] भक्ष, मृगमदादि[3] तेजाना तथा सुगंधी इ० कामोद्दीपक पदार्थोनां सेवनोमां पृथिराज एटलो तो लंपट थई गयो के तेने अस्तोदयनी पण कळ पडती नहीं. पण धणी विना ढोर सुनां. छ महीना सुधी तो राजाना डरथी कार्यभारीओ अने तेओना डरथी रैयत पोतानी माजामां चाली, पण हवे अटक त्रुटी कार्यभारीओ जेना हाथमां तेना मोंमां एम राज्यनी उपज गरक करवा लाग्या, तथा रैयत उपर जुलम करवा लाग्या. चोर अने लुच्चा लफंगाओ निर्भय थई पोतानां कामो करवा लाग्या. लश्करनां माणसोने नियमसर पगार न मळवाथी एक पछी एक नीकळी जई बीजां राज्यस्थानोनी सेवामां रह्यां. एम चारे कोर अंधाधुंध थई रह्युं. वळी शाहाबुद्दीन जेवो शत्रु तो उपर गाजतोज हतो. पण हजी रैयतमां शाम धर्म हतो. तेमांना थोडाक आबरुदार गृहस्थोए सभा भरी पोता तरफथी राजाने कांईक अरज करवा ठेराव कीधो. पण ते अरज पोंचाडे कोण? ए काम राज्यनां जुनां माणसो सिवाय बनशे नहीं माटे तेओए तेवामांथी चार जण (चामुंडराय, हाहुलीराय हमीर, चंद भाट अने रामगुरु प्रोहित) बच्या हता, तेमां चामुंडराय तो केद

---

१ दारु. २ मांस. ३ कस्तुरी.

हतो, बाकी चंद अने हाहुलीरायने विनती करी. चंदे कह्युं, "आ-पणी अर्जथी कांई वळवानुं नथी," तो पण रैयतना अति आग्रहथी तेओने ए काम ऊपाडवुं पड्युं. पण दासी परबारो जवाब आपेछे ए तेमने नक्की हतुं माटे चंदे एक चिठ्ठीमां लख्युं के "**तुं पर गोरी रत्तियं, अरु ता घर गोरी तक्कियं**" [तुं तो गोरी (स्त्री) साथे रतिसुखमां पड्योछे पण तारी धरतीने गोरी (शाहाबुद्दीन) ताके छे]. आ चीठी तेओए पेहेली चोकीनी मुख्य दासीने आपी राजाने पोंचाडवा कह्युं. ए दासीओ संयोगतानी हतीओ, कांई पृथिराजनी न हती, माटे एक पछी एक एम सातमी दोढीवाळी पासे जतां तेणे राजानी नजर चूकावी संयोगताने वंचावी. संयोगता वांचतांवेंतज क्रोधायमान थईने बोली के अमो आवां रतिसुख माणीये छीये तेमां वळी कामदेवनी शत्रु चिंता पेदाकरनार चीठी लखवा-वाळो कोण छे! जाओ एने छडीओना प्रहारथी मार मारी कहाडी मूको. हुकम थतांज दासीओ सोनानी छडीओ लई दोडीओ. तेओने आवती जोई हाहुलीराय अने चंद भेद समजी गया, अने नासवा मांड्युं, पण तेटलामां तो दासीओए एक एक बे बे प्रहार करी लीधा. हाहुलीराय अने चंद सामा थया होत तो तो ते साते सोने परलोकमां पोंचाडत, पण तेओए रजपूत धर्म संभारी अबळा सामो हाथ ऊपाड्यो नहीं. दरवाजा पासे पोंच्या त्यारे हाहुली राये दरवाजानां कमाडो खेंची कहाडी पीठ उपर धरी लीधां अने चंदने पोतानी हरोळमां लई लीधो. बेउ जणा नासेछे, पीठ उपर क-माड, ते उपर छडीओना प्रहार थायछे, तेओनां पाघडां वींखाई गयां छे, जामा पगनीचे आववाथी तेमां लीरा ऊतर्या छे इ० देखाव जोवा लायक हतो. पोतानी दासीओ हुकम अमलमां लावेछे के नहीं ते जोवा संयोगता एक गोखमां जई ऊभी के पृथिराज पण तेनी पासे जई ऊभो. तेओना जोवामां ए तमासो आव्यो जे जोई

संयोगता अने तेने जोई राजा पण हस्यो. ए देखाव हाहुलीरायनां जोवामां आव्यो जेथी तेनुं मगज फरी गयुं. दरबारनी देवडी सुधी तेओने वळावी दासीओ वळी नीकळीओ एटले हाहुलीरायें कमाड फेंकी दीधां अने बोल्यो, "राजानी विनाशकाळे विपरीत बुद्धि थई चूकी. मारी मायें जो मारो बाप एकज दीठो हशे तो हुं हवे राजाने संयोगता साथे वधारे सुख भोगववा नहीं दउं. हवेथी दिल्ली अने संयोगतानो चूडलो भांग्यो जाणजो. अरे चंद ! तारे मारी साथे चालवानो विचार होय तो चाल अने दिल्लीनुं पाणी अग्राह्य कर."

चंद—ठाकोर साहेब, आपना मोमांथी ए वचन नीकळवां न जोईए. गमे तेवो तो पण आपणो राजा छे. आज विषयलंपट थई जवाथी आपणी आबरु लीधी पण काल पाछो ठेकाणे आवी जशे.

हाहुलीराय—हवे ठेकाणे आवी रह्या. ए संयोगता संयोगता नहीं, पण भरथखंडमांथी हिंदुराज्यनी वियोगता छे माटे हवे सारुं थवानी आशा राखवीज नहीं.

चंद—पण आगळ आपणने लाड लडावेलां ते तरफ अने शामधर्म तरफ तो जुओ. भावी हशे ते तो थशे पण ए कामनी बदनामी तमारे लीधा जेवुं नथी.

हाहुलीराय—आगळ लाड लडावेलां तो आपणे पण लाखो दुश्मनोनी भीडमां माथां हाथमां लई लड्या छईए, अने हजी पण ए काम में माथे उठाव्युं न होत, पण राजा आपणा बेहाल जोई हस्यो ! धिक्कार छे आपणां जीवतरने के जे राजा आपणां भुजउपर पोतानुं राज्य अने कीर्ति समजतो हतो ते हवे आपणने टुकराखाउ समजे !!

चंद—गमे तेम हो पण ए काममां हुं सम्मती आपतो नथी.

हाहुलीराय—तुंतो भाटभाई छो. तम लोकोनी जीभमां शूरातन छे, अंगमां नथी. माटे टुकरा खाओ अने पड्या रहो. माराथी तो आ वात संखाती नथी. संयोगतानो चूडलो भांगे नहीं त्यां सुधी मारे तो दिल्हीनुं पाणी अग्राह्य छे. (एम कही घोडो छोडी गजनी तरफ नासी गयो.)

दिल्ही तो वेहेलीज डामडोल थई रही हती अने तेमां हाहुलीराय उपर मुजब प्रतिज्ञा करी नासी गयो तेथी लोकोए तो पृथिराजनां राज्यविशेनी बल के तेनी जिंदगी विशेनी पण आशा छोडी. पण कोनी मायें शेर सूंठ खाधी होय के हाहुलीरायनी प्रतिज्ञानी वात जई राजाने कहे! राज्यनां कामलायक माणसो तो संयोगताना भोगमां जयचंद साथनी लडाईमां काम आवी गयां हतां, बाकी कोई गणगण्या हता ते दिल्हीनी दुर्दशा नजरे न जोवाय तो सारुं एम धारी वानप्रस्थाश्रम धारण करी वनमां चाली नीकळ्या. पैसावाळाओ पोतानी मिलकत जमीनमां दाटवा लाग्या. जेनां घरमां खुबसुरत स्त्रीओ हतीओ तेओ आबरुना बचावने वास्ते स्त्रीओने निर्भय जगाए मूकवा बहार नीकळी गया. केटलाको देवदेवीओनी उपासनाओ करी तेओ पासे म्लेच्छोनो रस्तामांज नाश थई जाय एम मागवा लाग्या, इ० देश उपर संकट आवतुं जोई जे जे इलाजो लेवा जोइए ते ते लेवा लाग्या.

हाहुलीराय गजनी जई पहोंच्यो अने शाहाबुद्दीननी सलाम करी अरज करी के हवे पधारो तो तमने दिल्ही अपावुं. पण शाहाबुद्दीनने तो घा वीत्या हता ते एकदम शत्रुना माणसनी अरज केम माने ! हाहुलीराय शाहाबुद्दीनने विचारमां पडेलो जोई बोल्यो, " जहां पनाह, ए बाबतमां विचार करवा जेवुं कंई नथी. आपने सात वखत बांधी छोडी दीधा छे एटले आप एनां नामथी देहेशत खाओछो पण हवे ए वात रही नथी. आप जाणोछो के कय-

माधने तो एणे पोताने हाथे मारी नांख्यो छे, चामुंडरायने बेडी घाली छे जेथी तेणे हाथमां लोढुं न ऊपाडवानी प्रतिज्ञा लीधी छे, संजमराय महोबानी लडाईमां अने कन्ह, लंगरीराय, चंद पुंडीर, जाम जादव, गोयंदराय, अताताई इ० कनोजनी लडाईमां काम आवी गया छे. बाकी हुं, चंद भाट, अने रामगुरु प्रोहित रह्या तेमां हुं अहीं आव्यो छुं, बाकी भाट अने ब्राह्मणभाईथी शुं थवानुं छे ? माटे जलदी करो, दिल्ली सुधी पोंचवा जेटलीज वार छे." एटली वातथी पण शाहाबुद्दीनने विश्वास आव्यो नहीं माटे तेणे पोताना छुप्पा जासुदो मोकली खात्री करी अने पछी त्रीस हजार लश्करथी चड्यो.

पृथिराज विषयलंपट थई जवाथी तेने रात्रदिवसनुं भान नथी. हाहुलीरायना बेहाल थया तथा ते वास्ते ते प्रतिज्ञा लई गजनी गयोछे, दिल्लीमां तीरकामठुं के तरवार उपाडे एवुं एक पण माणस नथी, अने शाहाबुद्दीन चडी आवेछे ए वातनी पृथिराजना बनेवी समरसिंह रावळने चित्तोडमां खबर थतां ते तेर हजार माणसथी पृथिराजनी मदद वास्ते वगर बोलावे दिल्लीमां आव्यो. पण अहीं तो शेठ आव्या तो के नांखो वखारे. कोनां धड उपर बे माथां होय के पृथिराजने ए वात चेतवी तेने संयोगताथी एक बे घडी जूदो पाडे ! माटे समरसिंह तो गामबहार पोताना तंबु नांखी पड्यो.

"महायुद्ध" ए नामना अध्यायमां चंद समरसिंहनी चालचलगतनुं नीचे मुजब बयान आपेछे. लश्करमां ते युलिसिस*

---

* होमरकृत "इलियड" नामनुं काव्य जेनी वात रामायण साथे घणी मळती आवेछे तेमां कहेवा प्रमाणे आ पुरुष ट्रायना युद्ध वखत ग्रीस देशनो एक नामांकित वीर हतो. एज कविनां रचेलां "आडिसी" नामनां काव्यमां आ पुरुषनां आश्चर्यकारक पराक्रमोनुं आबेहूब वर्णन आपेलुं छे.

जेवो हतो एवुं भाटनुं वर्णन छे. युद्धमां बहादुर, थंडा मिजाजनो तथा चतुर; मंत्रमां दीर्घदर्शी, डाह्यो तथा वक्ता; सघळे वखते शुद्ध मननो अने सभ्य चालनो; पोताना सरदारोनो वहालो अने चोहाणना सामंतो तरफथी मान पामतो एवो ते हतो. लश्कर कूच करतुं त्यारे शकुन अपशकुननो खुलासो करवामां कोई पण शकुनदर्शी अथवा भाट एनाथी चडतो नहि. रणक्षेत्रमां लश्करनी टुकडीओने युद्धना पोशाक पेहेरावी तैयार करवामां एनाथी कोई सरस न हतो. एना घोडाने कोई एनाथी सरस रीते चलावी शकतो नहि, तेम एनुं तीरकामठुं एनाथी सरस रीते कोई वापरी शकतो नहि. युद्धनी वच्चे वच्चे ज्यारे वखत बळतो त्यारे सरदारो मुख्य करीने तेना तंबुमां भराता अने तेनां वक्तृत्वथी आनंद पामता तथा तेनी विद्याथी तेमने ज्ञान मळतुं. भाट कबूल करेछे के राजनीतिविषे आपेला तेना घणा खरा विचारो खोमान (समरसिंह)नां मुखमांथीज नीकळेला छे. नीति बाबत तथा एलचीओनी वर्तणुकना नियमो बाबत, प्रधानो केवा पसंद करवा ते बाबत तथा दैविक अने लौकिक (तेमां विशेषे करीने रजपूतना राजा तरफना) धर्म बाबत तेणे जे सरसमां सरस दलीलो आपी छे ते सर्वनुं साधारण मूळ आ चीतोडना चतुर राजानां मुखमांथीज छे.

आवो समरसिंह केटलाक दिवस एम बाहार बेशी रह्यो, पण चेतववानी कोईनी हिम्मत चाली नहीं. आखर समरसिंहे एक चीठी लखी ते उपर मीण विंटाळी पोताना शीखवेला पोपटनी चांचमां आपी तेने जनानखानामां जई राजाना खोळामां नांखवा कह्युं. पोपट चीठी लई ऊडच्यो अने जनानखानामां जोय छे तो एक गुलाबजळना भरेला होजमां राजा राणी जलक्रीडा करेछे. क्रीडा करी रह्या पछी संयोगता होजमांथी प्रथम नीकळी कपडां पेहेरवा लागी अने राजा हजी मांहेंज हतो तेटलामां पोपटे तेनां मो आगळ चीठी

नांखी. राजाए ते ऊपाडी लई मीण उखेडी जोयुंतो मांहे चीठी दीठी. संयोगता आ बनाव जोई गभराई अने धार्युं के वळी कोईए फितुर उठाव्युं छे, राजा चीठी वांचशे तेमां जो राज्यनां अंवेर विशे लख्युं हशे तो तेनुं मन फरी जशे अने ते माराथी दूर जशे, माटे ते केहेवा लागी, "खमां खमां प्राणनाथ! कांई जादु टुनो हशे, ए वांचवाथी कांई खराबी थशे माटे बाळी नांखो." पण तेटलांमां तो पृथिराजे ते वांची लीधी. अने अफसोस कर्यो के मारो बनेवी समरसिंह मारा गाममां आज आठ आठ दिवस थया आवी पडेलो छे पण मने खबर नथी. धिक्कार छे मने ने आ विषयने. संयोगता तेनी मुखमुद्रा उपरथी समजी गई के हवे आडुं अवळुं समजावी शकाय एवुं लागतुं नथी माटे जे तरफ एनुं मन वळ्युं होय ते तरफ आपणो मत आपवो एम धारी पूछ्युं, "मारा प्राणाधार! आवडुं बधुं म्हो ऊतरी जवानुं कारण शुं? चीठीमां कांई खराब खबर तो नथी?"

पृथिराज—ना प्यारी, एवुं तो कांई नथी, पण मारो बनेवी समरसिंह आठ रोज थया शेहेरने पादर आवी पडेलो छे तेनी मने कोईए खबर पण करी नहीं!

संयोगता—अहो हो!!! शी खुश खबर!!! समरसिंहजी, आपणा दरबारमां मिजमान!!! आजतो दूधना मे वरस्या. आप जलदी एमनो सत्कार करो अने हुं पण एमनी सरभरानी तैयारी करुं छुं. अने जे दासीने खबर थया छतां आपणने चेतव्युं नहीं तेनी तपास करी हुं तेने शिक्षा करीश.

पृथिराजे तरत बहार आवी नगारां उपर डंका नांख्या अने स्वारी तैयार करावी सामैयुं कीधुं. एक तो समरसिंहनुं दिल्लीमां आववुं एज एक महोत्सव हतो पण तेमना आववाथी बार बार महीना थया लोकोने पोताना धणीनां दर्शन थयां न हतां ते थयां,

अने पृथिराज तथा समरसिंहने कचेरीमां साथे बेठेला जोई लोकोना हर्षनो पार रह्यो नहीं. ए हर्षना उभरामां वाजंत्रो उपर एटलातो जोरथी घा पड्या के ते शोरथी दरबारना चोकनी एक जमीन फाटी मोटी शिला उथली पडी, अने तेमांथी सदाशिवनो गण वीरभद्र के जेणे दक्षप्रजापतीनो यज्ञ बगाडी ते नोकरीना बदलामां सदाशिव पासे उंघ मागी हती ते नीकळी आव्यो. सदाशिवे तेने उंघ बक्षी हती पण तेने जे ए उंघमांथी जगाडशे तेनुं राज्य जशे एम कह्युं हतुं माटे वीरभद्रनो पृथिराजने शाप लागो. कवि चंदे ए वखतनुं केटलुंक भविष्य कहेलुं कहेवायछे माटे ते बोलमां ए कविता हुं अहीं दाखल करुं छुं.

रंग राग बागन थट्टयं, घन घोर सोर प्रगट्टयं ।
सुनि अलख वीर स जग्गयं, सिर पलट ऊंधिय पग्गयं॥
लंबी असी गज सज्जयं, पच्चास चौडिय गज्जयं ।
दस गज सु दल परमानयं, तिहि गुफा खुल्ली अमानयं॥
रुद्राक्ष मुद्रा धारयं, मुख शंभु शंभु उचारयं ।
कर खडग खप्पर राखयं, मुख शंभु शंभू भाखयं ॥
पृथिराज कीन प्रणामयं, बोल्यो न वीर स तामयं ।
तहां देख रावल समरसी, छंड्यो न आसन रघुवंसी ॥
पूछंत चंद सु बत्तियं, कहो होनहार स कथ्थियं ।
यह होनहार स होय हे, दिल्ली न थिरता सोय हे ॥
पुन म्लेच्छ दल बल जोर हे,अर शहर दिल्लीय तोरहे ।
पृथिराज जुद्ध न जीतहे, रण समय रावल बीतहे ॥
चामंडराय गुरु रामही, कट परही भारथ कामही ।
पृथिराज बंधही पावही, खट मास विपत विहावही ॥

नृप शाह चंद रु तीनयं, रहे एक ठोर सु लीनयं।
गोरी सु दिल्ली आनयं, पुनि बरत हिंदुसथानयं ॥
तिहि दुर्ग देवल भाजयं, अति आनरथ्थ स साजयं।
वरते स वरसां दोयसें, ता पीछ चकता आवसे ॥
हिंदवान दंड भरावही, नृप घर घरही धिय ब्यावही।
दखनाद सुं दल आवही, तिहि तखत दिल्ली न पावही॥
ता पीछ टोपी आवही, बहु इलम कलम चलावही।
नारी सु राजा बज्जसी, हिंदू तुरक सब भज्जसी ॥
इह तखत दिल्लीय आवही, नृप घर घरही सुख पावही।
वह धर्मराज जमावही, प्रतिपाल न्याय कहावही ॥
जब न्याय बंधन छूटशी, तब आब पेट्य फूटशी।
मिलि बलक काबुल थट्टयं, तीजो स भूपत भट्टियं ॥
विद्धंश दिल्ली पाटयं, रही वरस खट परनाटयं।
सीसोद दिल्ली आवही, शिर राण छत्र धरावही ॥
पेंतीस वरष प्रमानही, भोगवे हिंदुसथानही।
अजमेर पीर स जग्गही, पुनि तखत दिल्लिय मंगही ॥
तुंवर स दिल्लिय घेरही, पुनि आण दिल्लिय फेरही।
राठोड दिल्ली आवही, फिर धर्मनीत चलावही ॥

भावार्थ—रंग रागना मोटा घोर अवाजो थया जे सांभळी अलखवीर जागी उठ्यो अने एक शिला उथली पडी; ते एंसी गज लांबी, पचास गज पोहोळी अने दस गजना दळनी हती. ए गुफा खुल्ली तेमांथी एक वीर नीकळ्यो. तेणे रुद्राक्षनी माळाओ पेहेरेली, हाथमां खडग अने खपर धारेलां तथा मोढेथी शंभु शंभु उच्चार

करतो हतो. पृथिराजे तेने प्रणाम कीधो पण ते कांई बोल्यो नहीं. समरसिंह सदाशिवनो अवतार हतो तेने जई ते पगे पड्यो. चंद तेने पूछवा लाग्यो के हवे शुं थनार छे, त्यारे तेणे कह्युं के होणहार छे ते थायछे अने दिल्ली स्थिर रेहेशे नहीं. म्लेच्छनां दळनुं जोर थशे ते दिल्ली शेहेर तोडशे; पृथिराज युद्धमां जीतशे नहीं; अने रावळ समरसिंह काम आवशे. चामुंडराय अने रामगुरु भारथमां कपाई जशे. पृथिराज बंधीवान पकडाई जई छ महीना दुःख भोगवशे. पछी ते, शाहाबुद्दीन अने चंद एकज ठेकाणे ठेर रेहेशे. गोरीओ जमाव करी हिंदुस्थानमां फेलाशे, तेओ किल्लाओ अने देवळो भांगी नांखी मोटो अनर्थ करशे. एम बसो वर्ष चाल्या पछी चकता (मुगल) आवशे. तेओ हिंदुओने दंडशे अने घेर घेरथी राजाओनी दिकरीओ परणशे. ते पछी दक्षिणथी दळ आवशे पण तेने तखत मळशे नहीं. ते पछी टोपी आवशे ते घणाक ईलम अने कलम चलावशे. स्त्री राजा केहेवाशे अने हिंदु तुरक बधा भागी जशे. ते पण दिल्लीनां तखत उपर बेसशे अने राजाओ घेर घेर सुख पामशे. तेओ धर्मराज जमावशे अने न्यायना प्रतिपाळ कहेवाशे. ज्यारे न्यायनुं बंधन छूटशे त्यारे टोपीओमां पण मांहोमांहे फूट पडशे. बल्क अने काबुलवाळो तथा एक भट्टी राजा मळीने दिल्लीने तोडशे, ते छ वर्ष रेहेशे. पछी सीसोदीया (उदेपुरवाळा) आवशे अने राणोजी छत्र धरावशे. ते पांत्रीस वर्ष भोगवशे. पछी अजमेरना पीर जागशे ते पछी तुंवर अने तुंवर पछी राठोड थशे ते फरीने धर्म नीत चलावशे.

दोहा.

वीरभद्रके वचन सुण, लग्यो सोच चहुआन ।
महा वीर दृढ ग्यानको, बोल्यो तब बलवान ॥

छंद त्रोटक.

नृप शोच न कीजिये काहुनको, भुगते जन भव्य सुखं दुखको ।
वसुधा किनके घर नांहि रही, पुनि केतिक वार उथल्ल गई ॥
नृप वेननकी ज भई धरनी, कर वास विशंभरही करनी ।
सुरराज जेसे न हुई उनकी, घर नांह रही हरनांकुसकी ॥
बलकी न हुई जिन जग्य किये, तिन वामन बांध पताल दिये ।
धरनी धरनी भइ माननकी, थिर वास करे न रही उनकी ॥
त्रिपुराज विसंभ जालंधरसे, उनके घरहुंसे गई निकसे ।
पृथुराज वतार भई हरके, थिर नांहि रही उनही घरके ॥
दुजराम बडे न हुई उनकी, फिरमात चलाइय बामनकी ।
हठराम फरस्स इकीस करी, वसुधा न रही सु उथल्ल परी ॥
पत मोर बंध्यो शिर रावनको, जिन ध्यान कियो हे सदाशिवको।
तिनसुं तजि प्रीत खरी विसही, रघुनाथ लही अपनी सु कही॥
प्रभु तीनहि लोक उपावनके, रघुराम तिसे न हुई उनके ।
दुरजोधन जोध बडे जबरे, तिनसें अरजुन संग्राम भरे ॥
कल भारथ क्षोन अढार कटे, उनके घरहुंसे गइ बिछुटे ।
रन खेत मरंत लरंत अती, तिनको बल भक्ष करे धरती ।
रन खेत विचार लरे जबही, रजवट्टको नीर रहे तबही ॥

दोहा.

वीरभद्र कहि ए कथा, बेठ गयो इहि ठान ।
फेर सिला शिरपर धरी, लगो हेत शिव ध्यान ॥

भावार्थ—एवां वीरभद्रना वचन सांभळी पृथिराजने शोच थ-यो ते जोई महावीर बोल्यो के हे राजा, कोई वातनो शोच करवो नहीं. धरती कोईने घेर रही नथी अने केटलीक वार उथली गईछे. ते राजा वेननी थई नहीं, विश्वंभरना हाथमां रही नहीं, सुरराज जेवानी पण न थई, हिरण्याक्षने घेर पण न रही, बळीराजा जेणे यज्ञ कीधा तेनी पण थई नहीं, उलटो वामनजीए बांधीने तेने पाताळमां मुक्यो. मांधाताने घेर पण स्थिर रही नहीं, जाळंधरने घेरथी पण नीकळी गई. शिवनो अवतार पृथुराजा थ-या तेने घेरथी पण चाली गई. फरसुराम जेणे ब्राह्मणोनो हुकम चलाव्यो अने एकवीसवार नक्षत्री पृथ्वी कीधी तेना हाथमांथी पण उथली गई, सदाशिवनुं ध्यान करी रावणे माथे मोड बांध्यो तेनी साथे पण प्रीत तोडी गई, एटले रघुनाथजीए लईने पोतानी कही. ए रघुनाथ, त्रण लोकना पेदा करनार एवानी पण ते थई नहीं; दुरजोधन मोटो योधो थयो तेनी साथे अर्जुने संग्राम करी अढार अक्षोहिणी सेना कापी तेने घेरथी पण वछुटी गई. रणक्षे-त्रमां तेने वास्ते जे लडीने मरेछे तेनो एज धरती भक्ष करेछे, अने रणक्षेत्रमां विचारीने लडेछे तेनां रजपुतपणांनुं पाणी रही जाय-छे. बाकी सर्व मिथ्या छे. एम कही पाछो एज ठेकाणे बेसी गयो अने माथां उपर शिला ओढी लीधी.

शाहाबुद्दीननी चढाई पेहेलां पृथिराजने तेविषेनुं स्वप्न आव्युं हतुं एम चंद भाट कहेछे. चोहाण राजा आ प्रमाणे ते स्वप्न संयो-गता पासे वर्णवी देखाडेछेः—

" आज राते हुं निद्रावश हतो ते वखते एक गोरी अने खुबसुरत रंभाए एकदम आवी मारो हाथ पकड्यो. पछी ते तारा उपर आवी अने तुं तेनाथी छटकवाने फांफां मारती हती एटलामां एक

जबरो मदोन्मत्त अने राक्षसजेवो भयंकर एवो हाथी मारा उपर पड्यो. ऊंघ ऊडी गईः रंभा ने राक्षस क्यांय ऊडी गयांः पण मारी छाती हांफवा मंडी अने मारा ध्रुजता होठमांथी "हर हर" ए शब्दो नीकळी पड्या. आमांथी शुं नीपजशे ते तो देवताओ जाणे."

'संयोगता बोली, "मारा भरथारनो जय थाओ. तेने यश मळो. अहो चोहाणकुळभाण, कीर्ति अने सुखनो स्वाद आपे जेटलो चाख्यो छे एटलो बीजा कोणे चाख्यो छे? मरवुं ए तो माणस एकलानां नहि पण देवताओना नसीबमां पण लख्युं छे. जीर्ण वस्त्रने फेंकी देवानुं सौने मन थायछे पण आबरुथी मरवुं एतो अमरपणुं पामवा जेवुं छे. आप आप विषेनो सघळो विचार छोडी दो अने अमरपणां तरफ चित्त लगाडो. आपनी तलवारथी शत्रुने कापी नांखो अने हुं परलोकमां पण तमारुं अर्धांग थई रहीश."

'राजाए भाटनी पूछा करी तेणे आवी ते स्वप्ननी मतलब कही समजावी, अने गुरुए एक मंत्र लखी आप्यो ते राजाए पोतानी पाघडीमां राख्यो. ताजां दुधना एक हजार पीतळना घडाथी सूर्य अने चंद्रने तृप्त कर्या. दश दिक्पाळने दश पाडानुं बलिदान आप्युं अने सर्वेने नैवेद कर्यां. परंतु लोहिनां बलिदान अने दूधनां नैवेदथी कांई भविष्यमां लख्युं होय ते टळे? एवी रीते लखी वात माणसथी फेरवी शकाती होय तो नळ अने पांडवोने एटलुं बधुं दुःख खमवुं पडत?'

गिझनीना मुलताननी सामे थवानी सरसमां सरस गोठवण वास्ते मंत्र करवा योद्धाओ भेळा थया तेवेळा पृथिराज तेओने विचार करता मूकीने संयोगता पासे पोतानो विचार जणाववा गयो. तेणे जवाब दीधो ते विचित्र छेः—

"स्त्रीनी सल्लाह ते कोण पूछेछे ? दुनिया एम समजेछे के तेओनामां बुद्धि ओछी छे. तेमनां मुखमांथी सत्य वाणी नीकळेछे त्यारे पण तेने कोई कान देतुं नथी. पण स्त्री वगर ते दुनिया शुं छे ! शिवना अग्निसाथे अमे शक्तिरूपे रही छईए. चोर पण अमे अने पवित्रालय ते पण अमे. अमे सद्गुण तथा दुर्गुण, ज्ञान तथा अज्ञाननां पात्ररूप छीये. भणेलो जोशी शास्त्रना आधारथी ग्रहोनी गति अने मार्गनुं गणित करी शकेछे पण स्त्रीनां शास्त्रथी ते केवळ अज्ञान छे. अने आ वात कांई आजकालनी नथी. अनादिकाळथी एमज चालतुं आव्युं छे. अमारां शास्त्रनो पार कोई पाम्या नथी माटे कहेछे के स्त्रीमां कांई डहापण नथी. पण तमारां सुखदुः-खनी भागीएण स्त्री छे. तमे सूर्यना मेहेल तरफ विदाय थाओ-छो त्यारे पण अमे तमाराथी अळगी रहेती नथी. भूखतरसमां अमे खुशीथी तमारी साथे भाग लईए छीए. अमे सरोवर छीए अने तमे तेमांहेला हंस छो. अमारी छातीथी अळगा थया तो पछी तमारांमां शुं बिसात रहेछे ? "

लश्कर एकठुं थयुं, अने जे छेल्लां युद्धमां हिंदुस्थान जीतायुं तेमां ईस्लामीनी सामे कूच करवा बधा तैयार थया ते वारे संयोगता-ए पोताना पतिने युद्धकाळने योग्य एवां कवच हथियार बांधवा मांड्यां. "तेनां कवचनी कडीओ ते शोधवा लागी पण व्यर्थ. भूखे मरताने जेम सोनांनो ककडो मळेछे तेनी पेठे तेनी आंखो चोहाणनां मुखतरफ अचळ थई रही. नगारांनो अवाज चोहाणने काने पड्योः संयोगताना कानने ते अवाज मरणावसरनां नगारांना अवाज जेवो लाग्यो." दिल्लीना योद्धाओनी सरदारी लेवा जवा माटे पृथिराजे रजा मागी, त्यारे तेणे प्रतिज्ञा लीधी के हवेथी मारो आधार मात्र पाणी उपर रहेशे. ते बोली के, फरी मने एनुं द-

र्शन सूर्यना मेहेलमां थशे पण योगीनीपुरमांतो हवे थवानुं नथी. एटलुं मनमां बोली बंध रही.

पृथिराजना सामंतोमांथी हाल तेनी मदद वास्ते बेज जण हता. एकतो चामुंडराय जेने केदथी मुक्त कीधो, पण तेणे लोढुं उपाडवाना सोगन खाधा हता माटे हाल तेणे कह्युं के हुं तरवार पकडीश नहीं. एक तीर फेंकीश तेमांथी पण लोढांनी भालुडी कहाडी नांखी थोथुं फेंकीश. बीजो रामगुरु प्रोहित हतो. चंद भाटतो देवीनां मंदिरमां गयो त्यां बारणां बंध थई जतां केद थई गयो एटले तेणे त्यां पृथिराज रासानुं पुस्तक लखवा मांड्युं. बन्ने लश्करनो मुकाबलो थतां चामुंडराये एक तीर फेंकवुं हतुं ते विशे पृथिराजनी रजा मागी के कोना उपर फेंकुं, तेनो तेणे जवाब आप्यो के हाहुलीराय उपर. चामुंडराय कहे, बादशाह उपर हुकम करो के ते मरतां "माधीयो मुओ ने गोठडी परवारी" थई बधा नासी जाय. पण पृथिराजनी विनाशकाळे विपरीत बुद्धि थई हती तेथी तेणे कह्युं, हाहुलीराय हरामखोर थई बादशाहने तेडी लाव्यो माटे ए मोटो गुन्हेगार छे वास्ते तेनेज मार. अति आग्रहथी चामुंडराये हाहुलीराय उपर थोथुं तीर फेंक्युं जे तेने कपाळमां वागतां धूब सरखो नीचे पड्यो. सामेथी एक बाण आव्युं जे चामुंडरायने वागतां तेणे पण स्वर्गनो रस्तो लीधो. पृथिराजे शाहाबुद्दीन सामुं एक तीर फेंक्युं जे तेने दांतमां वाग्युं पण कांई पण असर न करतां नीचे पडी गयुं. त्यारे पृथिराज बोल्यो—

दिन पलट्यो पलटी घडी, पलटी हथ्थ कबान;
पीथल एहीज पारखुं, दिन पलट्यो चहुआण.

शत्रुओ प्रबळ थई जवाथी ततारखांए पृथिराज उपर हुमलो करी तेने पकड्यो. पृथिराजे तेने कह्युं "में शाहाबुद्दीनने सात

वखत पकडी छोडी दीधो छे अने मने तो प्रथमथीज भविष्य मळ्युं छे के हवे मारो विनाशकाळ आवी चूक्यो छे, पण तमारी तरफथी आवी नामर्दाई जोई मने तम लोको उपर धिक्कार आवेछे." तता-रखां कहे, "एवो मूर्ख तुं हतो के अमने तें सातवार छोड्या तो आ-ठमीवार आवी तने पकड्यो. पण पेहेलीज वार अमने पूरा करया होत तो तारे आटली विपत्तीमां आववुं न पडत. माटे हवे वधारे वातमां माल नथी."

त्रण दिवस सुधी मरततोल युद्ध चाल्युं तेमां छेल्ले दहाडे समर-सिंह, तेनो पुत्र कल्याण अने तेना दरबारनुं तेर हजार लश्कर तथा कीर्तिवंत सरदारो काम आव्या. एनी प्रिया पृथाने ज्यारे आ नाशकारक परिणामनी खबर मळी अने सांभळ्युं के पोतानो पति कतल थयो छे, भाई केद पकडायो छे तथा दिल्ली अने चित्तोडना योद्धाओ कागरना किनारा उपर लोहना मोजाओमां निद्रावश थई पड्या छे, त्यारे तेणे पोताना पतीसाथे अग्नीमां सहगमन कीधुं अने गोरीए एक सपाटाबंध हुमलानी साथे दिल्ली लई लीधी अने चोहाण वंशने छेल्लो स्तंभ जे कुमार रेणशी ते ए हुमलामां काम आव्यो ए बनाव जोवा रही नहीं.

दिल्ली तथा तेनो राजा पकडीया, तेनो चित्तोडवाळो मित्र अने बहादुरमां बहादुर योद्धाओ नाश पाम्या, एटले गोरी बादशाहने एथी पण वधारे अने पूर्ण जय मेळववामां कंई पण अडचण रही

---

१ ए नदी हाल सुकाई गई छे. टाड साहेबना लखता प्रमाणे तेनुं मूळ शिवालिक पहाडमां हतुं, अने ते हंसी हसार, भटनेर, रंगमाहेल, बलर, फूलरा ए शेहेरो पासे थईने तथा खादाल प्रांत (जेनुं मुख्य शेहेर देरावल छे ते)मां थईने जेसलमेर अने रोरी भखर ए शेहेरो वच्चे नदीने मळती हती. केटलाकना कहेवा प्रमाणे ते उच आगळ नदीने मळती हती.

नहीं. "आपसमें फूटे कबु काहुको न भलो होत" ए प्रमाणे पृथि-राजनी माफकज कनोजनो जयचंद पण छेली खुनखार लडाईमां नबळो थई गयो हतो ते उपर पण शाहाबुद्दीने चडाई करी, जेमां जयचंदे पोतानुं बधुं बळ वापर्युं पण व्यर्थ. अंते तेनुं मोत हिंदुओने प्रिय लागे एवी रीते गंगा नदीमां डुबी जवाथी थयुं अने ते रोजथी दिल्ली तथा कनोज हिंदु शेहेर केहेवातां बंध पड्यां (संवत् १२४९ इ०स० ११९३). आ वखतथी नाश लुंटफाट तथा कतलोना देखावो शरु थया अने आ चंडाळ अने जंगली लोकोए जे जे कंई धर्ममां पवित्र गणातुं तथा हुन्नर अने विद्यामां वखणातुं ते सर्वेनो नाश करवा कम्मर बांधी. राजस्थाननो दरेक रस्तो लुंटनाराओ तथा लुंटाताओनां लोहीथी भींजाई रह्यो हतो. नवां नवां टोळांओ एमनां एम आवतांज गया अने एक वंश पछवाडे बीजो वंश एम देखावा लाग्या. ते बधाओ मनुष्यवधने पवित्र गणनार, लूंटने कायदासर माननार अने नाश करवानो तो ईश्वरनो हुकम छे एम केहेनार एवा निर्दयमनना हता. आ मरणीया भखेडाओमां जातोनी जातो घसडाई गईओ जेमनां नामो उपरथीज मात्र तेमनी असलनी हयाती तथा प्रख्यातीनी खबर पडेछे.

हुं जरा दूर नीकळी गयो जेथी पृथिराज केद पकडाया केडे तेनुं शुं थयुं ते केहेवानुं रही गयुं छे. ए बाबत बे मत छे. टाड साहेब लखेछे के, पृथिराजने केद पकडी तेने त्यांज कतल करी नांख्यो हतो अने तेनी प्यारी संयोगता तेनी साथे सती थई हती. बीजी तरफवाळा लखी गया छे के तेने केद पकडी सो मणनी तोक गळामां नांखी गिझनीमां लई गया हता ज्यां ते, शाहाबुद्दीन तथा चंद भाट एकज ठेकाणे मरण पाम्या हता. टाड साहेबनुं लखवुं वजनदार छे तेम ए मत माननारानी संख्या पण थोडी नथी. पृथिराजे शाहाबुद्दीनने शब्दवेधी बाण मार्युं छे तथा ते अने चंद

पोतपोतामां कपाई मुवा छे ए बनावनी तसबीरो घणी लांबी मुदत थया लोकोमां प्रसरेली छे. जे चित्र में पेहेले पाने आपेलुं छे ते आसरे सो वर्ष उपरांतनी जेपुरना कारीगरोए चीत्रेली तसबीर उपरथी लीधुं छे. तेमज हुं जेसलमेर गयो हतो त्यां खुदावंद महारावळ श्रीजी वैरीसालजी बहादुरे मने त्यांना शेठ जोरावरमलजीनी हवेली जोवा मोकल्यो हतो तेमां पण एज शिक्कानी तसवीरो भींतोमां आळेखेली जोई हती, इ० घणे ठेकाणे छे अने ज्यां छे त्यां एकज शिक्कानी छे तथा तेने लगतां कवितो इ० घणाओने मोढेथी सांभळ्यां छे ए उपरथी आ बेउ वातो गुंचवाडामां पडी जाय छे माटे मारे ए हकीकत पण वांचनारनी सेवामां रजु करवी जोईए.*

---

* टाड साहेबे मुसलमान ग्रंथकारोना आधार ऊपरथी लख्युं लागेछे माटे तेमां तेमनो दोष नथी. हिंदुओ पृथिराजनी बडाई लखे ए वात पक्षपातनी छे, पण तेमज मुसलमानो शाहाबुद्दीननुं दूषण छुपावे ए वात पण एवीज छे. मोटा ग्रंथकारो एक वात एक पक्षना लखवाना आधार ऊपरथी लखी जायछे पण पाछळथी कोई वधारे बारीकीथी शोध करेछे तो खरी वात नीकळी आवेछे. जेम के एल्फिन्स्टन साहेब अने फार्बस साहेब एकमते लखी गया छे के जयशिखरी सामे थनार भुवडनुं कल्याण दक्षिणमां हतुं. पण हाल ब्यूलर साहेबे हिंदु ग्रंथकारोनुं लखवुं खरुं कही केटलाक आधारोथी ए कल्याण उत्तर तरफनुं कनोजना ताबानुं हतुं एम साबीत कीधुं छे. वळी महमूदनी स्वारी वखते गुजरातनी गादी ऊपर कोण हतुं ए सवालनो लाभ पण हिंदु लखनाराओनी तरफमां जायछे. फारसी लखनाराओ लखी गया छे के मुसलमानो गुजरातनी गादी ऊपर घणो वखत सुधी रह्या हता अने अणहिलवाडनी गादी दाबीलीमने आपी हती तथा ते वखते गुजरातनी गादी ऊपर चामुंड हतो ए बधी वात पाछळथी खोटी ठरी छे. सर हेन्री इलियटे हाल हिंदु रासा लखनाराओने मळता थई ते वखत भीमदेव हतो एम साबीत करी आप्युं छे.

चंद भाट देवीना मंदिरमां केद थई गयो हतो तेणे पृथिराज रासो पूरो लखी लीधो त्यारे कमाड उघड्यां पण दिल्लीमां तो खेदान मेदान थई गयुं हतुं. पोतानो राजा गिझनीमां दुःखी छे तेने कंईक मदद करवी एम विचारी ते गिझनी गयो अने पोतानी वाक्यचातुरीथी शाहाबुद्दीननी मेहेरबानी मेळवी अने वखत जोई अरज करी पृथिराजने एक वखत मळवानी परवानगी लीधी. पृथिराज आंखे तो देखतो न हतो पण चोकीवाळाए तेने कह्युं के चंद तने मळवा आवेछे त्यारे ते एटलो तो प्रफुल्लित थयो के आटला दिवस सो मणनी तोकथी दबायलो पड्यो हतो ते एकदम उठी उभो थयो अने चंदने बख नांखी मळ्यो तथा दुःखसुखनी वातो कीधी. आटला दिवस तोकना दबाणथी उठी शकतो न हतो ने आज उठ्यो ए खबर बादशाहने थतां तेणे धार्युं के कोईक वखत ए आंधळो पण नुकसान करे माटे तेणे पचास मणनी बीजी तोक नांखवानो हुकम कीधो. चंदने ए खबर थतां तेणे बादशाहने अरज करी के "किबलेआलम हुं अहीं आवी मारा राजानुं कंईक दुःख कमी कराववा धारतो हतो तेने बदले उलटुं वधारे थयुं ए वाजबी नथी. ए आंखे अपंग शुं नुकसान करवानो छे, एने तो छूट राखशो तो वखते वखते आपने एवी एवी गमतो बतावशे के आप खुशी थशो. ए आंधळो छतां पण शब्दवेधी एवुं बाण मारी शकेछे के ते सो सो मणना सात लोढांना तवा वींधी आरपार नीकळी जशे." शाहाबुद्दीनने ए गमत जोवा मरजी थई पण चंद कहे, हाल ए दुबळो थई गयो छे तो एने कांईक कष्ट ओछुं करी पौष्टिक खोराक आपवो जोईए के शरीरमां शक्ती आवेथी ए काम बजावी शके. बादशाहे तोको कहाडी नांखवा तथा पौष्टिक खोराक आपवा हुकम आप्यो अने पृथिराज थोडा रोजमां तैयार थई रह्यो एटले तेने तीरकबान आप्यां अने तमासो बतावना फरमाव्युं. पृथिराजे कबान खेंची पण

ते तेनुं जोर पकडी शके एवी न होवाथी त्रुटी पडी. एम सात आठ कबानो त्रुटी गई पण एके पृथिराजना हाथमां बेठी नहीं एटले चंद कहे, एनी पोतानी उपाडवानी कबान होय तोज काम आवे, बीजी तो एनुं जोर पकडी शकशे नहीं. माटे पूछा करावी तो मालम पड्युं के ततारखाने पृथिराजने पकड्यो त्यारे तेनां बधां हथियार तेने हाथ आव्यां छे पण ततारखानथी ए कबान उपडी नहीं एटले नकामी जाणी घोडारमां भारोट दाखल थणी दीधी छे. बादशाहे त्यांथी कढावी मंगावी अने पृथिराजे वजन करी जोई पोतानी कबान ओळखी अने आवती काले तमासो बतावबानुं वचन आप्युं.

सो सो मण वजनना लोढांना सात तवा लटकाव्या अने बादशाह एक घणी उंची जग्या उपर बेठो. तवा उपर कांकरी मारी पृथिराजने साबाश एटलुं केहेवुं के ए कांकरीना अवाज उपरथी पृथिराज बाण मारी तवा वींधी नांखे एवो वदाड हतो. पृथिराजना पगमां साकळो पेहेरावी चोकमां उभो राखी हाथमां तीर कबान आप्यां तथा चंदने पासे उभाड्यो. पृथिराजने साबाश कहेवा बादशाहे चंदने फरमाव्युं पण चंद कहे, हुं एनां घरनो नोकर ते माराथी हुकम थाय नहीं, आप हुकम करवालायक छो अने पृथिराज सांभळवा लायक छे. ए उपरथी बादशाह तवा उपर कांकरी मारी बोल्यो "वाह पीथल वाह." चंद जमीननो माप करी बोल्यो.

चार वंस चोवीस गज अंगुल अष्ट प्रमाण;
एते पर सुलतान हे मत चूके चहुआण.

वळी ते पृथिराजने पोरसाववा नीचे मुजब बोल्यो.—

छप्पय.

इही बाण चहुआन, राम रावन उथप्यो;
इही बाण चहुआन, करण शिर अरजुन कप्यो;

इही बाण चहुआन, शंकर त्रिपुरासुर संध्यो;
इही बाण चहुआन, भ्रमर लछमन कर वेध्यो;
सो बान आज तो कर चढयो, चंद बिरद सचो चवे;
चहुआन रान संभर धनी, मत चूके मोटे तवे.

भावार्थ—चार वांस चोवीस गज अने आठ आंगळनी उंचाई उपर सुलतान छे तेने हे चहुआण चूकजे मां.

एज बाणथी रामे रावणने मार्यो. एज बाणे अर्जुने करणनुं माथुं काप्युं, एज बाणे शंकरे त्रिपुरासुरने मार्यो, अने एज बाणे लक्ष्मणे भमराने वींध्यो. ए बाण आज तारे हाथ चड्युं छे, माटे हे संभरना धणी चहुआण राजा ! मोटे तवे चूकजे मां.

पृथिराजे तवाओने एकतरफ मुकी दई मोटा तवा शाहाबुदीनना अवाज तरफ तीर फेंक्युं जे तेना कपाळना मध्यभागमां जई वागतां ते सिंहासन उपरथी गबडी पड्यो अने हाहाकार थई रह्यो. बादशाहना नोकरो पृथिराज अने चंद उपर धसी आव्या, पण आ लोकोए ए काम करी जीववानी आशा राखीज न हती अने म्लेच्छोने हाथे पोतानुं मोत न थाय माटे परस्परे एक बीजाना माथां तरवारथी उडाडी नांखवा आगळथी संतलस करी राखी हती ते मुजब एक-बीजाना गळांमां तरवारो फेरवी दीधी. (जुओ चित्र).

समाप्त.

आ ग्रंथने अगाउथी आश्रय आपनार गृहस्थोनां नामो.

नामो.	गाम.	प्रत.
महाराजाधिराज मिरजां महाराओ श्री खेंगारजी बहादुर	भुजनगर ..	२५०
रा० रा० दिवानजी साहेब राओ बहादुर मणीभाई जसभाई	,, ..	५०
रा० रा० दलपतराम प्राणजीवन खख्खर, ए. ई.	,, ..	२५
हिझ हाइनेस ठाकोर श्री वाघजी	मोरबी ..	२०
हिझ हाइनेस ठाकोर श्री दाजीराजजी ..	वढवाण ..	१५
हिझ हाइनेस महाराणा श्री केसरीसिंहजी ..	सायला ..	१५
हिझ हाइनेस महाराणा श्री विक्रमानजी ..	पोरबंदर ..	१०
हिझ हाइनेस नवाब साहेब श्री बिस्मिल्लाखानजी.	रायधणपर ..	१०
ठाकोर श्री वेरसलजी, ह० रा० हरजीवन उत्तमराम.	रोहा ..	१०
हिझ हाइनेस ठाकोर श्री जसवंतसिंहजी	लींमडी ..	५
ठाकोर श्री लखाजी	आडेसर ..	५
अधिकारी श्री कृष्णदासजी	भुजनगर ..	५
रा० जयशंकर नरसीराम	छोटा उदेपर ..	५
शेठ प्रेमजी नारायणजी	जसापर ..	५
जोशी चतुर्भुज हीरजी	मुंबई ..	५
शेठ कासमभाई धरमशी....	,, ..	५
शेठ करीमभाई इभराम	,, ..	५
शेठ जेराज पीरभाई	,, ..	५
शेठ जाफरभाई थारेआभाई	,, ..	५
रा० मंगळजी गौरीशंकर	नवानगर ..	४
शेठ वाघजी कोरजी	मुंबई ..	४

शेठ जुमाभाई लालजी .. .. मुंबई .. ३
ठाकोर श्री जेसंगजी .... धरोळ .. २
ठाकोर श्री खानजी .... चीत्रोड .. २
जाडेजा डोसाजी .... लाकडीयुं .. २
जाडेजा अभेसंगजी .... मांणांबु .. २
जमादार शेख बावदीनभाई .... जुनागढ .. २
रा० रा० नृसिंहप्रसाद हरिप्रसाद .... ,, .. २
रा० कोटवाल वोरा वाघजी रूपजी .. .. .. भुजनगर .. २
उपाध्याय श्री जेराजमेरजी .... ,, .. २
भट्टार्कजी श्री जीवणकुशलजी .... ,, .. २
रा० बावा लालजी ओधवजी .... ,, .. २
शेठ लक्ष्मीदास खीमजी .. .. मुंबई .. २
शेठ मथुरादास लवजी .. .. ,, .. २
शेठ करसनदास नेणशी .... ,, .. २
रा० रा० पोलिस कमिशनर रतीलालभाई .... भुजनगर .. १
रा० शेठ रहीमभाई नानजी .. .. ,, .. १
रा० बक्षीराम मोतीराम .. .. ,, .. १
रा० राघवजी जीवण .. .. ,, .. १
रा० जादवजी हंसराज .... ,, .. १
रा० लक्ष्मीदास हरजीवन .... ,, .. १
रा० जटाशंकर प्रभाशंकर .... ,, .. १
रा० भगवानलाल बापालाल .. .. ,, .. १
रा० मेता करसनजी थावरजी .... ,, .. १
रा० वोरा मुरारजी राघवजी .... ,, .. १
रा० जदुराम कानजी .... ,, .. १
रा० गणेश केशव डोंगरे .... ,, .. १

रा० पीतांबर वल्लभजी	भुजनगर ..	१
रा० प्रजाराम पूंजा	,, ..	१
शेठ सुंदरदास धरमशी	मुंबई ..	१
शेठ फाझलभाई कासमभाई गांगजी	,, ..	१
रा० भाइशंकर नानाभाई	,, ..	१
शेठ नेणशी लक्ष्मीदास	,, ..	१
रा० हरीशंकर वल्लभजी	मांडवी ..	१
रा० हरीशंकर नवलराम	,, ..	१
सा० जेवत विजयपाळ	,, ..	१
व्यास रघुनाथजी गोविंदजी	मुनरा ..	१
ठकर कल्याणजी हीरजी......	,, ..	१
भट मावजी पुरुषोत्तम	,, ..	१
अधिकारी मूलजी अमरजी	,, ..	१
वकील खीमराज देशल	,, ..	१
जोशी जयशंकर सुंदरजी	,, ..	१
मेता उदयशंकर रघुनाथजी...	,, ..	१
मुनरा पुस्तकालय	,, ..	१
वकील खोजा तेजा मेघजी	,, ..	१
मास्तर कानजी शंकरजी	,, ..	१
ठकर रणछोडदास भीमजी	,, ..	१
शेठ डोसाभाई मुरारजी	कोठारो ..	१
ठकर रामदास दामजी	,, ..	१
ठकर लालजी दयाल	,, ..	१
ठकर लालजी मेघजी	,, ..	१
ठकर जेठाभाई अरजण	,, ..	१
रा० राघवजी नाथजी	लखपत ..	१

रा० पुरुषोत्तम ओधवजी	लखपत ..	१
शेठ माधवजी कानजी	,, ..	१
मे० सालेमहमद आमद	,, ..	१
रा० वेजनाथ प्रभुजी	जखौ ..	१
मेता दयाशंकर सदाशिव	,, ..	१
रा० विठ्ठलराय सेवकलाल	भचाउ ..	१
रा० खीमजी तुलजाराम	,, ..	१
रा० वल्लभजी मेघजी	,, ..	१
रा० विश्वनाथ जेठालाल	चित्रोड ..	१
रा० रा० शेठ बेहेरामजी होरमसजी कडाका ..	मोरबी ..	१
रा० कल्याणराय लक्ष्मीशंकर	,, ..	१
रा० वजेशंकर शामळजी	,, ..	१
रा०शेठ बमनजी दादाभाई	,, ..	१
रा० तलकशी देवजी	नवानगर ..	१
मणियार मोतीचंद हीराचंद	,, ..	१